Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of IKS

श्री ...

कादम्बरी

कथामुखम्

Shamim

डॉ. उमेशचन्द्र पाण्डेय

015,1'9,1
152 MOP

विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर
जुबली चौक, गोरखपुर।

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

015,1!g,1 5082
152MOP
Pandey, Umeshchandra
Kadambari : Katha-
mukham.

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

[illegible] विरचिता

अ०मु० संकलनावर
बी०ए० भाग-१
श्रीहरिश्चन्द्र महाविद्यालय
वाराणसी

कादम्बरी

कथामुखम्

पम्पासरोवरवर्णन तक

(परिबृंहित एवं संशोधित नवीनतम संस्करण)

डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय
प्राध्यापक, संस्कृत विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

प्रमुख वितरक
विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर
जुबली चौक, गोरखपुर।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

प्रकाशक :

विद्यार्थी बाइन्डिग

गोरखपुर

श्री महादेव शिवाचार्य स्वामी

152 MOP बिजापूर

(सर्वाधिकार सुरक्षित)

मूल्य—पाँच रुपये पचास पैसे

संस्करण : १९८०-८१

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 5082

मुद्रक :

शिवशंकर प्रसाद

दीपक प्रेस,

एस० १७।२७२, नदेसर, वाराणसी कैण्ट ।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

M. S. Hiremath
Babaleshwar
Karnatak

इस संस्करण की विशेषताएँ

१—इसमें मूल संस्कृत अंश शुद्ध रूप में मुद्रित है और पर्याप्त मोटे टाइप में दिया गया है, जिससे पढ़ने में सुविधा हो।

२—इस पुस्तक की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें प्रत्येक पृष्ठ पर संस्कृत, टिप्पणी, शब्दार्थ एवं हिन्दी अनुवाद साथ-साथ दिया गया है। इससे बहुत बड़ी सुविधा होगी।

३—अनुवाद अत्यन्त सरल भाषा एवं बोधगम्य शैली में किया गया है।

४—आरम्भ में भूमिका के अन्तर्गत परीक्षा में अवश्य पूछे जाने वाले प्रश्न का आदर्श उत्तर दिया गया है।

५—पिछली परीक्षाओं में पूछे गये प्रश्नों को भी यहाँ संकलित कर दे दिया गया है।

६—यह विशेषतः गोरखपुर विश्वविद्यालय के परीक्षार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप है।

७—इसमें कुछ भी अनावश्यक नहीं दिया गया है और उतना ही दिया है जितना परीक्षा के लिए उपयोगी है।

८—व्याख्या में पिछले संस्करण की अपेक्षा अधिक सामग्री दी गयी है। आवश्यक समासविग्रह, अलङ्कार-निर्देश जोड़ दिया गया है।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

प्राक्कथन

गोरखपुर विश्वविद्यालय के लिए बी० ए० प्रथम खण्ड, संस्कृत, प्रथम प्रश्नपत्र में महाकवि बाण-रचित 'कादम्बरी' के कथामुख भाग का पम्पा-सरोवर-वर्णन तक का अंश निर्धारित है। 'कादम्बरी कथामुख' के कई संस्करण बाजार में उपलब्ध हैं। आजकल के विश्वविद्यालयी छात्रों के लिए उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप संस्करण का अब भी नितान्त अभाव था। उपलब्ध संस्करणों में हिन्दी अनुवाद इतना दुरूह है कि वह छात्रों को संस्कृत की अपेक्षा अधिक कठिन लगता है और उस पर भी हिन्दी में शब्दार्थ या टिप्पणी नाम की कोई वस्तु नहीं है, जिससे विद्यार्थी सरलतापूर्वक विषय को समझ सकें। किसी संस्करण में मूलपाठ को भी मनमाने ढंग से तीन-तीन चार-चार पंक्तियों के टुकड़ों में विभक्त कर दिया गया है।

प्रस्तुत संस्करण में मूलपाठ को प्रत्येक पृष्ठ के ऊपर, उसके नीचे हिन्दी में टिप्पणी और शब्दार्थ तथा सबसे नीचे अनुवाद देकर छात्रों के लिए इसे अत्यन्त उपयोगी बना दिया गया है। समझाने की शैली अत्यन्त सरल है और भाषा में कहीं दुरूहता नहीं, साथ-ही-साथ अनुवाद में मूल के भावों को भी ज्यों-के-त्यों ग्रहण किया गया है। निःसन्देह, इस संस्करण की उपयोगिता विश्वविद्यालयी छात्रों के लिए बहुत अधिक है।

मेरा अपना मत है कि यदि संस्कृत को एक लोकप्रिय पाठ्य विषय बनाना है तो आज के छात्रों की समझ में आने योग्य सरल व्याख्याएँ प्रकाशित होनी चाहिए, तभी पांडित्यपूर्ण व्याख्याएँ भी उनकी समझ में आ सकती हैं। विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के छात्रों को अपना पाठ्यविषय मुख्यतः स्वयं पढ़कर तैयार करना है और उनके लिए सरल भाषा एवं शैली में विषय को समझाने वाली पुस्तकें ही सहायक बनती हैं। यही कारण है कि सरल व्याख्याएँ लोकप्रिय होती हैं।

यह संस्करण अपने लक्ष्य में सफल होवे, यही मेरी हार्दिक शुभकामना है।

गोरखपुर
१५-९-७५

उमेशचन्द्र पाण्डेय
प्राध्यापक, संस्कृत-विभाग
गोरखपुर विश्वविद्यालय

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

भूमिका

कादम्बरी

संस्कृत साहित्य के आचार्यों ने काव्य के दो भेद माने हैं—दृश्य और श्रव्य। "दृश्यश्रव्यत्वभेदेन पुनः काव्यं द्विधा मतम्"। पुनः श्रव्यकाव्य के भी दो भेद माने गये हैं, गद्य और पद्य। "श्रव्यं श्रोतव्यमात्रं तत् पद्यगद्यमयं द्विधा।" विषयवस्तु की दृष्टि से गद्यकाव्य दो प्रकार का होता है, कथा और आख्यायिका। जिसकी कथावस्तु ऐतिहासिक घटना पर आधारित होती है, उसे आख्यायिका कहते हैं और जिसका कथानक पूर्णतः कविकल्पित होता है उसे कथा कहते हैं।

सर्वप्रथम अग्निपुराण में आख्यायिका और कथा की विशेषताएँ बतायी गयी हैं। इसके अनुसार, जिस रचना में कन्याहरण, युद्ध और वियोग का वर्णन हो उसे आख्यायिका कहते हैं। इसमें विषयवस्तु का विभाजन उच्छ्वासों में होता है और वक्त्र तथा अपवक्त्र श्लोक भी होते हैं। इसके विपरीत कथा के आरम्भ में कवि के वंश का वर्णन होता है और मुख्य कथा की प्रस्तावना के रूप में दूसरी कथा आती है। इसका विभाजन नहीं होता।

आचार्य दण्डी ने अपने 'काव्यादर्श' में कथा और आख्यायिका में कोई मौलिक भेद नहीं माना है। उनका कहना है कि दोनों प्रकार की रचनाएँ समान हैं, केवल उनके दो अलग-अलग नाम हैं—कथा और आख्यायिका। सर्वप्रथम आचार्य विश्वनाथ ने अपने साहित्यदर्पण में कथा और आख्यायिका के भेद को पूर्णरूप में स्पष्ट किया है—

"कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्
क्वचिदत्र भवेदार्या क्वचिद्वक्त्रापवक्त्रके।
आदौ गद्यैर्नमस्कारः खलादेर्वृत्तकीर्तनम्॥"

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

अर्थात् कथा में शृंगार-रस-प्रधान कथावस्तु को गद्य शैली में प्रस्तुत किया जाता है। उसमें कहीं आर्या का प्रयोग होता है, तो कहीं वक्त्र या अपवक्त्र छन्द का। आरम्भ में पद्यों के द्वारा मंगलाचरण किया जाता है और दुष्टों की निन्दा तथा सज्जन की प्रशंसा की जाती है। आख्यायिका भी कथा के समान ही होती है इसमें कवि के वंश का वर्णन होता है, दूसरे कवियों का उल्लेख होता है और आश्वास के अन्त में अगले आश्वास की घटना का संकेत होता है।

इस आधार पर हम कथा और आख्यायिकाओं में निम्नलिखित अन्तर कर सकते।

१—कथा में कथावस्तु कवि की कल्पना पर आधारित होती है। किन्तु आख्यायिका ऐतिहासिक कथानक पर आधारित होती है।

२—कथा का विभाजन आश्वास आदि में नहीं होता किन्तु आख्यायिका का विभाजन होता है।

३—कथा में आर्या, वक्त्र, अपवक्त्र छन्दों के प्रयोग के निश्चित नियम नहीं हैं, किन्तु आख्यायिका में इसका प्रयोग होता है।

४—कथा को कहने वाला नायक के अलावा अन्य व्यक्ति हो सकता है, किन्तु आख्यायिका का वर्णन स्वयं कवि या नायक करता है।

महाकवि बाण की रचना कादम्बरी एक कथा है। वस्तुतः कथा के जो लक्षण बाद के आलंकारिकों ने दिये हैं, उन आलंकारिकों ने कादम्बरी को ही आदर्श मानकर लक्षण किये हैं। कादम्बरी एक कथा है। इसको स्वयं बाण ने प्रारम्भ में ही कह दिया है—धिया निबद्धेयमद्वितयी कथा। उन्होंने स्वयं ही अपनी कथा की विशेषताओं का भी संकेत कर दिया है। कथा की विशेषता का वर्णन करते हुए वे कहते हैं।

स्फुरत्कलालापविलासकोमला करोति रागं हृदि कौतुकाधिकम्।
रसेन शय्यां स्वयमभ्युपागता कथा जनस्याभिनवा वधूरिव॥

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

कल्पित कथावस्तुः—कादम्बरी की कथावस्तु कवि की अपनी कल्पना है। कुछ लोकप्रचलित आख्यान हो सकते हैं, किन्तु जिस रूप में कवि ने इस कथा को वर्णित किया है, घटनाओं का आलवाल फैलाया है और एक प्रेमकथा को दूसरी प्रेमकथा से जोड़ा है, वह सब उसकी कल्पना की देन है। इस प्रकार कादम्बरी का कथानक कवि-कल्पित होने से नया है।

शृङ्गार का वर्णन:—कादम्बरी का प्रधान रस शृङ्गार है। शृङ्गार के कोमल और मनोहर वर्णनों से कादम्बरी अत्यन्त सरल है। महाश्वेता और पुण्डरीक एवं कादम्बरी तथा चन्द्रापीड के प्रेमाख्यान का वर्णन करने में कवि ने संयोग शृङ्गर के अनेक मनोहर चित्र प्रस्तुत किये हैं। महाश्वेता में प्रणय के आविर्भाव का आकर्षक वर्णन कवि ने किया है।

कवि-वंश-वर्णन:—कथा के आरम्भ में बाण ने १० पद्यों में अपने वंश का वर्णन किया है और अपने पिता चित्रभानु, पितामह अर्थपति और प्रपितामह कुबेर की विद्वत्ता एवं धार्मिकता का गुणगान किया है।

दुर्जन-निन्दा :—कादम्बरी के आरम्भ में बाण ने तीन पद्यों में दुर्जन की निन्दा और सज्जन की प्रशंसा की है। दुर्जन की निन्दा में वे कहते हैं :—

अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते ॥
विषं महाहेरिव यस्य दुर्वचः सुदुःसहं सन्निहितं सदा मुखे ॥

आर्या का प्रयोग—कथा में आर्या का प्रयोग होता है और कादम्बरी कथामुख में ही बाण ने निम्नलिखित आर्या का प्रयोग किया है।

स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम् ॥

प्रास्ताविकी कथा—मुख्य कथा के आरम्भ में प्रास्ताविक कथा आती है। कादम्बरी में राजा शूद्रक की सभा की कथा प्रास्ताविक कथा है, जो मुख्य कथा चन्द्रापीड और कादम्बरी की प्रेमकथा की भूमिका है।

कथा का वक्ता—इसमें कथा का वक्ता शुक है और मध्यवर्ती कथाओं को भी पात्रों के मुख से ही कहलाया गया है।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

इन सभी कारणों से कादम्बरी एक कथा है, जो सबके मन को हर लेती है :—

हरन्ति कं नोज्ज्वलदीपकोपमैर्नवैः पदार्थैरुपपादिताः कथाः ।।
निरन्तरश्लेषघनाः सुजातयो महास्रजश्चम्पककुड्मलैरिव ।।

जीवनी एवं समय

संस्कृत साहित्य की प्रख्यात रचनाओं कादम्बरी तथा हर्षचरित के रचयिता महाकवि बाण के विषय में पर्याप्त जानकारी उनके ग्रन्थों से ही मिल जाती है, इन्होंने हर्षचरित के आरम्भ में अपने वंश का और अपने गोत्र के ऋषि की उत्पत्ति का कथात्मक वर्णन किया है। ये वात्स्यायन गोत्र के थे। इन्होंने अपने पूर्वजों कुबेर और अर्थपति का वर्णन किया है। अर्थपति इनके पितामह थे। अर्थपति के ग्यारह पुत्रों में चित्रभानु सबसे अधिक विद्वान् और यशस्वी थे। बाण की माता का नाम राजदेवी था। इनके पिता परम विद्वान् और कर्मकाण्डी थे। कादम्बरी में उनका उल्लेख याज्ञिक होने का संकेत करता है।

बाण की शैशवावस्था में ही उनकी माता का देहावसान हो गया और चौदह वर्ष की अवस्था में इनके पिता की भी मृत्यु हो गई। इन विपत्तियों से बाण का जीवन अव्यवस्थित हो गया, और वे स्वतंत्र प्रकृति के हो गये। युवावस्था में वे अपने जैसे घुमक्कड़ कवियों और संगीत एवं चित्ररचना का अभ्यास करने वाले युवकों के साथ इधर-उधर घूमते रहे। इससे इन्होंने अनेक प्रकार के विषयों और देशों का ज्ञान प्राप्त किया और उनकी बुद्धि तथा अनुभव का प्रचुर विकास हुआ। अन्त में वे अपनी जन्मभूमि लौट आए।

कुछ दिनों बाद बाण को राजा हर्ष के अनुज कृष्ण का पत्र मिला। कृष्ण ने उन्हें राजसभा में बुलाया था, किन्तु बाण को यह मालूम था कि हर्षवर्धन प्रसन्न नहीं है। गाँव के लोगों से भावभीनी बिदाई लेकर बाण राजसभा के लिए चल पड़े। पहले हर्षवर्धन ने उन्हें देखकर 'भुजङ्ग' कहा। इससे बाण मर्माहत हुए। उन्होंने राजा को समझाया और कहा कि समय

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

पर आप मेरे विषय में जान जाएँगे। शीघ्र ही बाण हर्षवर्धन के विश्वासपात्र बन गये और उन्हें सम्मान मिला। कुछ समय का अवकाश लेकर वे अपने जन्मस्थान लौटकर आए। वहाँ के निवासियों के आग्रह पर उन्होंने हर्षचरित की रचना की।

बाण का समय—महाकवि बाण सम्राट् हर्षवर्धन के समकालीन थे इस कारण उनका समय निर्धारण करना कठिन नहीं है। सम्राट् हर्ष का समय ६०६ ई० से ६४८ ई० तक है। इस प्रकार बाण का समय ७ वीं शताब्दी का पूर्वार्ध है। बाण का यह समय दूसरे प्रमाणों से भी पुष्ट होता है।

१—बाण ने अपने हर्षचरित के आरम्भ में अनेक कवियों का उल्लेख किया है। इनमें से कोई कवि ७ वीं शताब्दी के बाद का नहीं है।

२—बाण ने अपनी रचना में जिस राजनीतिक अवस्था का वर्णन किया है वह भी ७ वीं शताब्दी की है।

३—आठवीं शताब्दी के बाद की रचनाओं में कादम्बरी या हर्षचरित के विषय में उल्लेख मिलता है। वामन की रचना काव्यालंकार-सूत्रवृत्ति, आनन्दवर्धन की रचना ध्वन्यालोक, धनञ्जय के दशरूपक, भोज के सरस्वतीकण्ठाभरण और क्षेमेन्द्र एवं रुय्यक की रचनाओं में भी कादम्बरी और हर्षचरित के उद्धरण मिलते हैं।

इस प्रकार बाण का समय ७ वीं शताब्दी का पूर्वार्ध निश्चित है।

रचनाएँ—महाकवि बाणरचित कादम्बरी नाम की कथा एवं हर्षचरित नाम की आख्यायिका है। इसके अतिरिक्त चण्डीशतक को भी बाण की रचना बताया गया है।

हर्षचरित—हर्षचरित सम्राट् हर्षवर्धन के वंश तथा जीवन की घटनाओं के आधार पर रचित आख्यायिका है। इसका विभाजन आठ उच्छ्वासों में किया गया है। आरम्भ में शिव की स्तुति है और इक्कीस पद्यों में पूर्ववर्ती कवियों का उल्लेख है और इसमें सम्राट् पुष्पभूति का वर्णन है। पाँचवें उच्छ्वास में प्रभाकरवर्धन की मृत्यु हो जाती है। छठा उच्छ्वास भी राज्यश्री

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

के पति ग्रहवर्मा का वध और हर्ष के बड़े भाई राज्यवर्धन की हत्या की अप्रिय घटनाओं का वर्णन करता है। सातवें उच्छ्वास में हर्षवर्धन सेना के साथ प्रस्थान करता है और आठवें उच्छ्वास में वह युद्ध करने से पूर्व ही राज्यश्री के साथ लौट आता है।

कादम्बरी—कादम्बरी एक कथा है। इसे संस्कृत साहित्य का श्रेष्ठ गद्य-काव्य होने का गौरव प्राप्त है। इसकी घटनाएँ स्वयं कवि द्वारा कल्पित हैं। कथा का संकेत 'बृहत्कथा' नाम की रचना से लिया गया है, यह दो भागों में है—पूर्वभाग और उत्तरभाग। पूर्व भाग ही बाण की रचना है, इसके आरंभ में २० पद्यों में मङ्गलाचरण, गुरु की स्तुति, सज्जन की प्रशंसा और दुर्जन की निन्दा, कथा की प्रशंसा और कवि के वंश का वर्णन है। मुख्य कथा में चन्द्रापीड और पुण्डरीक के तीन जन्मों की कथा है। राजा शूद्रक की सभा में यह कथा चाण्डालकन्या द्वारा लाया गया वैशम्पायन शुक कहता है। कथा समाप्त होते ही शूद्रक चन्द्रापीड के रूप में पुनर्जीवित होता है और पुण्डरीक भी आकाश से उतर आता है। इन दोनों का अपनी प्रेमिकाओं से मिलन होता है। इस प्रमुख कथा के भीतर अनेक अवान्तर कथाओं का भी आलवाल फैला है।

बाण की गद्य-शैली—महाकवि बाण श्रेष्ठ गद्यकार हैं। इनकी गद्य-शैली में सुबन्धु और दण्डी की शैलियों का समन्वय है। सुबन्धु ने दुरूह, अत्यन्त लम्बे समासों वाली, श्लिष्ट गद्यशैली का आश्रय लिया है। इसके विपरीत दण्डी की शैली सरल है। बाण की रचना में दोनों प्रकार की गद्यरचना देखी जा सकती है। बाण की शैली आदर्श गद्यशैली मानी जाती है। बाण ने स्वयं ही आदर्श गद्यशैली की विशेषताओं को व्यक्त किया है—

> नवोऽर्थो जातिरग्राम्या श्लेषोऽक्लिष्टः स्फुटो रसः।
> विकटाक्षरबन्धश्च कृत्स्नमेकत्र दुष्करम्॥

अर्थात् 'नया अर्थ' सुन्दर स्वभावोक्ति, श्लेष अलंकार, रस तथा अक्षरों की दृढ़बन्धता ये सभी विशेषताएँ एकत्र दुर्लभ हैं। किन्तु बाण की शैली में ये सभी एक साथ उपलब्ध हैं।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

अनुकूल शब्दचयन—बाण की शैली को पांचाली रीति कहते हैं। इसमें विषय और अर्थ के अनुसार शब्दों का प्रयोग होता है। इन्होंने शृंगार के वर्णन में कोमल वर्णों का और भयानक **दृश्यों के वर्णन** में कठोर वर्णों का प्रयोग किया है। कथामुख के अन्तर्गत चाण्डालकन्या का वर्णन, सरोवर का वर्णन और शबर सेना का वर्णन उदाहरण है। शब्दों से ही मनोरम चित्र बनाने में बाण दक्ष हैं।

लम्बे समास का प्रयोग—बाण ने लम्बे समासों का प्रयोग किया है, किन्तु लम्बे समासों के बाद वे छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग करते हैं। लम्बे, समास का उदाहरण निम्नलिखित है—

तस्य च राज्ञः कलिकालभयपुंजीभूतकृतयुगानुकारिणी त्रिभुवनप्रसावभूमिरिव विस्तीर्णा मज्जनमालवविलासिनीकुचतटास्फालनजर्जरितोर्म्मिमालया जलावगाहनायात-जयकुञ्जर-कुम्भ-सिन्दूरसन्ध्यायमान-सलिलया उन्मदकलहंस-कुलकोलाहलमुखरितकूलया वेत्रवत्या परिगता विदिशाभिधाना नगरी राजधान्यासीत।"

यथार्थ वर्णन—बाण की विशेषता है उनका यथार्थ एवं अत्यन्त स्वाभाविक वर्णन। वे किसी वस्तु का वर्णन करते समय उसकी अत्यन्त सूक्ष्मताओं का भी वर्णन नहीं भूलते। इससे उनके वर्णनों में अद्भुत सजीवता है। प्रेम की अवस्थाओं का सुन्दर और मार्मिक चित्रण करने में बाण दक्ष हैं। कादम्बरी में पुण्डरीक और महाश्वेता की, चन्द्रापीड और कादम्बरी की पारस्परिक आसक्ति तथा प्रणयव्यवहारों को कवि ने अत्यन्त सफल रूप में प्रस्तुत किया है।

अलंकार प्रयोग—अलंकारों के प्रयोग में बाण की शैली और भी आकर्षक हो गयी है। अर्थालंकारों में श्लिष्ट उपमा, परिसंख्या, विरोधाभास और उत्प्रेक्षा का प्रचुर प्रयोग बाण ने किया है। वे एक ही लम्बे वर्णन में प्रायः अपने सभी प्रिय अलंकारों का प्रयोग कर देते हैं। चाण्डालकन्या के वर्णन में तथा राजा शूद्रक के वर्णन में इनकी उत्प्रेक्षाएँ देखी जा सकती हैं। इसके अतिरिक्त इन्होंने सर्वत्र अनुप्रास का सुन्दर प्रयोग किया है।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

लम्बे वर्णन—बाण ने कहीं-कहीं लम्बे वर्णन किये हैं, जिनमें शैली कुछ दुरूह हो गयी है। कुछ आलोचक इसकी आलोचना करते हैं। बाण हर प्रकार की शैली में सधे हुए हैं। सुतरां, बाण भी अपने समय की मान्यताओं से प्रभावित हैं।

प्राचीन समालोचकों ने बाण की शैली की भूरि-भूरि प्रशंसा की है। वे संस्कृत के सभी गद्यकारों में श्रेष्ठ हैं, इसमें दो मत नहीं। धर्मदास ने उनकी शैली की विशेषता इस पद्य में व्यक्त की है।

रुचिरस्वरवर्णपदा रसभाववती जगन्मनो हरति।
सा किं तरुणी न हि न हि वाणी बाणस्य मधुरशीलस्य ॥

अपनी शैली की विशेषताओं की ओर तो स्वयं बाण ने कादम्बरी के आरम्भ में कथाप्रशंसा के पद्यों में कर दिया है—

स्फुरत्कलालापविलासकोमला करोति रागं हृदि कौतुकाधिकम्।
रसेन शय्यां स्वयमभ्युपागता कथा जनस्याभिनवा वधूरिव ॥
हरन्ति कं नोज्ज्वलदीपकोपमैर्नवैः पदार्थैरुपपादिताः कथाः।
निरन्तरश्लेषधना सुजातयो महास्रजश्चम्पककुड्मलैरिव ॥

कवियों में स्थान—काव्य के विषय में जो भी मान्यताएँ अथवा जो भी गुण बाण के पहले माने जाते थे उन सबका समावेश बाण ने अपनी शैली में किया है। इसलिए बाद के गद्यकारों नें भी बाण का अनुकरण किया, जैसे धनपाल ने बाण की शैली को ही अपना आदर्श बनाया है। बाण के पूर्ववर्ती सुबन्धु की शैली कृत्रिम गद्यशैली थी। डॉ० भोलाशंकर व्यास के शब्दों में—

"यद्यपि कालिदास जैसी उदात्त भावतरलता बाण में नहीं मिलती तथा सरल कोमल शैली के द्वारा उच्चकोटि के प्रभाव की सृष्टि करनें में कालिदास समस्त संस्कृत साहित्य में बेजोड़ हैं, तथापि माघ और भवभूति के समान सानुप्रासिक समासान्त पदावली का जितना सुन्दर निर्वाह बाण कर पाते हैं, उतना कोई अन्य गद्य-लेखक नहीं कर पाता है।"



CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

कादम्बरी

कथामुखम्

मङ्गलाचरण—

रजोजुषे जन्मनि सत्त्ववृत्तये स्थितौ प्रजानां प्रलये तमःस्पृशे ।
अजाय सर्गस्थितिनाशहेतवे त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने नमः ॥१॥

१—व्याख्या—सर्वप्रथम महाकवि बाण ने मंगलाचरण किया है और ब्रह्म को नमस्कार किया है। इस पद्य में ब्रह्म के तीन स्वरूपों की स्तुति है।

अन्वय—**प्रजानां जन्मनि रजोजुषे, स्थितौ सत्त्ववृत्तये, प्रलये तमःस्पृशे सर्गस्थितिनाशहेतवे त्रयीमयाय त्रिगुणात्मने अजाय नमः ।**

शब्दार्थ—प्रजानाम् = संसार के। जन्मनि = जन्मकाल में, उत्पत्ति के समय। रजोजुषे = रजोगुण का सेवन करने वाले (रजोजुष् से चतुर्थी एकवचन) स्थिते=स्थितिकाल में। सत्त्ववृत्तये = सत्त्वगुण की वृत्ति वाले। तमःस्पृशे = तमोगुण को ग्रहण करने वाले। त्रयीमयाय = तीनों वेदों ऋक्, साम, यजुः के स्वरूप वाले। त्रिगुणात्मने = तीन गुणों वाले (रजोगुण, सत्त्वगुण, तमोगुण) अजाय=अजन्मा ब्रह्म को। नमः=नमस्कार है। 'नमः स्वस्तिस्वाहा स्वधालंवषट्योगाच्च' सूत्र से नमः के योग में चतुर्थी हुई है। परमात्मा के इन तीनों स्वरूपों = (स्रष्टा, पालक, संहारक) को क्रमशः ब्रह्मा, विष्णु और रुद्र कहा जाता है।

१—प्राणियों की उत्पत्ति के समय रजोगुण को ग्रहण करने वाले, उनकी स्थिति के समय सत्त्वगुण से सम्पन्न, तथा प्रलयकाल में तमोगुण वाले, सृष्टि, स्थिति तथा संहार के हेतु, तीनों वेदों के स्वरूप वाले, त्रिगुणात्मक माया से संपन्न अनादि परमात्मा को प्रणाम है।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

जयन्ति बाणासुरमौलिलालिता दशास्यचूडामणिचक्रचुम्बिनः ।
सुरासुराधीशशिखान्तशायिनो भवच्छिदस्त्र्यम्बकपादपांसवः ॥२॥
जयत्युपेन्द्रः स चकार दूरतो बिभित्सया यः क्षणलब्धलक्ष्यया ।
दृशैव कोपारुणया रिपोरुरः स्वयं भयाद्भिन्नमिवास्रपाटलम् ॥३॥

२—इसमें शिव की स्तुति करते हुये उनके चरणों की धूल की महत्ता बतायी गयी है।

अन्वय—बाणासुरमौलिलालिताः, दशास्य-चूडामणिचक्रचुम्बिनः सुरासुराधीशशिखान्तशायिन. भवच्छिदः त्र्यम्बकपादपांसवः जयन्ति ।

शब्दार्थ—बाणासुरमौलिलालिताः = बाणासुर के मस्तक द्वारा लालित, सत्कार की गयी। दशास्यचूडामणि-चक्रचुम्बिनः दशास्य=रावण के मुकुट की मणियों के समूह का स्पर्श करने वाली अर्थात् राव ण के मुकुट की मणियों के ऊपर रहने वाली। सुराः=सुर+असुर+अधीश+शिखा+अन्त+शायिनः = देवताओं और असुरों के स्वामियों की शिखा के अग्र भाग पर शयन करने वाली अर्थात् रहने वाली। भवच्छिदः=भव अर्थात् संसार में जन्म-मृत्यु को काटने वाली, मोक्ष देने वाली। त्र्यम्बकपादपांसवः=शिव के चरणों की धूलियाँ, पांसु का बहुवचन पांसवः। जयन्ति=सर्वोत्कृष्ट हैं।

३—इस पद्य में हिरण्यकशिपु का वध करने वाले नृसिंह-रूपधारी विष्णु की प्रार्थना की गयी है।

अन्वय—सः उपेन्द्रः जयति, यः विभित्सया दूरतः क्षणलब्धलक्षया कोपारुणया दृशा एव रिपोः उरः भयात् स्वयं भिन्नम् इव अस्रपाटलम् चकार ।

२—बाणासुर के मस्तक द्वारा श्रद्धासहित लालित, रावण की मुकुटमणियों के समूह का स्पर्श करने वाली, देवों और असुरों के स्वामियों की शिखा के ऊपर रहने वाली तथा मोक्ष देने वाली शिव की चरणधूलियाँ सबसे श्रेष्ठ हैं।

३—उस विष्णु की जय हो, जिन्होंने (हिरण्यकशिपु के वक्षस्थल को) विदीर्ण करने की इच्छा से क्षणमात्र को लक्ष्य पर टिकने वाली, क्रोध से लाल बनी हुई दृष्टि से ही शत्रु के वक्षस्थल को रक्त जैसा लाल कर दिया, मानों वह स्वयं ही भय से विदीर्ण हो गया हो।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

नमामि भर्वोश्चरणाम्बुजद्वयं सशेखरैः मौखरिभिः कृताच्चंनम् ।
समस्तसामन्त-किरीटवेदिका-विटङ्कपीठोल्लुठितारुणाङ्गुलि ॥ ४ ॥

सज्जनप्रशंसा दुर्जननिन्दा—

अकारणाविष्कृतवैरदारुणादसज्जनात् कस्य भयं न जायते ।
विषं महाहेरिव यस्य दुर्वचः सुदुःसहं सन्निहितं सदा मुखे ॥ ५ ॥

शब्दार्थ—उपेन्द्रः = इन्द्र के अनुज, विष्णु । बिभित्सया = भेत्तुम् इच्छा विभित्सा, तया । भेदन करने की इच्छा से । क्षणलब्ध-लक्षया = क्षणमात्र को लक्ष्य प्राप्त करने वाली । कोपारुणया = क्रोध से लाल बनी हुई । दृशा = दृष्टि से । रिपोः उर अस्रपाटलम् चकार = शत्रु के वक्षस्थल को रक्त जैसा लाल बना दिया । स्वयम् भयात् भिन्नम् इव=मानो वह भय से स्वयं विदीर्ण हो गया हो । (उत्प्रेक्षा अलंकार) ।

४—इस पद्य में वाण ने अपने गुरु भर्वु के चरणकमलों को प्रणाम किया है ।

अन्वय—**सशेखरैःमौखरिभिः कृताच्चंनम् समस्त-सामन्त-किरीट-वेदिकाविट-ङ्कपीठोल्लुठितारुणाङ्गुलि भर्वोः चरणाम्बुजद्वयं नमामि ।**

शब्दार्थ—सशेखरैः मौखरिभिः = मुकुट धारण करने वाले मौखरिवंश के राजाओं द्वारा । कृताच्चंनम् = जिसकी पूजा की गयी है (चरणाम्बुजद्वयं का विशेषण)। समस्त....अङ्गुलि=यह दीर्घ समास भी 'चरणाम्बुजद्वयम्' का विशेषण है । सभी सामन्तों के मुकुट रूपी वेदिका के विटङ्कपीठ पर रगड़ खाने से जिन चरणों की अंगुलियाँ लाल हैं । विटङ्क का अर्थ है मध्यवर्ती उन्नत भाग ।

५—इस पद्य में दुष्ट व्यक्ति की निन्दा की गयी है । जिस प्रकार एक सर्प के मुख में सदैव विष रहता है उसी प्रकार दुर्जन के मुख में कटु वचन रहते हैं।

४—मैं गुरु भर्वु के उन दोनों चरणकमलों को नमन करता हूँ, जो मुकुट-धारी मौखरिवंश के राजाओं द्वारा अर्चित हैं और सभी सामन्तों के मुकुट-रूपी वेदिका के शीर्षस्थल पर रगड़ाने से लाल बनी हुई अंगुलियों वाले हैं ।

५—अकारण ही वैर करने के कारण कष्टदायी दुर्जन से किसे भय नहीं होता, जिसके मुख में अतिशय दुःसह दुर्वचन उसी प्रकार सदा उपस्थित रहता है जैसे महासर्प के मुख में विष ।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

कटु क्वणन्तो मलदायकाः खलास्तुदन्त्यलं बन्धनशृङ्खला इव ।
मनस्तु साधुध्वनिभिः पदे पदे हरन्ति सन्तो मणिनूपुरा इव ॥ ६ ॥

अन्वय—**अकारणाविष्कृतवैरदारुणात् असज्जनात् कस्य भयं न जायते, यस्य मुखे महाहेः विषम् इव सुदुःसहं दुर्वचः सदा सन्निहितम् ।**

शब्दार्थ—अकारणाविष्कृतवैरदारुणात्=अकारण किये गये वैर के कारण दारुण, भयंकर । महाहेः=महा+अहि, षष्ठी एकवचन, महान् सर्प के । सुदुःसहं दुर्वचः=अत्यन्त असह्य दुर्वचन । सदा सन्निहितम् = सदैव प्रस्तुत रहता है । इस पद्य में उपमा अलंकार है ।

६—इस पद्य में दुर्जन के वचनों की निन्दा तथा सज्जन के वचनों की प्रशंसा की गयी है । इसमें दो उपमाएँ हैं ।

अन्वय—**कटु क्वणन्तः मलदायकाः बन्धनशृङ्खला इब खलाः अलं तुदन्ति सन्तः तु मणिनूपुराः इव पदे साधुध्वनिभिः मनः हरन्ति ।**

शब्दार्थ—कटुक्वणन्तः = कटु शब्द करने वाले । मलदायकाः =

(१) दूसरों में कलंक लगाने वाले दुष्ट (२) बन्धन के स्थान पर कालिमा उत्पन्न करने वाली बेड़ियाँ । अलम्=अत्यन्त । साधुध्वनिभिः = .

(१) प्रिय वचनों से (२) मधुर ध्वनियों से । मणिनूपुराः इव-मणि के नूपुरों के समान ।

पदे पदे = (१) पद पद पर प्रत्येक शब्द पर (२) प्रत्येक चरण रखने पर मणिनूपुरा के पक्ष में साधुध्वनिभिः = (१) कल्याणकारी वचनों से (२) मधुर शब्द से ।

६—कटु भाषण करने वाले, कलंक लगानेवाले दुर्जन कटु-शब्द करने वाली कालिमा उत्पन्न करने वाली बंधन की जंजीर के समान अधिक कष्ट देते हैं । किन्तु सज्जन प्रत्येक पद पर अपनी सुन्दर उक्तियों से प्रत्येक पग पर मधुर ध्वनि करने वाले मणि के नूपुरों के समान मन को हर लेते हैं ।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

सुभाषितं हारि विशत्यधो गलान्न दुर्जनस्यार्करिपोरिवामृतम्।
तदेव धत्ते हृदयेन सज्जनो हरिर्महारत्नमिवातिनिर्मलम् ॥७॥

कथाप्रशंसा—

स्फुरत्कलालापविलासकोमला करोति रागं हृदि कौतुकाधिकम्।
रसेन शय्यां स्वयमभ्युपागता कथा जनस्याभिनवा वधूरिव ॥८॥

७—इसमें दुर्जन और सज्जनके परस्पर विरोधी स्वभावों का वर्णन किया गया है।

अन्वय—**हारि सुभाषितं दुर्जनस्य गलात् अधः, अर्करिपोः अमृतम् इव न विशति, तत् एव सज्जनः, हरिः अतिनिर्मलं रत्नम् इव हृदयेन धत्ते।**

शब्दार्थ—हारि=मनोहर। अर्करिपोः=सूर्य के शत्रु राहु। गलात् अधः न विशति=गले के नीचे नहीं प्रवेश करता। दुर्जन की उपमा राहु से दी गयी है। अतिनिर्मलम् रत्नम् इव = अत्यन्त निर्मल कौस्तुभ मणि के समान। हृदयेन धत्ते=हृदय पर धारण करते हैं, हृदय में धारण करते हैं।

८—इसमें कथा की प्रशंसा करते हुए उसकी उपमा नववधू से दी गयी है।

अन्वय—**स्फुरत्कलालापविलासकोमला, रसेन स्वयं शय्याम् अभ्युपागता कथा अभिनवा वधूः इव जनस्य हृदि कौतुकाधिकं रागं करोति।**

शब्दार्थ—यहाँ पद्य में श्लिष्ट उपमालङ्कार है। इसमें विशेषण शब्दों में श्लेष है जो कथा और नववधू के सन्दर्भ में भिन्न-भिन्न अर्थ व्यक्त करते हैं।

७—दुष्ट व्यक्ति के गले के नीचे मनोहर सुभाषित वैसे ही नहीं उतरता जैसे राहु के गले के नीचे अमृत। उसको ही सज्जन हृदय से धारण करता है जैसे विष्णु अत्यन्त निर्मल कौस्तुभमणि को हृदय पर धारण करते हैं।

८—प्रकटित होने वाली कलाओं तथा वार्तालाप के विलास के कारण सुन्दर एवं श्रृंगार रस से पूर्ण होकर स्वयं शय्या पर आयी हुई किसी व्यक्ति की नववधू के समान व्यक्त कलाओं के समूहों के कारण मनोहर और सहज रूप से रस के अनुकूल शब्दरचना वाली कथा व्यक्ति के हृदय में कुतूहल से परिपूर्ण प्रीति या रुचि उत्पन्न करती है।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

हरन्ति कं नोज्ज्वलदीपकोपमैर्नवैः पदार्थैरुपपादिताः कथाः ।
निरन्तरश्लेषघनाः सुजातयो महास्रजश्चम्पककुड्मलैरिव ॥९॥

स्फुरत्कलालापविलासकोमला=(१) स्पष्ट की गयी कलाओं के विलास के कारण मनोहर (कथा) (२) प्रकट होने वाले मधुर आलाप और हाव-भाव के कारण कोमल (वधू)। रसेन=(१) रस के अनुकूल (कथा) (२) श्रृङ्गाररस से पूर्ण (वधू)। शय्या=(१) शब्दों की रचना, शब्दचयन (२) पति की शय्या। जनस्य हृदि कौतुकाधिकम् रागम् करोति (१) पति के हृदय में कुतूहल से युक्त प्रेम उत्पन्न करती है—वधू (२) लोगों के मन में कुतूहल से भरी हुई अभिरुचि उत्पन्न करती।—कथा।

९—कथा की प्रशंसा करते हुए उसकी उपमा मालाओं से दी गयी है।

अन्वय—उज्ज्वलदीपकोपमैर्नवैः पदार्थैः उपपादिताः, निरन्तरश्लेषघनाः सुजातयः कथाः उज्ज्वलदीपकोपमैः चम्पककुड्मलैः (उपपादिता) निरन्तर-श्लेषघनाः, सुजातयः महास्रजः इव कं न हरन्ति।

शब्दार्थ—यहाँ चार विशेषणों में श्लेष है। उनके दो-दो अर्थ होंगे—(एक कथाओं के पक्ष में, दूसरे मालाओं के पक्ष में) उज्ज्वलदीपकोपमैः=(१) सुन्दर दीपक और उपमा अलंकारों वाली कथा (२) चमकते हुए दीपकों जैसे चम्पा की कलियाँ। उपपादिताः=रची गयी। निरन्तरश्लेषघनाः=(१) निरन्तर श्लेष अलंकार के प्रयोग के कारण सौष्ठव वाली कथा (२) निरन्तर गूँथी जाने के कारण घनी मालाएँ। सुजातयः=(१) सुन्दर जाति अर्थात् स्वभावोक्ति अलं-कारों वाली कथा (२) सुन्दर जाति अर्थात् चमेली के फूलों वाली मालाएँ। चम्पककुड्मलैः = चम्पा की कलियों से। महास्रजः—बड़ी मालाएँ। स्रक्=माला।

९—मनोहर दीपक और उपमा अलङ्कारों वाले नये विषयों से रची गयी तथा निरन्तर श्लेष के प्रयोग से घनी, सुन्दर स्वभावोक्ति अलङ्कार वाली कथायें उज्ज्वल दीपकों जैसी चम्पा की कलियों से बनायी गयी मालाओं के समान किसको आकृष्ट नहीं कर लेतीं ?

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

कविवंशवर्णन--

बभूव वात्स्यायनवंशसम्भवो द्विजो जगद्गीतगुणोऽग्रणी सताम् ।
अनेकगुप्तार्चितपादपङ्कजः कुबेरनामांश इव स्वयंभुवः ॥१०॥
उवास यस्य श्रुतिशान्तकल्मषे सदा पुरोडाशपवित्रिताधरे ।
सरस्वती सोमकषायितोदरे समस्तशास्त्रस्मृतिबन्धुरे मुखे ॥११॥

१०--यहाँ से लेकर पद्य १९ तक कवि ने अपने वंश का वर्णन किया है और अपने पूर्वजों के यश की प्रशस्ति की है ।

अन्वय--**वात्स्यायनवंशसम्भवः जगद्गीतगुणः सताम् अग्रणी, अनेकगुप्तार्चितपादपङ्कजः स्वयंभुवः अंशः इव कुबेरनामा द्विजः बभूव ।**

शब्दार्थ--वात्स्यायनवंशसंभवः=वात्स्यायनवंश में उत्पन्न, जगद्गीतगुणः=जगत् में जिनके गुण गाये गए हैं । अनेकगुप्तार्चितपादपङ्कजः=अनेक गुप्तों द्वारा (गुप्त वंश के राजाओं या वैश्यों द्वारा) जिसके चरणकमल पूजित हैं । स्वयम्भुवः=ब्रह्मा के । द्विजः=ब्राह्मण ।

११--अन्वय--**यस्य श्रुतिशान्तकल्मषे पुरोडाशपवित्रिताधरे सोमकषायितोदरे समस्तशास्त्रस्मृतिबन्धुरे मुखे सरस्वती सदा उवास ।**

शब्दार्थ--सप्तमी एकवचन वाले शब्द 'मुखे' के विशेषण हैं । श्रुतिशान्तकल्मषे=वेदाध्ययन से शान्त कलुष वाले । पुरोडाश=यज्ञ की हवि । कषायित=परिपक्व, पुष्ट । उदर=मध्य भाग । सोमेन कषायितम् उदरं यस्य तस्मिन् । समस्तशास्त्रस्मृतिबन्धुरे=सभी शास्त्रों और स्मृतियों के अनुशीलन के कारण मनोहर । सरस्वती सदा उवास=सरस्वती ने सदा निवास किया ।

१०--वात्स्यायन वंश में उत्पन्न, संसार में प्रशंसित गुणों वाले, सज्जनों में श्रेष्ठ असंख्य गुप्तवंशीय राजाओं द्वारा पूजित चरणकमल वाले ब्रह्मा के अंश के समान कुबेर नाम के ब्राह्मण उत्पन्न हुए ।

११--जिनके वेदाध्ययन से पापरहित, यज्ञ की हवि का भक्षण करने से पवित्र अधरोंवाले, सोमरस पीने से कषायित मध्य भागवाले और सम्पूर्ण शास्त्रों एवं स्मृतियों से मनोहर मुख में सरस्वती ने निरन्तर निवास किया ।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

जगुर्गृहेऽभ्यस्तसमस्तवाङ्मयैः ससारिकैः पञ्जरवर्तिभिः शुकैः।
निगृह्यमाणा वटवः पदे पदे यजूंषि सामानि च यस्य शङ्किता ॥१२॥
हिरण्यगर्भो भुवनाण्डकादिव क्षपाकरः क्षीरमहार्णवादिव।
अभूत् सुपर्णो विनतोदरादिव द्विजन्मनामर्थपतिः पतिस्ततः ॥१३॥

१२–अन्वय—यस्य गृहे अभ्यस्तसमस्तवाङ्मयैः पञ्जरवर्तिभिः ससारिकैः शुकैः पदे पदे निगृह्यमाणाः शङ्किताः वटवः यजूंषि सामानि च जगुः।

शब्दार्थः—अभ्यस्तसमस्तवाङ्मयैः=सभी विद्याओं का अभ्यास किए हुए पञ्जरवर्तिभिः=पिंजरे में बैठे हुए। ससारिकैः=सारिकाओं के साथ। निगृह्य-माणाः=टोके जाते हुए। वटवः=विद्यार्थी। जगुः=गाते थे।

१३—अन्वय—भुवनाण्डकात् हिरण्यगर्भः इव, क्षीरमहार्णवात् क्षपाकर इव, विनितोदरात् सुपर्णः इव ततः द्विजन्मनां पतिः अर्थपतिः अभूत्।

शब्दार्थ—भुवनाण्डकात्=विश्वरूपी अण्डे से, ब्रह्माण्ड से। हिरण्यगर्भः= प्रजापति के समान। क्षीरमहार्णवात्=क्षीर सागर से। क्षपाकरः=चन्द्रमा। विनतोदरात् सुपर्णः इव=विनता के उदर से सुपर्ण अर्थात् गरुड़ के समान। ततः=कुबेर से। द्विजन्मनां पतिः=इसका सभी के साथ अन्वय होगा। ब्राह्मणों का स्वामी। ब्रह्मा और चन्द्रमा ब्राह्मणों के स्वामी हैं। गरुड़ द्विजों अर्थात् पक्षियों के स्वामी हैं। अर्थपति भी ब्राह्मणों के स्वामी अर्थात् ब्राह्मणों में श्रेष्ठ थे।

११—जिनके घर में सभी विद्याओं का अभ्यास किए हुए पिंजरों में बैठे सारि-काओं के साथ शुकों द्वारा पद-पद पर टोके जाते हुए वटु शंकित होकर यजुस् मन्त्रों और साम का गान करते थे।

१३—जैसे विश्वरूपी अण्ड से हिरण्यगर्भ ब्रह्मा उत्पन्न हुए, क्षीरमहासागर से चन्द्रमा और विनता से गरुड़ ने जन्म लिया वैसे ही उनसे ब्राह्मणों के स्वामी अर्थपति हुए।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

विवृण्वतो यस्य विसारि वाङ्मयं दिने दिने शिष्यगणा नवा नवाः।
उषस्सु लग्नाः श्रवणेऽधिकां श्रियं प्रचक्रिरे चन्दनपल्लवा इव ।।१४।।
विधानसम्पादितदानशोभितैः स्फुरन्महावीरसनाथमूर्तिभिः ।
मखैरसंख्यैरजयत् सुरालयं सुखेन यो यूपकरैर्गजैरिव ।। १५ ।।

१४—अन्वय—**दिने दिने उषस्सु नवाः नवाः शिष्यगणाः चन्दनपल्लवाः इव श्रवणे लग्नाः (सन्तः) विसारि वाङ्मयं विवृण्वतः यस्य अधिकां श्रियं प्रचक्रिरे।**

शब्दार्थ—चन्दनपल्लवाः इव = चन्दन के पल्लवों के समान। श्रवणे (१) शास्त्र का उपदेश सुनने में (२) कानों पर लगे पल्लव। विसारि = विस्तृत। विवृण्वतः = व्याख्या करने वाले। अधिकां श्रियं प्रचक्रिरे = अधिक शोभा बढ़ाते थे।

१५—अन्वय—**यः विधानसम्पादितदानशोभितैः स्फुरन्महावीरसनाथमूर्तिभिः यूपकरैः असंख्यैः मखैः (विधानसम्पादितदानशोभितैः स्फुरन्महावीरसनाथमूर्तिभिः यूपकरैः), गजैः इव सुखेन सुरालयम् अजयत्।**

शब्दार्थ—इसमें मखः = यज्ञ की उपमा गज से दी गयी है। तीन विशेषण श्लिष्ट हैं जिनके अर्थ यज्ञ और हाथी के पक्ष में अलग-अलग होंगे। विधान-सम्पादितदानशोभितैः = (१) विधिपूर्वक दिये दान से सुशोभित यज्ञ (२) विधिपूर्वक उत्पादित मदजल से सुशोभित। स्फुरन्महावीरसनाथमूर्तिभिः = (१)

१४—विस्तृत विद्याओं की व्याख्या करने वाले जिनके नये-नये शिष्यों के समूह उषा कालों में व्याख्यान सुनते समय वैसे ही अधिक शोभा करते थे जैसे कानों पर लगे हुए चन्दन के पल्लव शोभा करते हैं।

१५—जिन्होंने विधिपूर्वक दी गयी दक्षिणा से शोभित, प्रकाशमान् अग्नि से संयुक्त स्वरूप वाले, यूपरूपी हाथों वाले असंख्य यज्ञों से सुखपूर्वक स्वर्ग को जीत लिया, मानों विधिपूर्वक खाद्यपदार्थ आदि से उत्पन्न मदजल से शोभित, उत्साहपूर्ण श्रेष्ठ वीरों से युक्त रूपों वाले, यूप जैसे सूंड़ों वाले असंख्य हाथियों से जीत लिया हो।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

स चित्रभानुं तनयं महात्मनां सुतोत्तमानां श्रुतिशास्त्रशालिनाम् ।
अवाप मध्ये स्फटिकोपलामलं क्रमेण कैलासमिव क्षमाभृताम् ॥१६॥
महात्मनो यस्य सुदूरनिर्गताः कलङ्कमुक्तेन्दुकलामलत्विषः ।
द्विषन्मनःप्राविविशुः कृतान्तरा गुणा नृसिंहस्य नखाङ्कुशा इव ॥१७॥

जलते हुए महावीर अर्थात् अग्नि से सनाथ स्वरूपों वाले यज्ञ (२) फड़कते हुए महान् वीरों से सुशोभित स्वरूप वाले । यूपकरैः = (१) यूपरूपी हाथों वाले यज्ञों से (२) यूपरूपी सूंड़ों वाले हाथियों से । यूप यज्ञ में पशु बाँधने का खूंटा होता है । सुखेन सुरालयम् अजयत् = सुखपूर्वक देवलोक को जीत लिया ।

१६—अन्वय—**स क्रमेण महात्मानाम् श्रुतिशास्त्रशालिनाम् सुतोत्तमानाम् मध्ये क्षमाभृताम् स्फटिकोपलामलं कैलासम् इव चित्रभानुं तनयम् अवाप ।**

शब्दार्थ—क्रमेण = क्रमशः । श्रुतिशास्त्रशालिनाम् = वेदों और शास्त्रों के ज्ञान से युक्त । सुतोत्तमानां मध्ये = श्रेष्ठ पुत्रों के बीच में । क्षमाभृताम्=पर्वतों के । स्फटिकोपलामलं = स्फटिकमणियों के कारण निर्मल । यहाँ उपमा है । जैसे पर्वतों में कैलास पर्वत श्रेष्ठ है वैसे पुत्रों में चित्रभानु गुणों में अग्रणी थे ।

१७—अन्वय—**यस्य महात्मनः सुदूरनिर्गताः कलङ्कमुक्तेन्दुकलामलत्विषः कृतान्तराः गुणाः नृसिंहस्य नखाङ्कुशाः इव द्विषन्मनः प्राविविशुः ।**

१६—उन्होंने क्रमानुसार अपने सज्जन, वेद शास्त्रों में पारंगत, श्रेष्ठ पुत्रों के बीच चित्रभानु नाम के पुत्र को पर्वतों के मध्य स्फटिकमणियों से निर्मल कैलास पर्वत के समान प्राप्त किया :

१७—जिस महात्मा के बहुत दूर तक फैले हुए, कलंकरहित चन्द्रमा के समान निर्मल कान्ति वाले गुणों ने शत्रुओं के हृदय में स्थान बनाते हुए वैसे ही प्रवेश किया, जैसे नृसिंह के दूर तक निकले हुए, कलङ्कहीन चन्द्रमा की कान्ति वाले नखाङ्कुशों ने शत्रु के हृदय में स्थान बनाते हुए प्रवेश किया ।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

दिशामलीकालकभङ्गतां गतस्त्रयीवधूकर्णतमालपल्लवः ।
चकार यस्याध्वरधूमसञ्चयो मलीमसः शुक्लतरं निजं यशः ॥१८॥
सरस्वतीपाणिसरोजसम्पुट-प्रमृष्टहोमश्रमशीकराम्भसः ।
यशोंऽशुशुक्लीकृतसप्तविष्टपात् ततःसुतो बाण इति व्यजायत् ॥१९॥

शब्दार्थ—यहाँ श्लेष है। विशेषणों के दो अर्थ होंगे—एक उपमेय 'गुणाः' के पक्ष में दूसरा उपमान 'नखाङ्कुशाः, के पक्ष में। सुदूरनिर्गताः—(१) बहुत दूर तक फैले हुए। (२) बहुत दूर तक निकले हुए अर्थात् लम्बे नख। कलङ्कमुक्तेन्दुकलामलत्विषः—कलंकहीन चन्द्रमा की कला के समान निर्मल कान्ति वाले—गुणों और नखों दोनों के विषय में। कृतान्तराः—(१) शत्रुओं के हृदय में अन्तर उत्पन्न करने वाले गुण। (२) शत्रु हिरण्यकशिपु के हृदय में स्थान बना देने वाले। द्विषन्मनः—(१) शत्रुओं के मन में (२) शत्रु हिरण्यकशिपु के मन में। प्राविविशुः—प्रवेश किया।

१८—अन्वय—**दिशामलीकालकभङ्गतां गतः, त्रयीवधूकर्णतमालपल्लवः मलीमसः यस्य अध्वरधूमसञ्चयः यशः शुक्लतरं चकार।**

शब्दार्थ—अध्वरधूमसञ्चयः (=यज्ञ के धुएँ के समूह ने) के तीन विशेषण हैं—दिशाम् अलीकालकभङ्गतां गतः = दिशाओं की (अर्थात् दिशारूपी वधूओं की) लटों की शोभा को प्राप्त। त्रयीवधूकर्णतमालपल्लवः = त्रयी रूपी वधू के कानों पर रखे गये तमाल के पल्लव के समान (रूपक अलङ्कार)। मलीमसः = कृष्ण वर्ण का। निजं यशः शुक्लतरं चकार = अपने यश को और शुभ्र बना दिया। (विरोधाभास)।

१८—जिनके यज्ञों के धूमसमूह ने जो दिशाओं की लटों की शोभा प्राप्त करते थे और तीनों वेद रूपी वधू के कानों पर तमाल के पल्लव जैसे लगते थे उनके अपने यश को और भी अधिक शुभ्र बना दिया।

१९—सरस्वती के करकमल से जिनकी हवन के समय उत्पन्न पसीने की बूँदें पोंछी गयी थीं और जिन्होंने अपने यश की किरणों से सातों भुवनों को धवल बना दिया था ऐसे उन (चित्रभानु) से बाण नाम का पुत्र उत्पन्न हुआ।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

द्विजेन तेनाक्षतकण्ठकौण्ठ्यया महामनोमोहमलीमसान्धया।
अलब्धवैदग्धविलासमुग्धया धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा ॥२०॥

१९अन्वय——सरस्वतीपाणिसरोजसम्पुटप्रमृष्टहोमश्रमशीकराम्भसः यशोंशु शुक्लीकृतसप्तविष्टपात् ततः बाण इति सुतः व्यजायत् ।

शब्दार्थ—सरस्वती····अम्भसः = सरस्वती के । पाणिसरोज = करकमलों के सम्पुट से पोंछा गया है होमकाल में उत्पन्न श्रमशीकर = पसीने की बूँदों का जल । यशोंशु = यश की किरणों से । शुक्लीकृत = शुभ्र बना दिया है । सप्तविष्टपात् = सात भुवन जिन्होंने उनसे । यशसः अंशुभिः शुक्लीकृतानि सप्तविष्टपानि येन सः, तस्मात् । बाण इति सुतः = बाण इस नाम के पुत्र । व्यजायत = उत्पन्न हुआ ।

२०—अन्वय—तेन द्विजेन अक्षतकण्ठकौण्ठ्यया, महामनोमोहमलीमसान्धया अलब्धवैदग्धविलासमुग्धया धिया इयम् अतिद्वयी कथा निबद्धा ।

शब्दार्थ—तेन द्विजेन = उस ब्राह्मण द्वारा, बाण द्वारा । धिया (= बुद्धि द्वारा) के तीन विशेषण हैं । अक्षतकण्ठकौण्ठ्यया = जिसमें कण्ठ की कुण्ठा अक्षत है, जिसमें वाणी का चातुर्य विकसित नहीं है । महामनोमोहमलीमसान्धया = घोर मन के मोह रूपी अन्धकार से आच्छन्न । महान् यो मनोमोहः महामनोमोहः, तेन मलीमसः, तेन अन्धया । अलब्धवैदग्धविलासमुग्धया = विद्वत्ता के विलास को न प्राप्त करने के कारण मन्द बुद्धि से । इयम् अतिद्वयी कथा निबद्धा = यह (१) दो का अतिक्रमण करने वाली कथा वृहत्कथा तथा वासवदत्ता से श्रेष्ठता या न्यूनता में बढ़कर । अथवा (२) अतिद्वयी = अनुपम कथा रची गयी ।

२०—उस ब्राह्मण ने अपनी ऐसी बुद्धि से, जिसके कण्ठ की कुण्ठा दूर नहीं है, जो अत्यन्त अज्ञान के अन्धकार से परिपूर्ण है और विद्वत्ता की शैली न प्राप्त करने से मन्द है, यह अतिद्वयी (वृहत्कथा और वासवदत्ता से हीनता या श्रेष्ठता में बढ़ी हुई अथवा अद्वितीय) कथा रची ।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

आसीदशेषनरपतिशिरःसमभ्यर्चितशासनः पाकशासनः इवापरः चतुरुदधिमालामेखलाया भुवो भर्त्ता, प्रतापानुरागावनतसमस्तसामन्तचक्रः, चक्रवर्तिलक्षणोपेतः, चक्रधर एव करकमलो-

शब्दार्थ – यहाँ 'आसीत' क्रिया का सम्बन्ध वाक्य के अन्त में आये हुए कर्त्ता 'राजा शूद्रको नाम' से है। आसीत् राजा शूद्रको नाम—शूद्रक नाम का राजा था; अशेष = सभी। अशेषा ये नरपतयो तेषां शिरांसि तैःसम्यक् अभितः अर्चित। पाकशासनः इव अपरः = दूसरे पाकशासन के समान। पाकशासनः = इन्द्र, पाकं शासितवान् इति पाकशासनः; पाक नाम के दैत्य का वध करने वाला। 'शासन्' पद की आवृत्ति से यमकालङ्कार।

चतुरुदधि०—चार समुद्रों का रूपक करधनी की चार लड़ियों से दिया गया है। उदकानि धीयन्ते अस्मिन् इति उदधिः; चार समुद्रों रूपी लड़ियों वाली मेखला = करधनी धारण करने वाली। भुवः = पृथ्वी का; पृथ्वी का वर्णन नायिका के रूप में किया गया है। भर्त्ता = स्वामी, पति। यहाँ समासोक्ति अलकार है। पृथ्वी प्रस्तुत है। पृथ्वी के वर्णन से अप्रस्तुत नायिका के वर्णन का भी बोध होता है।

प्रतापानुरागा०—जिसने अपने तेज के अनुराग से सभी सामन्तों के समूह को अवनत कर दिया है। वश में कर लिया है। चक्रवर्त्तिलक्षणोपेतः = चक्रवर्ती राजा के लक्षणों से युक्त। चक्रे भूमण्डले राजमण्डले वा वर्तितुं शीलमस्य चक्रवर्ती। चक्रधरः = चक्र धारण करने वाले विष्णु। लाञ्छनः—चिह्न। उपलक्ष्यमाणः=दिखाई पड़ रहा है। जिस प्रकार विष्णु के हाथ में शंख और चक्र दिखाई पड़ते हैं उसी प्रकार उसके हाथों में शंख और चक्र की रेखाओं के चिह्न दिखाई पड़ते थे (उपमालङ्कार।)

राजा शूद्रक का वर्णन

शूद्रक नाम का राजा था। सभी राजाओं द्वारा उसका शासन शिर पर स्वीकार किया जाता था और वह दूसरे इन्द्र के समान था। वह चार समुद्रों रूपी मालाओं से निर्मित करधनी धारण करने वाली पृथ्वी का पति था। अपने प्रताप के प्रति अनुराग से सभी सामन्तों को वश में किए हुए था और चक्रवर्ती सम्राट् के लक्षणों से युक्त था। करकमल में शंख एवं चक्र धारण करने वाले चक्रधारी विष्णु के समान उसके करकमल में शंख और

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

पलक्ष्यमाण-शङ्खचक्रलाञ्छनः, हर इव जितमन्मथः, गुह इवाप्रतिहतशक्तिः, कमलयोनिरिव विमानीकृतराजहंसमण्डलः, जलधिरिव लक्ष्मीप्रसूतिः, गंगाप्रवाह इव भगीरथपथप्रवृत्तः रविरिव प्रतिदिवसोपजायमानोदयः, मेरुरिव सकलोपजीव्यमानपादच्छायः,

हर = शिव। जितमन्मथः = (१) जितः मन्मथः येन सः, जिसके द्वारा कामदेव जीत लिया गया है ऐसे शिव (२) जिसने मन्मथः=कामभावना को जीत लिया है, शूद्रक। अथवा सौन्दर्य से काम को जीत लिया है। मनन मत्, मथतीति मथः। मतः मथो मन्मथः।

गुह = कार्तिकेय। गूहति रक्षति सेनामिति गुहः। अप्रतिहतशक्तिः = अप्रतिहत शक्ति वाला, जिसकी शक्ति को कोई रोक नहीं सकता। 'शक्ति' कार्तिकेय के अस्त्र का नाम है। राजा के पक्ष में प्रभाव, मन्त्र की शक्ति।

कमलयोनिः = ब्रह्मा। कमलं योनिः यस्य सः। विमानी०—इसमें श्लेष है। (१) विमान बनाया है राजहंसों के समूह को जिसने (ब्रह्मा के पक्ष में)। (२) वि+मान = मानरहित (विगतः मानो यस्य सः) कर दिया है राजा रूपी हंसों के समूह को (शूद्रक), जिसने दूसरे राजाओं का अभिमान नष्ट कर दिया है। राजानः हंसा इव राजहंसाः नृपोत्तमाः।

लक्ष्मीप्रसूतिः—(१) लक्ष्मी का जन्म-स्थान समुद्र (२) सम्पत्तियों का उद्भवस्थान राजा शूद्रक। भगीरथपथप्रवृत्तः = [१] भगीरथ के मार्ग पर बहने वाला गंगाप्रवाह [२] भगीरथ के तप मार्ग पर चलने वाली अथवा भगी = ऐश्वर्यसम्पन्न एवं रथपथ प्रवृत्त = युद्ध के मार्ग पर चलने वाला।

प्रतिदिवसोपजायमानोदयः = (१) प्रतिदिन जिसका उदय होता है (रवि) (२) प्रतिदिन जिसकी उन्नति हो रही है (शूद्रक)।

चक्र के चिह्न दिखायी पड़ते थे। जिस प्रकार शिव ने कामदेव को जीत लिया था उसी प्रकार उसने काम को जीत लिया था। जैसे कार्त्तिकेय का शक्ति नाम का शस्त्र अप्रतिहत है, वैसे ही उसकी शक्ति अप्रतिहत थी। जैसे ब्रह्मा ने राजहंसमण्डल को विमान बनाया है वैसे उसने राजाओं रूपी हंसमण्डल को अभिमानरहित कर दिया था। जैसे समुद्र लक्ष्मी का उत्पत्तिस्थान है वैसे वह भी सम्पत्तियों का उत्पत्तिस्थान था। भगीरथ के मार्ग पर बहने वाले गंगा के प्रवाह के समान वह भगीरथ के (तपस्या के) मार्ग पर प्रवृत्त था। जैसे सूर्य का प्रतिदिन उदय होता है वैसे वह प्रतिदिन उदय कर रहा था। जिस प्रकार मेरु पर्वत के नीचे की छाया का सभी सेवन करते हैं उसी प्रकार उसके चरणों की

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

दिग्गज इवानवरतप्रवृत्तदानार्द्रीकृतकरः, कर्त्ता महाश्चर्याणाम्, आहर्त्ता क्रतूनाम्, आदर्शः सर्वशास्त्राणाम्, उत्पत्तिः कलानाम्, कुलभवनं गुणानाम्, आगमः काव्यामृतरसानाम् उदयशैलो मित्रमण्डलस्य, उत्पातकेतुरहितजनस्य, प्रवर्त्तयिता गोष्ठीबन्धानाम्, आश्रयो रसिकानां, प्रत्यादेशो धनुष्मताम्, धौरेयः साह-

---

सकलो०—सभी के द्वारा जिसकी पादच्छाया सेवित है ऐसे मेरु पर्वत के समान (२) सभी के द्वारा उसके चरणों की छाया का आश्रय लिया जाता था, अर्थात् सभी प्रजा उस पर आश्रित थी। सकलैः उपजीव्यमाना पादयोः छाया शरणं यस्य सः

दिग्गज इव—दिग्गज के समान। अनवरत प्रवृत्त दानार्द्रीकृतकरः (१) निरन्तर उत्पन्न दान = मदजल से गीला कर दिया गया है कर अर्थात् सूँड जिसका। (२) निरन्तर दिए जाने वाले दान से जिसका हाथ गीला है। दिक्षु विख्यातो गजः।

आहर्त्ता = अनुष्ठान करने वाला। क्रतुः = यज्ञ। कुलभवनम्=कुलपरंपरा से रहने का घर, स्थायी निवास भवन। आगमः=उद्भव का स्रोत। मित्र-मण्डलस्य=(१) सूर्यमण्डल (२) मित्रों का समूह, श्लेषालंकार। अहितजनस्य= शत्रुओं का। यहाँ उल्लेखालङ्कार है। उत्पातकेतुः=विनाशसूचक धूमकेतु।

प्रत्यादेशः=आगे बढ़नेवाला, श्रेष्ठ। धौरेयः=धुरी पर रहने वाला, प्रधान। विदग्धानाम्=विद्वानों में 'प्रत्यादेशो निराकृतिः'=अमर।

छाया का सभी प्रजा सेवन करती थी। जैसे विशाल हाथी का सूँड निरन्तर गिरते हुए मदजल से गीला होता है, वैसे निरन्तर दिए जाने वाले दान से उसका हाथ गीला रहता था। वह महान् आश्चर्यजनक कार्य करने वाला, यज्ञों का अनुष्ठान करनेवाला, सभी शास्त्रों का दर्पण, कलाओं का उद्भवस्थान, गुणों का परम्परया निवासस्थान, काव्यरूपी अमृतरस का उद्भव, सूर्यमण्डल के निकलने के स्थान उदयाचल के समान मित्रों की उन्नति का निमित्त, शत्रुओं के विनाश के लिए धूमकेतु, सभाओं का आयोजक, काव्यरस के ज्ञाताओं का आश्रयदाता, धनुर्धारियों में श्रेष्ठ, और प्रतिभाशालियों में अग्रणी था। जिस प्रकार गरुड

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

सिकानाम्, अग्रणीर्विदग्धानाम्, वैनतेय इव विनतानन्दजननः, वैन्य इव चापकोटिसमुत्सारितसकलारातिकुलाचलो राजा शूद्रको नाम।

नाम्नैव यो निर्भिन्नारातिहृदयो विरचितनरसिंहरूपाडम्बरम्, एकविक्रमाक्रान्तसकलभुवनतलो विक्रमत्रयायासितभुवनत्रयं जहासेव वासुदेवम्। अतिचिरकाललग्नम् अतिक्रान्तकुनृपति-सहस्र

वैनतेय= विनता के पुत्र गरुड़। विनतानन्दजननः = (१) विनता+आनन्द-जननः = अपनी माता विनता को आनन्द देने वाले गरुड (२) विनत+आनंद-जननः = विनम्र रहने वालों को आनन्द देने वाला। विनता कश्यप की पत्नी थी।

वैन्य इव = वेन के पुत्र राजा पृथु के समान। चापकोटि० (१) धनुष के अग्रभाग से समुत्सारित (दूर कर दिया है) सकल अराति=शत्रुभूत कुलाचलः= कुल पर्वतों को। महेन्द्र, मलय, सह्य, शुक्तिमान्, ऋक्ष, विन्ध्य, पारियात्र इन सात पर्वतों को कुलाचल कहते हैं। (२) चापकोटि=कोटि संख्या वाले धनुषों से जिसने शत्रुओं रूपी कुलाचलों को नष्ट कर दिया था। चापानां कोटिः चापकोटिः तया समुत्सारिताः अरातयः कुलाचला इव येन सः।

निर्भिन्नारातिहृदयः=निर्भिन्न-अराति-हृदयः=विदीर्ण कर दिया है शत्रुओं के हृदय को जिसने। (निर्भिन्नानि अरातीनां हृदयानि येन सः)। विरचितनरसिंह रूपाडम्बरम् = बनाया है नरसिंह के रूप का आडम्बर जिसने। एकविक्रमाक्रान्त० =एक मात्र पराक्रम से सभी भुवनों को अधीन करने वाले। विक्रम

(अपनी माता) विनता के लिए आनन्दजनक थे उसी प्रकार वह विनत लोगों के लिए आनन्दजनक था और जैसे वेन के पुत्र पृथु ने धनुष के अग्रभाग से सभी शत्रुभूत कुलपर्वतों को दूर कर दिया था वैसे ही उसने धनुषों के अग्रभाग से सभी शत्रुरूपी कुलपर्वतों को समाप्त कर दिया था।

अपने नाम से ही शत्रुओं के हृदय को विदीर्ण करनेवाला तथा अपने एक पराक्रम से सभी भुवनों को वश में करने वाला वह, नरसिंह के रूप का आडम्बर धारण करने वाले तीन विक्रम (अर्थात् पादक्षेपों) से तीन भुवनों को खिन्न करने वाले भगवान् विष्णु की मानों हँसी उड़ाता था। मानों बहुत दिनों से लगे

CC-0. Public Domain: Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

सम्पर्ककलङ्कमिव क्षालयन्ती यस्य विमले कृपाणधाराजले चिरमुवास राजलक्ष्मीः ।

यश्च मनसि धर्मेण, कोपे यमेन, प्रसादे धनदेन, प्रतापे वह्निना, भुजे भुवा, दृशि श्रिया, वाचि सरस्वत्या, मुखे शशिना, बले मरुता, प्रज्ञायां सुरगुरुणा, रूपे मनसिजेन, तेजसि सवित्रा च वसता सर्वदेवमयस्य प्रकटितविश्वरूपाकृतेरनुकरोति भगवतो नारायणस्य ।

त्रयायासितभुवनत्रयम् = तीन विक्रम पादन्यास से तीन लोकों को खिन्न करने वाले । वासुदेवम् = विष्णु पर । जहास इव = मानों हँसता था, हँसी उड़ाता था । (उत्प्रेक्षा) । विक्रमः पादक्षेपस्तस्य त्रयं तेन विक्रमत्रयेण आयासितं समवाप्त-खेदं भुवनानां त्रयं येन तम् । उपमान की अपेक्षा उपमेय का आधिक्य वर्णित होने से व्यतिरेक अलङ्कार है ।

कुनृपति = अधम राजा अथवा कु = पृथ्वी के पति=स्वामी अर्थात् राजा । क्षालयन्ती इव = मानों धोती हुई (क्रियोत्प्रेक्षा) । कृपाणधाराजले = कृपाण की धाररूपी जल में (रूपक अलङ्कार) ।

प्रसादे = प्रसन्नता में । धनद = कुबेर । वह्नि = अग्नि । दृशि = नेत्र में । सर्वदेवमयस्य = सभी देवों से युक्त, सबको अपने में धारण किये हुए । विश्व रूपाकृतेः = विश्वरूप अर्थात् विराट् स्वरूप धारण करने वाले । भगवतः नारायणस्य अनुकरोति = भगवान् नारायण का अनुकरण करता था । (उपमा) ।

हुए, बीते हुए सहस्रों अधम राजाओं के सम्पर्क से उत्पन्न कलङ्क को धोती हुई राजलक्ष्मी ने उसके कृपाण की धाररूपी जल में दीर्घकाल तक निवास किया ।

वह मन में धर्म के विद्यमान होने के कारण, क्रोध में यम के, प्रसन्नता में कुबेर के, प्रताप में अग्नि के तुल्य होने से, भुजाओं पर पृथ्वी के आश्रित होने से, नेत्रों में श्री के, वाणी में सरस्वती के निवास करने से, मुख में चन्द्रमा के, वल में मरुतों के, बुद्धि में बृहस्पति के, रूप में कामदेव के तथा तेज में सूर्य के निवास करने के कारण सभी देवों को अपने भीतर धारण करने वाले विश्व-रूप आकृति वाले भगवान् विष्णु का अनुकरण करता था ।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

यस्य च मदकल-करिकुम्भपीठ-पाटनमाचरता, लग्नस्थूल-मुक्ताफलेन, दृढमुष्टिनिष्पीडन-निष्ठ्यूत-धाराजलबिन्दु-दन्तुरेण कृपाणेनाकृष्यमाणा, सुभटोरःकपाटघटित-कवच-सहस्रान्धकार-मध्यवर्त्तिनी करिकरटगलितमदजलासार-दुर्दिनास्वभिसारिकेव समरनिशासु समीपमसकृदाजगाम राजलक्ष्मीः ।

मदकलकरिकुम्भपीठपाटनम् = मतवाले हाथियों के मस्तक और पीठ का विदारण । मदेन कलानि मनोहराणि करिणां यानि कुम्भपीठानि, तेषां पाटनम् । पाटन = विदारण । आचरता = करने वाले, आ+चर् धातु शतृ प्रत्यय, तृतीया एकवचन (कृपाणेन का विशेषण) । निष्पीडन = दबाना । निष्ठ्यूत = निकलते हुए । दन्तुर = ऊँची-नीची । तलवार की सफेद लपलपाती हुई धार ऐसी लगती थी मानों जोर से उसकी मूँठ दबाने से उसमें से जल की धार बह रही हो । कृपाणेन आकृष्यमाणा = तलवार से बुलायी गई, आकृष्ट की गई । क्रियोत्प्रेक्षालङ्कारः, उरः-कपाट में रूपक ।

राजलक्ष्मी की उपमा अभिसारिका नायिका से की गयी है । सुभट = श्रेष्ठ वीर । उरःकपाट = कपाट जैसी चौड़ी छाती । घटित = लगे हुए । कवचसहस्रान्धकारमध्यवर्तिनी = सहस्रों कवचों के अन्धकार के बीच रहने वाली । सुभटानां उरांसि एव कपाटानि तेषु घटितानि यानि कवचसहस्राणि । करिकरट = हाथियों का मस्तक । मदजलासारदुर्दिनासु = मदजल की धारा से उत्पन्न वर्षा वाली । समरनिशासु = युद्धरूपी रात्रियों में । अभिसारिका इव = प्रेमी से छिपकर मिलने वाली नायिका के समान (उपमा) । असकृत = बार-बार । आजगाम = आयी । 'कान्तार्थिनी तु या याति संकेतं साभिसारिका । अमरकोष ।

जिसके समीप मतवाले हाथियों के मस्तक और पीठ का विदारण करने वाले बड़े मुक्ताफलों से युक्त, दृढ़तापूर्वक मुष्टि के दबाने से निकली धाररूपी जल के बूँदों के कारण टेढ़े-मेढ़े से दिखायी पड़नेवाले कृपाण से आकृष्ट की गयी, महान् वीरों की किवाड़ों जैसी विस्तृत छातियों पर लगे सहस्रों कवचों के अन्धकार के भीतर से चलने वाली, अभिसारिका के समान राजलक्ष्मी हाथियों के मस्तक के गिरते मदजल की धारावाली युद्धरूपी रात्रियों में पुनः-पुनः आयी ।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

यस्य च हृदयस्थितानपि पतीन् दिधक्षुरिव प्रतापानलो वियोगिनीनामपि रिपुसुन्दरीणामन्तर्जनितदाहो दिवानिशं जज्वाल ।

यस्मिंश्च राजनि जितजगति परिपालयति महीं, चित्रकर्मसु वर्णसङ्कराः, रतेषु केशग्रहाः, काव्येषु दृढबन्धाः शास्त्रेषु

दिधक्षुः=जलाने की इच्छा वाला, दह् धातु, सन् प्रत्यय उ प्रत्यय । इव=मानों (उत्प्रेक्षा अलङ्कार) । प्रतापानल=प्रताप रूपी अग्नि (रूपक अलङ्कार) प्रतापः कोशदण्डजं तेजः, तदेवानलः । रिपुसुन्दरीणाम् अन्तः=शत्रु पत्नियों के मन में । जनितदाहः=दाह उत्पन्न कर । दिवानिशम् = दिन-रात । जज्वाल=जलता था । उत्प्रेक्षा की गयी है कि उस राजा के प्रताप की अग्नि शत्रु पत्नियों के हृदय में दाह बनकर जलती थी, मानों हृदय में स्मृतिरूप में विद्यमान उनके पतियों को जलाना चाहती थी । अन्तः जनितः दाहः येन सः ।

जितजगति=जगत् को जीतने वाले ('राजनि का विशेषण') महीं परिपालयति=पृथ्वी का पालन करते रहने पर । 'यस्य च भावेन भावलक्षणम्' से सप्तमी । आगे आने वाले शब्द श्लिष्ट हैं । उनके दो अर्थ होंगे—एक तत्तत् वस्तुओं के पक्ष में और दूसरा प्रजा के पक्ष में ।

वर्णसङ्कराः—(१) रंगों का मिश्रण (२) अन्तर्जातीय स्त्रीपुरुष सम्बन्ध से उत्पन्न वर्णसङ्कर सन्तानें । रतेषु=रतिक्रीडाओं में । केशग्रहाः=(१) प्रेम में केश पकड़ना (२) झगड़े में केश खींचना । दृढबन्धाः=(१) बन्ध चित्रालङ्कार, पद रचना, प्रगाढपद रचना ।

जिसकी प्रतापरूपी अग्नि मानों हृदय में भी स्थित पतियों को जलाने की इच्छा से वियोगिनी शत्रुपत्नियों के मन में दाह उत्पन्न कर दिन-रात जलती रहती थी ।

जगत् को जीत लेनेवाले उस राजा के पृथ्वी का पालन करते रहने पर, चित्ररचना में ही वर्णों का मिश्रण होता था (प्रजा में वर्णसङ्कर नहीं थे), रतिक्रीडा में ही केश पकड़े जाते थे (कलह में नहीं), काव्य में ही दृढ़बन्ध होते थे

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

चिन्ता, स्वप्नेषु विप्रलम्भाः, छत्रेषु कनकदण्डाः, ध्वजेषु प्रकम्पाः, गीतेषु रागविलासितानि, करिषु मदविकाराः, चापेषु गुणच्छेदाः, गवाक्षेषु जालमार्गाः, शशिकृपाणकवचेषु कलङ्काः, रतिकलहेषु दूतसम्प्रेषणानि, शार्यक्षेषु शून्यगृहाः, न प्रजानामासन् ।

दृढ़वन्ध प्रहेलिका आदि की शैली को कहते हैं। (२) दृढ़तापूर्वक वन्धन, अपराधियों का। प्रजा में किसी का दृढ़बन्धन नहीं होता था। अपराध का अभाव था। चिन्ता=चिन्तन मानसिक कष्ट। विप्रलम्भ वियोग या धोखा। कनकदण्ड (१) सोने का डण्डा (२) दण्डस्वरूप सोने का ग्रहण। अपराध का अभाव था।

प्रकम्प=(१) हिलना (२) भय से काँपना। रागविलासितानि=(१) रागों के उतार-चढ़ाव (२) राग अर्थात् क्रोध, मद, मात्सर्य आदि। मद=मद जल, घमण्ड। गुणच्छेद=डोरी का टूटना, गुणों का अभाव। धनुषों में ही गुणच्छेद होता था अर्थात् डोरी टूटती थी। प्रजा में गुणच्छेद नहीं था, गुणों का अभाव नहीं था।

गवाक्ष=झरोखा। गो=किरणों (गावः वाक्षन्ति एनम्) जालमार्ग=(१) किरणसमूह का मार्ग (२) जालसाज, धोखेबाज। रतिकलह=प्रेमकलह, पति-पत्नी का कलह। शार्यक्ष=गोटियों के रखने का घर। न प्रजानाम् आसन्=प्रजा के घर सूने नहीं थे। यहाँ 'वर्णसङ्करा' आदि से आरम्भ कर "प्रजानामासन्" तक परिसंख्यालङ्कार है, जो श्लेषानुप्राणित है।

(प्रजा में अपराधी न होने से दृढ़ता से बन्धन नहीं था), शास्त्रों में ही चिन्ता थी (प्रजा में नहीं), स्वप्न में ही विप्रलम्भ अर्थात् धोखा या वियोग होता था (प्रजा में विप्रलम्भ नहीं था), गीतों में ही रागों के विलास होते थे (प्रजा में क्रोध आदि राग नहीं थे), हाथियों में ही मदविकार था (प्रजा में मद नहीं था), धनुषों में ही गुणच्छेद था (प्रजा में गुणों का अभाव नहीं था), झरोखे ही जालमार्ग (किरणों के मार्ग) थे प्रजा में जालमार्ग (=जालमार्ग, धूर्त) नहीं थे। चन्द्रमा, कृपाणों और कवचों में ही कलंक था (प्रजा में किसी के चरित्र में कलंक नहीं था), प्रेमी-प्रेमिका के कलह में ही दूत भेजे जाते थे (शत्रु से युद्ध के लिए नहीं) और द्यूतपटल पर गोटियों का ही घर सूना रहता था, प्रजाओं का नहीं।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

२६७२ लौह धा (i) कुटिलता (ii) पराजय

यस्य च परलोकाद् भयम्, अन्तःपुरिकालकेषु भङ्गः, नूपुरेषु मुखरता, विवाहेषु करपीडनम्, अनवरतमखाग्निधूमेनाश्रुपातः, तुरगेषु कशाभिघातः, मकरध्वजे चापध्वनिरभूत् ।

२६७२

तस्य च राज्ञः कलिकालभयपुञ्जीभूतकृतयुगानुकारिणी, त्रिभुवनप्रसवभूमिरिव विस्तीर्णा, मज्जन्मालवविलासिनी

अन्तःपुरिका = रानियाँ । अलकेषु = केशों में । भङ्गः = [१] लट [२] पराजय । करपीडनम् = [१] करग्रहण अर्थात् पाणिग्रहण [२] कर वसूल करना । मखाग्नि = यज्ञ की अग्नि । कशाभिघातः = कोड़े का प्रहार । मकरध्वजे = कामदेव में । ये प्रयोग परिसंख्या नाम के अलंकार के हैं ।

पुञ्जीभूत = सिमटी हुई, एक स्थान पर स्थित (उत्प्रेक्षा) कृतयुग=सतयुग । प्रसवभूमिः = उत्पत्तिस्थान, त्रयाणां भुवनानां समाहरः त्रिभुवनम् । राजा शूद्रक की राजधानी का नाम विदिशा था । विदिशा का वर्णन करते हुए कवि ने तीन विशेषण दिये हैं—वह कलियुग के भय से पुञ्जीभूत सतयुग का अनुकरण करती थी; तीनों लोकों के उत्पत्तिस्थान के समान विस्तृत थी और वेत्रवती नदी से धिरी थी [वेत्रवत्या परिगता] ।

वेत्रवती नदी के तीन विशेषण दिये हैं । मज्जन् = स्नान करने वाली मालवविलासिनी = मालव देश की युवतियाँ । कुचतटास्फालन=स्तनों के किनारे

उसके राज्य में परलोक से ही भय था, अन्तःपुर की स्त्रियों के केशों में ही भंग [= लटें] थीं [युद्धों में भंग अर्थात् विनाश नहीं था], नूपुरों में ही मुखरता थी, विवाहों में ही करपीडन [पाणिग्रहण] था [कर के लिए किसी को पीड़ित नहीं किया जाता था], निरन्तर यज्ञ की अग्नि से उत्पन्न धुएँ के कारण अश्रुपात होता था [किसी की असमय मृत्यु से नहीं], घोड़ों पर ही कोड़े का प्रहार होता था और कामदेव के धनुष में ही शब्द होता था ।

[राजधानी का वर्णन]

उस राजा की कलियुग के भय से पुञ्जीभूत सतयुग का अनुसरण करने वाली, तीनों लोकों के उद्‌भव स्थान के समान विस्तृत, स्नानरत मालवदेश की

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

कुचतटास्फालनजर्जरितोर्म्मिमालया जलावगाहनायात-जयकुञ्जर-कुम्भसिन्दूरसन्ध्यायमानसलिलया उन्मदकलहंसकुलकोलाहल-मुखरितकूलया वेत्रवत्या परिगता विदिशाभिधाना नगरी राजधान्यासीत् ।

स तस्याञ्च विजिताशेषभुवनमण्डलतया विगतराज्य-चिन्ताभारनिर्वृतः द्वीपान्तरागतानेकभूमिपाल—मौलिमाला-

---

के आस्फालन से, आघात से । जर्जरितोर्म्मिमालया = जिसकी उर्म्मिमालाएँ जर्जरिता हैं, जिसकी लहरें छिन्न-भिन्न हो गयी हैं, अतिशयोक्ति अलङ्कार ।

दूसरा विशेषण है—जलाव० । जलावगाहन = जल में स्नान । आयात = आये हुए । जयकुञ्जर = विजय के हाथी, विपक्षी को जीतने में समर्थ युद्ध के हाथी । संध्यायमानसलिलया = सन्ध्या के समान [लाल] हो रहा है जल जिसका । क्यङ् प्रत्यक्ष । उपमा ।

तीसरा विशेषण 'उन्मदकलहंस०' । उन्मदकलहंसकुल = मतवाले हंसों के समूह । कोलाहलमुखरित = कोलाहल से शब्दमय है, गूँज रहा है । कूल=तट । इस प्रकार की वेत्रवती नदी से घिरी हुई थी ।

इस अनुच्छेद में शूद्रक के मन्त्रियों और मित्रों का वर्णन है । विजिताशेष-भुवनमण्डलतया = विजित [जीत लिया है] अशेष [सभी] भुवनमण्डल को, इस कारण । सम्पूर्ण भुवनमण्डल को जीत लेने के कारण । विगतराज्यचिन्ता-भारनिवृत्तः=समाप्त है राज्य की चिन्ता का भार, अतः निश्चिन्त । राज्य की चिन्ता का भार समाप्त होने से निश्चिन्त । द्वीपान्तर=अन्ये दीपाः द्वीपान्तराणि

युवतियों के स्तनों के किनारे की चोट से टूटती हुई लहरों वाली, जल में स्नान करने के लिए आये हुए युद्ध के हाथियों के मस्तक से धुले सिन्दूर के कारण सन्ध्या के समान लाल रंग के जल वाली एवं मतवाले हंसकुल के कोलाहल से मुखरित तटों वाली वेत्रवती नदी से घिरी विदिशा नाम की नगरी राजधानी थी।

[मन्त्रियों एवं मित्रों का वर्णन]

उसने उस राजधानी में, युवावस्था में आनन्द के साथ बहुत दिनों तक निवास किया । सम्पूर्ण भुवन-मण्डल को जीत लेने के कारण वह राज्य की चिन्ता के भार से मुक्त था, अन्य द्वीपों से आये अनेक राजाओं के सिरों पर

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

महो .. राजा का वर्णन

लालितचरणयुगलः, वलयमिव लीलया भुजेन भुवनभारमुद्वहन्, अमरगुरुमपि । प्रज्ञयोपहसद्भिरनेककुलक्रमागतैरसकृदालोचितनीतिशास्त्रनिर्मलमनोभिरलुब्धैः स्निग्धैः प्रबुद्धैश्चामात्यैः परिवृतः, (स तस्याञ्च समानवयोविद्यालङ्कारैरनेकमूर्द्धाभिषिक्तपार्थिवकुलोद्गतैरखिलकलाकलापालोचनकठोरमतिभिः, अतिप्रगल्भैः काल-

---

दूसरे द्वीप । मौलिमाला = मस्तक की मलायें । लालितचरणयुगलः = जिसके दोनों चरण लालित हैं । आदरपूर्वक स्पर्श किये जाते हैं । लालितं चरणयुगलं यस्य सः ।

वलय = कङ्कण । भुवनभारम् उद्वहन् = पृथ्वी का भार ढोता हुआ, पालन करता हुआ । अमरगुरु०—तृतीया बहुवचन वाले शब्द 'अमात्यैः' के विशेषण हैं । अमात्यैः परिवृत्तः = मन्त्रियों से घिरा हुआ । अमरगुरुम् = बृहस्पति को भी । प्रज्ञया = बुद्धि से । उपहसद्भिः = उपहास करने वाले । अनेक-कुल-क्रमागतैः = अनेक कुलपरम्परा से आये हुए । असकृदालोचितनीतिशास्त्र निर्मलमनोभिः = बार-बार नीतिशास्त्र के अनुशीलन से निर्मल मन वाले । अलुब्धैः = लोभ-रहित । स्निग्धैः = प्रेमपूर्ण । प्रबुद्धैः = विद्वान् ।

समानवयो—यहाँ से आगे तृतीया बहुवचन वाले शब्द "राजपुत्रैः" के विशेषण हैं । समान्वयो-विद्यालङ्कारैः = समान अवस्था विद्या और आभूषणों वाले । अनेकमूर्द्धाभिषिक्तपार्थिवकुलोद्गतैः = अनेक मूर्द्धाभिषिक्त राजाओं के कुल में उत्पन्न । मूर्द्धाभिषिक्त का अर्थ है जिनका अभिषेक किया गया है । अनेके मूर्द्धाभिषिक्ताः कृताभिषेकाः पार्थिवाः तेषां कुलानि, तेभ्यः उद्गतैः । 'मूर्द्धाभिषिक्तो राजन्यो बाहुजः क्षत्रियो विराट् ।'—अमर० । ब्राह्मण पुरुष द्वारा क्षत्रिया पत्नी से उत्पन्न को भी मूर्द्धाभिषिक्त कहते हैं । अखिल-कलाकलाप = सम्पूर्ण कलाओं के समूह के । आलोचन = अध्ययन । कठोर = परिपक्व । मति = बुद्धि । प्रगल्भैः=प्रतिभाशाली । कालविद्=अवसर को

विद्यमान मालाओं से उसके चरण-युगल सहलाये जाते थे । वह कंकण के समान सुखपूर्वक अपनी भुजा से पृथ्वी का भार ढो रहा था । देवों के गुरु बृहस्पति की भी अपनी बुद्धि से हँसी उड़ाने वाले, वंशपरम्परा से चले आने वाले, बार-बार पढ़े गये नीतिशास्त्र के कारण निर्मल मन वाले, लोभहीन, स्नेहपूर्ण बुद्धिमान् मन्त्रियों से घिरा रहता था और समान आयु, विद्या एवं आभूषणों से युक्त अनेक मूर्द्धाभिषिक्त राजाओं के कुल में उत्पन्न, सभी कलाओं के समूह की आलो-

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

विद्भिः प्रेमानुरक्तहृदयैरग्राम्यपरिहासकुशलैरिङ्गिताकारवेदिभिः, काव्यनाटकाख्यानकाख्यायिका—लेख्यव्याख्यानादिक्रियानिपुणैः, अतिकठिनपीवरस्कन्धोरुबाहुभिरसकृदवदलितसमदरिपुगजघटा — पीठबन्धैः, केशरिकिशोरकैरिव, विक्रमैकरसैरपि विनयव्यवहारिभिरात्मनः प्रतिबिम्बैरिव राजपुत्रैः सह रममाणः प्रथमे वयसि सुखमतिचिरमुवास।

जानने वाला। अग्राम्य = शिष्ट। इङ्गिताकार = संकेत का अर्थ। लेख्य…… चित्र रचना। 'प्रगल्भ प्रतिभान्विते'—अमर०।

अतिकठिनपीवरस्कन्धोरुबाहुभिः = अत्यन्त कठोर एवं स्थूल कन्धे, जाँघों एवं भुजाओं वाले। असकृदवदलित-समद-रिपु-गज-घटा-पीठबन्धैः = असकृत् (बार-बार) अवदलित (रौंदे हैं) समद (मतवाले) रिपुगजघटापीठ बन्धाः (शत्रु हाथियों के समूह के पीठ बन्धों को), जिन्होंने शत्रुपक्ष के मतवाले हाथियों के समूह के हौदों को बार-बार रौंदा है, उन पर बार-बार विजय प्राप्त की है।

केशरिकिशोरक=सिंह का बच्चा (उपमा)। विक्रमैकरसैः=एक मात्र विक्रम में रुचि रखने वाले। विक्रम एव एकः रसः येषां ते। रस = अनुराग। विनयव्यवहारिभिः = विनयपूर्ण व्यवहार करने वाले। आत्मनः प्रतिबिम्बैः इव = अपने प्रतिबिम्बों जैसे लगने वाले (उपमा)। राजपुत्रैः सह रममाणः=राजकुमारों के साथ आनन्द मनाता हुआ। प्रथमे वयसि = युवावस्था में। सुखम् = सुखपूर्वक। अतिचिरम् = बहुत दीर्घ समय तक। उवास = निवास किया।

चना से परिपक्व बुद्धिवाले, अत्यन्त प्रतिभाशाली, समय को जानने वाले, प्रेम से अनुरक्त हृदय वाले, शिष्ट परिहास में चतुर, संकेतों की भाषा जानने वाले काव्य-नाटक-आख्यान-आख्यायिका-चित्र-व्याख्यान आदि क्रियाओं में निपुण, अत्यन्त कठोर एवं मांसल कन्धे, जाँघों एवं भुजाओं से अनेक बार मतवाले शत्रुगजों के पीठबन्धों को रौंदने वाले, सिंह-शावकों जैसे प्रतीत होने वाले, एक मात्र पराक्रम में रुचि होने पर भी विनयपूर्ण व्यवहार करने वाले, अपने प्रतिबिम्बों जैसे राजकुमारों के साथ आनन्द मनाता रहा।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

तस्य चातिविजिगीषुतया महासत्त्वतया च तृणमिव लघुवृत्ति स्त्रैणमाकलयतः, प्रथमे वयसि वर्त्तमानस्यापि, रूपवतोऽपि, सन्तानार्थिभिरमात्यैरपेक्षितस्यापि, सुरतसुखस्योपरि द्वेष इवासीत्। सत्यपि रूपविलासोपहसितरतिविभ्रमे लावण्यवति विनयवत्यन्वयवति हृदयहारिणि चावरोधजने, स कदाचिदन-

अतिविजिगीषुतया = अत्यन्त विजिगीषु होने के कारण। अत्यधिक विजय की आकांक्षा से युक्त होने के कारण। अतिशयेन विजेतुमिच्छुः विजिगीपुः। महासत्वया = महान् धैर्यवान् होने के कारण। सत्व = वल, धैर्य। स्त्रैणम् = स्त्रीसमूह को (स्त्रीणां समूहं स्त्रैणम्)। स्त्री + नञ् समास। तृणम् इव लघुवृत्ति आकलयतः = तिनके समान क्षुद्रवृत्ति का मानने वाला। (उपमालङ्कार)।

सन्तानार्थिभिः = सन्तान चाहने वाले। अमात्यैः अपेक्षितस्य अपि=अपेक्षित होने पर भी, आग्रह करने पर भी। सुरतसुख = स्त्रीसंभोग का सुख। द्वेष इव आसीत् = मानो द्वेष था (उत्प्रेक्षा)।

सति अपि = होने पर भी। 'सति' में सप्तमी है। अवरोधजने' में सप्तमी है। अवरोधजने = अन्तःपुर की रानियों के। अवरोधजने' के छः विशेषण हैं जो सभी सप्तमी एकवचन में हैं। रूपविलासोपहसित-रतिविभ्रमे = रूप और विलास से जो रति के विभ्रम का उपहास करने वाली। रति कामदेव की पत्नी का नाम है। लावण्यवति = सौन्दर्य से युक्त। विनयवति = विनम्र व्यवहार वाली। अन्वयवति = वंश वाली, कुलीना।

दैनिक मनोरंजन

विजय की अत्यधिक महत्वाकांक्षा से युक्त होने एवं महान् धैर्यशाली होने के कारण, स्त्रियों को तृण के समान क्षुद्र व्यवहार का समझने वाले उस राजा का युवावस्था में होने पर भी, रूपवान् होने पर भी और सन्तान के के लिए इच्छुक मन्त्रियों की आकांक्षा होने पर भी, संभोगसुख के ऊपर द्वेष जैसा था। अपने रूप और हाव-भाव से रति के विलासों का भी उपहास करने वाली, सौन्दर्य की कान्ति से युक्त, विनम्र स्वभाव वाली, कुलीना एवं

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

करतदोलायमानरत्नवलयो घर्घरिकास्फालनप्रकम्पझणझणायमान मणिकर्णपूरः स्वयमारब्धमृदङ्गवाद्यः सङ्गीतकप्रसङ्गेन, कदाचिदविरलविमुक्तशरासारशून्यकृतकाननो मृगयाव्यापारेण, कदाचिदाबद्धविदग्धमण्डलः काव्यप्रबन्धरचनेन, कदाचिच्छास्त्रलापेन, कदाचिदाख्यानाख्यायिकेतिहासपुराणाकर्णनेन, कदाचिदालेख्यविनोदेन कदाचिद्वीणया, कदाचिद्दर्शनागत-मुनिजन-

---

कदाचित् = कभी। दोलायमानरत्नवलयः = जिसके रत्नों के कंकण हिलते रहते थे। घर्घरिकास्फालन०—घर्घरिका एक वाद्ययन्त्र है। उसके आस्फालन से उत्पन्न कम्पन से उसके मणि के कर्णभूषण झणझणायमान थे, झन्-झन् की ध्वनि करते थे। आरब्धमृदङ्गवाद्यः = मृदङ्ग बजाना आरम्भ करने वाला। संगीतकप्रसंगेन = संगीतक के प्रसंग से। नृत्य, गीत वाद्य तीनों के सम्मिलन को संगीतक कहते हैं 'गीतं नृत्तं च वादित्रं त्रयं सङ्गीतकमुच्यते'। दिवसम् अनैषीत् = दिन बिताता था। वाक्य के अन्त में आये हुए कर्म और क्रियापद से सम्बन्ध है।

अविरलविमुक्तशरासारशून्यकृतकाननः = निरन्तर छोड़े गये बाणों की वर्षा से शून्य कर दिया है कानन (वन) जिसने। शरासार = बाणों की वर्षा। मृगयाव्यापारेण = आखेट द्वारा।

आबद्धविदग्धमण्डलः = विद्वानों का मण्डल एकत्र कर आबद्धम् अनुष्ठितं विदग्धानां पण्डितानां मण्डलं येन सः। शास्त्रालापेन = शास्त्रों के विषय में वार्तालाप से। आकर्णनेन = श्रवण करने से। आलेख्यविनोदेन = चित्र रचना

मनोहारिणी रानियों के रहते हुए भी वह कभी संगीतक-गोष्ठी कर दिन बिताता था, जिससे उसके रत्नों के कंकण निरन्तर हिलते रहते थे, घर्घरिका बाजे के हिलने से उत्पन्न कम्पन के कारण मणियों के कर्णभूषण झनझनाते रहते थे और वह स्वयं ही मृदंग बजाना आरम्भ करता था। वह कभी निरन्तर छोड़े गये बाणों की वर्षा से बन को सूना बनाते हुए आखेट द्वारा, कभी विद्वानों का मण्डल बाँधकर काव्यग्रन्थों की रचना द्वारा, कभी शास्त्रों के विषय में वार्त्तालाप कर, कभी आख्यान, आख्यायिका, इतिहास और पुराण सुनते हुए, कभी चित्ररचना के विनोद से, कभी वीणा बजाकर, कभी दर्शन के लिए आये हुए मुनियों के चरणों की सेवा से,

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

चरणशुश्रूषया कदाचिदक्षरच्युतक—मात्राच्युतकबिन्दुमती-गूढ़-चतुर्थपादप्रहेलिकाप्रदानादिभिः वनितासम्भोगसुखपराङ्मुखः सुहृत्परिवृतो दिवसमनैषीत्। यथैव च दिवसमेवमारब्धविविध-क्रीडापरिहासचतुरैः सुहृद्भिरुपेतो निशामनैषीत्।

एकदा तु नातिदूरोदिते नवनलिनदलसम्पुटभिदि किञ्चिन्मुक्तपाटलिम्नि भगवति सहस्रमरीचिमालिनि राजान-

---

के मनोरंजन द्वारा। दर्शनागत=दर्शन के लिए आये। शुश्रूषया=सेवा द्वारा।

अक्षरच्युतक=जिसमें अक्षर लुप्त हों, मात्राएँ ही दी गयी हों। मात्राच्युतक=जिसमें अक्षर दिए गये हों, मात्राएँ लुप्त हों। बिन्दुमती=जिसमें अक्षरों के स्थान पर बिन्दु दिये गये हों और अक्षर तथा मात्राएँ भरनी हों। गूढ़चतुर्थपाद=जिसमें पद्य के तीन चरण दिये गये हैं और चतुर्थ चरण उन्हीं तीन पदों से अक्षर लेकर पूरा करना हो। ये चारों पद्य लिखने में समस्यापूर्ति के समान हैं। प्रहेलिका=पहेली।

वनितासम्भोगसुखपराङ्मुखः=स्त्री-सम्भोग-सुख से विमुख होकर यथैव च दिवसम्=और जैसे दिन (बिताता था) एवम्=उसी प्रकार। आरब्ध०=अनेक प्रकार की क्रीड़ायें तथा परिहास आरम्भ करने में चतुर। निशाम् अनैषीत्=रात्रि बिताता था।

एकदा=एक बार। नातिदूरोदिते=न अति दूर उदिते=बहुत ऊपर उदित न होने पर। नवनलिन-दल-सम्पुटभिदि=नये कमलों की

कभी अक्षरच्युतक, मात्राच्युतक, बिन्दुमती, गूढचतुर्थपाद पहेलियाँ आदि बुझाते हुए स्त्रीसम्भोग के सुख से विमुख होकर मित्रों से घिरा हुआ दिन बिताता था। जिस प्रकार दिन बिताता था उसी प्रकार अनेक प्रकार की क्रीड़ाएँ तथा परिहास आरम्भ करने में चतुर मित्रों के साथ बैठकर रात्रि बिताता था।

(प्रतिहारी का वर्णन)

एक बार नवीन कमलों के सम्पुट को खोलने वाले, कुछ-कुछ लालिमा का परित्याग करने वाले, भगवान् सूर्य के (आकाश में) बहुत ऊपर न उदित

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

मास्थानमण्डपगतमङ्गनाजनविरुद्धेन वामपार्श्वावलम्बिना कौक्षेयकेण सन्निहितविषधरेव चन्दनलताभीषणरमणीयाकृतिः अविरलचन्दनानुलेपनधवलितस्तनतटा उन्मज्जदैरावतकुम्भमण्डलेव मन्दाकिनी, चूडामणिसंक्रान्तप्रतिबिम्बच्छलेन राजाज्ञेव मूर्त्ति-

---

दलसंपुट (=पंखुड़ियों के समूह) को खोलने वाले। (सप्तमी एकवचन) किञ्चिन्मुक्तपाटलिम्नि=कुछ छोड़ दिया है पाटलिमा जिन्होंने। जिनका पाटल वर्ण कुछ लुप्त हो गया है। भगवति सहस्रमरीचिमालिनि=भगवान् सहस्र किरणों की माला धारण करने वाले सूर्य के।

आस्थानमण्डपगतम्=सभा मण्डप में बैठे हुए। राजानम्=राजा से इसका सम्बन्ध वाक्य के अन्त में आये हुए 'समुपसृत्य सविनयम् अब्रवीत्' से है। निकट जाकर विनय पूर्वक बोली। प्रतिहारी राजा की दासी को कहते थे, जो द्वार पर पहरा देने तथा राजा के पास सन्देश पहुँचाने का कार्य करती थी।

अंगनाजनविरुद्धेन=स्त्री जाति के विरुद्ध। तलवार धारण करना स्त्रीस्वभाव के विपरीत था। अंगना=स्त्री। वामपार्श्वविलम्बिना=बायीं बगल में लटकने वाली। कौक्षेयकेण=तलवार से। सन्निहितविषधरा=जिस पर विषधर (सर्प) सन्निहित हैं, लिपटे हुए हैं। भीषणरमणीयाकृति=भयंकर और सुन्दर आकृति वाली। [उपमा अलंकार]

अविरल०—निरन्तर चन्दन का लेप करने से धवल बने हुए स्तनों के किनारे वाली। ऐरावत=इन्द्र का श्वेत हाथी। उन्मज्जत्=निकल रहा है। कुम्भमण्डल=मस्तक के मांसपिण्डों का समूह। मन्दाकिनी=आकाशगंगा। उसके धवल किनारे वाले स्तन ऐरावत के मस्तक के मांसपिण्डों के समान और वह स्वयं मन्दाकिनी के समान थी [उपमा]।

होने पर सभामण्डप में बैठे हुए राजा के पास प्रतिहारी पहुँची। स्त्री जाति के विरुद्ध बाएँ पार्श्व में लटके हुए तलवार के कारण वह विषधर सर्प से युक्त चन्दन की लता के समान भयङ्कर और मनोहर स्वरूप वाली थी, निरन्तर चन्दन के लेप से धवल बने हुए स्तनों के किनारों के कारण ऐसी मन्दाकिनी

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

मती राजभिः शिरोभिरुह्यमाना, शरदिव कलहंसधवलाम्बरा, जामदग्न्यपरशुधारेव वशीकृतसकलराजमण्डला, विन्ध्यवन-भूमिरिव वेत्रलतावती, राज्याधिदेवतेव विग्रहिणी प्रतीहारी समुपसृत्य क्षितितलनिहितजानुकरकमला सविनयमब्रवीत् "देव,

---

चूडामणि = मुकुट की मणि। छलेन = बहाने से। मूर्त्तिमती = शरीर धारण करने वाली। उसका प्रतिबिम्व राजाओं के मुकुटों की मणियों में पड़ा। ऐसा प्रतीत होता था मानो वह शरीर धारण की हुई राजाज्ञा हो जिसे सभी राजा अपने मस्तकों पर धारण किए हुए थे। उह्यमाना = ढोयी जाती हुई। उत्प्रेक्षालङ्कार।

कलहंसधवलाम्वरा = यहाँ अम्बर शब्द श्लिष्ट है। इसके दो अर्थ होते हैं (१) आकाश और (२) वस्त्र। प्रतिहारी की उपमा शरद् ऋतु से दी गयी है। यह विशेषण दोनों पक्षों में लागू होगा। जैसे शरद् ऋतु कलहंसधवलाम्बरा (कलहंसों के समान धवल आकाश वाली) होती है, वैसी प्रतिहारी कलहंस-धवलाम्वरा—कलहंसों के समान धवल वस्त्र वाली थी। कलहंसाः इव धवलम् अम्बरं वस्त्रं यस्याः सा। कलहंसैः धवलम् अम्बरमाकाशं यस्याः सा। श्लेषा-नुप्राणित उपमालङ्कार।

जामदग्न्य = जमदग्नि ऋषि के पुत्र परशुराम की। परशुधारा इव = फरसे की धार के समान। वशीकृतसकलराजमण्डला = सभी राजाओं को वश में की हुई (यह अर्थ भी दोनों पक्षों में होगा। फरसे की धार और प्रतिहारी के पक्ष में)। वशीकृतं स्वसौन्दर्येण मोहितं सकलं राजमण्डलं यया सा।

नदी के समान लग रही थी, जिसमें ऐरावत हाथी के कुम्भमण्डल जल के ऊपर निकले हुए हों। वह राजाओं के मुकुट की मणियों में पड़े हुए प्रतिबिम्व के बहाने मूर्ति धारण की हुई राजाज्ञा के समान थी, जिसे सभी राजा अपने मस्तकों पर धारण कर रहे थे, वह कलहंसों के समान धवल आकाश वाली शरद् ऋतु के सदृश कलहंसों के तुल्य धवल वस्त्रों वाली थी, सम्पूर्ण राजसमूह को वश में करने वाली परशुराम के फरसे की धार के समान उसने सभी

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

द्वारस्थिता सुरलोकमारोहतस्त्रिशङ्कोरिव कुपितशतमखहुङ्कार-निपातिता राज्यलक्ष्मीर्दक्षिणापथादागता चाण्डालकन्यका पञ्जरस्थं शुकमादाय विज्ञापयति 'सकलभुवनतलसर्वरत्नानाम् उदधिरिवैकभाजनं देवः, विहङ्गमश्चायम् आश्चर्यभूतो निखिल-भुवनतलरत्नमिति कृत्वा देवपादमूलमेनमादायागताहमिच्छामि

वेत्रलतावती = (१) वेंत की लताओं वाली (२) बेंत की छड़ी वाली। अधिदेवता = अधिष्ठात्री देवी । क्षितितलनिहितजानुकरकमला = पृथ्वी पर रखकर घुटने और करकमल।

सुरलोकम् आरोहतः = देवलोक को चढ़ने वाले। कुपित=क्रुद्ध। शतमख = इन्द्र। त्रिशङ्कोः राजलक्ष्मीः इव = त्रिशङ्कु राजा की राजलक्ष्मी के समान (उपमा)। त्रिशङ्कु सूर्यवंशी राजा था, जो विश्वामित्र के प्रभाव से स्वर्ग जाना चाहता था। त्रिशङ्कु वसिष्ठ के शाप से चाण्डाल हो गया था। दक्षिणा पथ = दक्षिण देश। आगता = आयी हुई। पंजरम् = पिंजरे में रखे हुए। विज्ञापयति = निवेदन करती है।

सकलभुवनतलसर्वरत्नानाम्=सम्पूर्ण भुवन के सभी रत्नों का। उदधिः इव= समुद्र के समान (उपमा)। एक भाजनम् = एक मात्र स्थान। इति कृत्वा = ऐसा विचार कर। देवपादमूलम्=देव के चरणों के निकट। एतद् आकर्ण्य = यह सुनकर। देवः प्रमाणम् = आप ही प्रमाण हैं। आप आज्ञा दें। विरराम = रुक गई। ('जातौ जातौ यदुत्कृष्टं तद्रत्नमभिधीयते' प्रत्येक जाति की श्रेष्ठ वस्तु को रत्न कहते हैं।)

राजाओं के समूह का ध्यान अपने वश में कर लिया था, बेंत की लताओं से युक्त विन्ध्यवन की भूमि के समान वह वेंत की छड़ी लिए हुई थी और शरीर धारण करने वाली राज्य की अधिष्ठात्री देवी के समान थी। उसने पृथ्वी पर अपने घुटने और करकमल रख कर विनयपूर्वक कहा—'महाराज, द्वार पर खड़ी हुई देवलोक को चढ़ने वाले त्रिशंकु की कुपित इन्द्र की हुँकार से नीचे गिरायी गयी राजलक्ष्मी के समान लगने वाली, दक्षिणापथ से आयी हुई चाण्डालकन्या पिंजरे में शुक को लिए हुई निवेदन करती है—'सम्पूर्ण भुवनतल के सभी रत्नों के समुद्र के समान आप ही एकमात्र स्थान हैं और

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of JKS

अशनि = वज्रायुध   कनकशिखरिन = सुमेरु
पुञ्जित = सिमटे हुए = इकट्ठे हुए

देवदर्शनसुखमनुभवितुम्' इति। एतदाकर्ण्य देवः प्रमाणम्' इत्युक्त्वा विरराम। उपजातकुतूहलस्तु राजा समीपवर्त्तिनां राज्ञामवलोक्य मुखानि 'को दोषः, प्रवेश्यताम्' इत्यादिदेश।

अथ प्रतीहारी नरपतिकथनान्तरमुत्थाय तां मातङ्ग-कुमारीं प्रावेशयत्। प्रविश्य च सा नरपतिसहस्रमध्यवर्त्तिनम-शनिभयपुञ्जितकुलशैलमध्यगतमिव कनकशिखरिणम् अनेक-

---

उपजातकुतूहलः = कुतूहल से युक्त होकर (उपजातं कुतूहलं यस्य सः)। समीपवर्त्तिनाम् = निकट में बैठे। कः दोष = क्या दोष है। आदिदेश = आदेश दिया।

अथ = इसके उपरान्त। नरपतिकथनान्तरम् = राजा के कथन के बाद। मातङ्गकुमारीम् = चाण्डालकन्या को। सा = उस चाण्डालकन्या ने। इसका सम्बन्ध लम्बे वाक्य के अन्त में आए हुए 'राजानम् अद्राक्षीत्' से है। बीच में राजा का वर्णन है। सा राजानम् अद्राक्षीत् = उसने राजा को देखा।

नरपतिसहस्रमध्यवर्त्तिनम् = सहस्रों राजा के बीच विद्यमान।

अशनिभय = वज्र के भय से। पुञ्जित = सिमटे हुए। कुलशैलमध्यगतम् = कुल पर्वतों के बीच में स्थित। कनकशिखरिणम् = सोने के शिखर वाला सुमेरु पर्वत (उपमा)। पहले पर्वतों के पंख थे, इन्द्र जब इन पर क्रुद्ध हुआ तो उसके वज्र के भय से सभी पर्वत सुमेरु के चारों ओर एकत्र हुए।

यह पक्षी एक आश्चर्य की वस्तु है तथा सम्पूर्ण पृथ्वी पर रत्न है ऐसा विचार कर महाराज के चरणों के निकट लेकर आयी हुई मैं आपके दर्शन का सुख अनुभव करना चाहती हूँ। यह सुनकर आप जैसी आज्ञा दें। इतना कहकर वह रुक गयी। कुतूहल से युक्त राजा ने निकट बैठे हुए राजाओं के मुखों को देखकर आज्ञा दी, 'क्या दोष है ? उसे ले आओ।'

(सभा में विराजमान शूद्रक का वर्णन)

इसके बाद राजा के कथन के अनन्तर उठकर प्रतिहारी उस चांडालकन्या को ले आई। सभा में प्रवेश कर उस चाण्डालकन्या ने राजा को देखा। वह

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

रत्नाभरणकिरणजालकान्तरितावयवमिन्द्रायुधसहस्रसञ्छादिताष्ट-दिग्विभागमिव जलधरदिवसम्, अवलम्बितस्थूलमुक्ताकलापस्य कनकशृङ्खलानियमितमणिदण्डिकाचतुष्टयस्य गगनसिन्धुफेन-पटलपाण्डुरस्य नातिमहता दुकूलवितानस्याधस्तादिन्दुकान्त-मणिपर्यङ्किकानिषण्णम्, उद्धूयमान-कनकदण्डचामरकलापम्-

---

अनेकरत्ना० = अनेक रत्नों के आभूषणों की (अनेकानि यानि रत्नाभर-णानि तेषां यानि किरणजालकानि तैः। किरणजालक = किरणों के समूह से। अन्तरितावयवम् = ढँके हुए अंगों वाला, अन्तरिताः अवयवाः यस्य तम्। इन्द्रा युध = इन्द्रधनुष। अष्टदिग्विभागम् = आठों दिशाओं वाले। जलधरदिवसम् = वर्षा के दिन के समान था। राजा की उपमा वर्षा के दिन से दी गई है।

अवलम्बितस्थूलमुक्ताकलापस्य = जिससे बड़े-बड़े मोतियों के दाने लटक रहे हैं। षष्ठी से अन्त होने वाले शब्द दुकूलवितानस्य के विशेषण हैं। कनक-शृंखलानियमित = सोने की जंजीरों से बँधे हुए। मणिदण्डिकाचतुष्टयस्य = मणि के चार डण्डों वाले। गगनसिन्धुफेनपटलपाण्डुरस्य = आकाश गङ्गा के फेन समूह के समान श्वेत। दुकूलवितानस्य अधस्तात् = रेशमी चँदोवे के नीचे। इन्दुकान्तमणिपर्यङ्किकानिषण्णम् = चन्द्रकान्त मणि की चौकी पर बैठे हुए।

उद्धूयमान = हिलाए जा रहे हैं। कनकदण्डचामरकलापम् = सोने की मूँठ वाले चँवरों के समूह। उन्मयूख = ऊपर किरणों वाले। मुखकान्तिनिचय-परा-

---

सहस्रों राजाओं के बीच में बैठा था और वज्र के भय से एकत्र कुलपर्वतों के बीच में स्थित सुमेरु पर्वत जैसा लग रहा था। अनेक रत्नाभूषणों की किरणों के समूह से उसके अंग ढँके थे और वह सहस्रों इन्द्रधनुषों से आच्छादित आठों दिशाओं वाले वर्षाकालीन दिन के समान प्रतीत होता था। वह बड़ी-बड़ी मोतियों के समूह की लटकती हुई झालर वाले, सोने की जंजीरों से मणि के चार डंडों पर बँधे हुए, आकाशगंगा के फेनसमूह के समान धवल वर्ण के, कुछ ही बड़े रेशमी चँदोवे के नीचे चन्द्रकान्तमणि की चौकी पर बैठा था। उस पर सोने की मूठ वाले चँवरों के समूह हिलाये जा रहे थे। वह ऊपर निकलती हुई

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

उन्मयूखमुखकान्तिनिचय-पराभवप्रणते शशिनीव स्फटिकपादपीठे विन्यस्तवामपादम्, इन्द्रनीलमणिकुट्टिमप्रभा-सम्पर्कश्यामायमानैः प्रणतरिपुनिश्वासमलिनीकृतैरिव चरणनखमयूखजालैरुपशोभमानम्, आसन्नोल्लसितपद्मरागकिरण-पाटलीकृतेनाचिरमृदित-मधुकैटभरुधिरारुणेन हरिमिवोरुयुगलेन विराजमानम्, अमृतफेन-धवले गोरोचनालिखितहंसमिथुनसनाथपर्यन्ते चामरपवनप्रनर्त्ति-

---

भवप्रणते = मुख की कान्ति समूह से पराजित होकर गिरे हुए। पादपीठ=पैर रखने का आसन। शशिनि इव=मानो चन्द्रमा पर ही (उत्प्रेक्षा)।

मलिनीकृतैः इव=मलिन बनाये गये के समान। चरणनखमयूखजालैः = चरणों के नखों की किरणों के समूह से श्यामायमानैः=श्याम वर्ण के समान बने हुए (क्यङ् प्रत्यय, क्यङ्तोपमा)। आसनोल्लसित=आसन से निकली। पद्मरागकिरण-पाटलीकृतेन=पद्मराग मणियों से लाल बने हुए। अचिर-मृदित = तत्काल मारे गए। मधु-कैटभरुधिरारुणेन = मधु और कैटभ राक्षस थे जिनको भगवान् विष्णु ने अपनी जाँघ पर रखकर मारा था। हरिम् इव = विष्णु के समान। उसकी उपमा विष्णु से दी गयी है। ऊरुयुगलेन विराज-मानम्=दोनों जाँघों से सुशोभित होने वाले।

अमृतफेनधवले=अमृत के फेन के समान श्वेत। गोरोचनालिखितहंस-मिथुन = गोरोचन से बनाया गया हंस का जोड़ा। पर्यन्त = किनारा।

किरणोंवाली मुख की कान्ति के पुंज से पराजित होकर चरणों में गिरे हुए चन्द्रमा जैसे प्रतीत होने वाले स्फटिक के पादपीठ पर बायाँ पैर रखे हुए था, (इन्द्रनीलमणि के फर्श की प्रभा के सम्पर्क के कारण श्याम वर्ण के दिखायी पड़ने वाले, प्रणाम करने वाले शत्रुओं के उच्छ्वास से सुशोभित था) आसन से निकलती हुई पद्मरागमणि की किरणों से लाल बनी हुई जाँघों से वैसे ही सुशोभित था जैसे तत्काल मारे गये मधु और कैटभ के रुधिर से लाल जाँघों द्वारा विष्णु सुशोभित हुए थे। वह अमृत के फेन के समान धवल रंग के, गोरोचना से रंगे गये हंस के जोड़ों के चित्र से युक्त किनारेवाले और चँवर की

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection. Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS
धवल = स्वेत कैलास शिखरिन = हिमालय
सुरभि = सुगंधित छेद = किरण
 स्थासक = हाथ की मुद्रा

तान्तदेशे दूकूले वसानम्, अतिसुरभिचन्दनानुलेपनधवलितोरः-स्थलम्, उपरिविन्यस्तकुङ्कुमस्थासकम्, अन्तरनिपतितबाला-तपच्छेदमिव कैलासशिखरिणम्, अपरशशिशङ्कया नक्षत्रमालयेव हारलतया कृतमुखपरिवेषम्, अतिचपलराजलक्ष्मीबन्धनिगड-

---

अन्तदेश = आँचल, छोर। दूकूले = दो रेशमी वस्त्र। अतिसुरभि० = अत्यन्त सुगन्धित चन्दन के लेप से उसकी छाती धवल थी। कुंकुमस्थासकम् = लाल रंग के कुंकुम से स्थासक का चिह्न बना था। स्थासक = हाथ की छाप। राजा के छाती की उपमा हिमालय से दी गयी है जिसके भीतर बालातप-च्छेद = बाल आतप (प्रातःकाल के सूर्य की) छेद = किरणें पड़ रही थीं। कैलाशशिखरिणम् = कैलाश पर्वत जिसका शिखर है, अर्थात् हिमालय।

अपरशशिशङ्कया = दूसरे चन्द्रमा की शंका से मानो नक्षत्रों की माला उसके गले में लिपटी हो (उत्प्रेक्षा)। हारलतया=हार की लड़ी से। कृतमुख-परिवेषम् = जिसका मुख घिरा था। परिवेष = घेरना। 'परिवेषस्तु परिधिः' अमरकोष।

अतिचपल०=उसकी बाहों में पहने गए इन्द्रनीलमणि के दो केयूरों का वर्णन किया गया है। अतिचपल = अत्यन्त चंचल। राजलक्ष्मीबन्धनिगड = राजलक्ष्मी के बन्धन की बेड़ी। शंकाम् उपजनयत = शंका उत्पन्न करने वाले। मलयज = चन्दन। भुजङ्गद्वयेन = दो सर्पों द्वारा। वेष्टितबाहुयुगलम् = दोनों भुजाएँ घिरी थीं। 'केयूरमङ्गदं तुल्ये' अमरकोष। भ्रान्तिमान और उत्प्रेक्षा-लङ्कार है।

वायु से फहराते हुए आँचल वाले दो रेशमी वस्त्र धारण किए हुए था। अत्यन्त सुगन्धित चन्दन के लेप से उसका वक्षस्थल धवल था और उसके ऊपर कुंकुम से स्थासक चिह्न अंकित था जिससे वह ऐसे हिमालय के समान लग रहा था जिसके बीच में प्रातःकालीन सूर्य की किरणें पड़ रही हों, उसका मुख हार की लड़ी से घिरा हुआ था मानो नक्षत्रों की माला ने दूसरे चन्द्रमा की शंका से घेर रखा हो। अत्यन्त चंचल राजलक्ष्मी के बन्धन के लिए बेड़ियों की शंका उत्पन्न करने

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

ईषद् - कुछ　　बाहु के आभूषण　　ऊर्णा - भौंहों के बीच में स्थित केश
पुण्डरीक = कमल
कलधौत = सोना　　बाजूबन्ध

शङ्कामुपजनयतेन्द्रनीलमणिकेयूरयुगलेन मलयजरसगन्धलुब्धेन भुजङ्गद्वयेन वेष्टितबाहुयुगलम्, ईषदालम्बिकर्णोत्पलम्, उन्नतघोणम्, उत्फुल्लपुण्डरीकलोचनम्, अमलकलधौतपट्टायतम् अष्टमीचन्द्रशकलाकारम् अशेषभुवनराज्याभिषेकसलिलपूतम् ऊर्णासनाथं ललाटदेशमुद्वहन्तम्, आमोदितमालतीकुसुमशेखरम् उषसि शिखरपर्यस्ततारकापुञ्जमिव पश्चिमाचलम्, आभरणप्रभा-

---

ईषदालम्बि = कुछ लटके हैं। कर्णोत्पल = कानों का आभूषण या कमल। उन्नतघोणम् = ऊँची नाक वाला। उत्फुल्ल = खिले हुए (लुप्तोपमालंकार)। कलधौत = स्वर्ण। आयत = विस्तृत। शकल = खण्ड। ऊर्णा = दोनों भौंहों के बीच में स्थित केश। यह चक्रवर्ती राजा का लक्षण होता है। 'ऊर्णा मेषादिलोम्नि स्यादावर्तस्त्वन्तरा भ्रुवोः' अमर। 'भ्रूद्वयमध्ये मृणालतन्तुसूक्ष्मं शुभ्रा यतमेकं प्रशस्तावर्तं महापुरुष लक्षणमिति।'

आमोदित = सुगन्धित। शेखरम् = शिर पर धारण की जाने वाली माला। शिरोभूषण। शिखरपर्यस्ततारकापुंजम् = जिसके शिखर पर तारों का पुंज बिखरा है। पश्चिमाचल=पश्चिम पर्वत, अस्ताचल। पिशङ्गित=पीले बने हुए।

वाले इन्द्रनीलमणि के दो केयूरों से उसकी भुजाएँ वेष्टित थीं मानों वे चन्दन के गन्ध से आकृष्ट हुए दो सर्प हों। उसके कर्णाभूषण कुछ लटके हुए थे, नासिका ऊँची थी और खिले हुए कमल के समान नेत्र थे।

वह निर्मल स्वर्ण के पट्ट के समान विस्तृत, अष्टमी के चन्द्रमा के आकार का, सम्पूर्ण भुवन के राज्याभिषेक-जल से पवित्र एवं ऊर्णा से युक्त ललाट धारण कर रहा था, वह सुगन्धित मालती फूलों की माला धारण किये हुए था जिससे उषा काल के अस्ताचल के समान प्रतीत होता था, जिसकी चोटी पर तारों के पुंज बिखरे रहते हैं। आभूषण की कान्ति से अंगों के पीले बन जाने से वह शिव-

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

पिशङ्गिताङ्गतया लग्नहरहुताशमिव मकरध्वजम्, आसन्न-वर्त्तिनीभिः सेवार्थमागताभिरिव दिग्वधूभिर्वारविलासिनीभिः परिवृतम्, अमलमणिकुट्टिमसंक्रान्तसकलदेहप्रतिबिम्बतया पतिप्रेम्णा वसुन्धरया हृदयेनेवोह्यमानम्, (अशेषजनभोग्यता-मुपनीतयाप्यसाधारणया राजलक्ष्म्या समालिङ्गितम्, अपरि-

---

आभूषणों की कान्ति से अंगों के पीले होने के कारण। लग्नहरहुताशम् = लगी है शिव के नेत्रों की अग्नि जिसमें। हुताश = अग्नि। मकरध्वज = कामदेव। (उपमालंकार)' पुष्पधन्वारतिपतिर्मकरध्वज आत्मभूः' अमरकोष।

आसन्नवर्त्तिनीभिः = निकट में बैठी हुई। दिग्वधूभिः इव = दिग्वधुओं के समान। वारविलासिनीभिः = वेश्याओं द्वारा (रूपक और उत्प्रेक्षालङ्कार)। अमल० = निर्मल मणि के फर्श पर सम्पूर्ण देह का प्रतिबिम्ब पड़ने के कारण। (यहाँ उत्प्रेक्षा है। उसकी परछाईं पृथ्वी पर पड़ रही थी, मानों पृथ्वी उसे हृदय में धारण किये हुई थी।) उह्यमानम् = धारण किये जाते हुए।

अशेषजन०—यहाँ से कई वर्णन विरोधाभास अलङ्कार हैं, जो श्लेष पर आधृत होता है। विशेषणों के दो अर्थ होंगे। एक अर्थ लेने पर विरोध होता है, दूसरा अर्थ लेने पर विरोध दूर हो जाता है। असाधारण = (१) असामान्य(१) अनुपम, अतुलनीय। विरोधाभासालङ्कार।

नेत्र की अग्नि में जलते हुए कामदेव के समान लग रहा था। निकट में बैठी हुई सेवा के लिए आयी हुई दिग्वधुओं जैसी लगने वाली वेश्याओं से घिरा हुआ था। निर्मल मणि के फर्श पर पड़े हुए सम्पूर्ण देह के प्रतिबिम्बित होने के कारण ऐसा लगता था मानों पतिप्रेम के कारण पृथ्वी उसे हृदय में धारण किए हुई थी। सम्पूर्ण प्रजा द्वारा भोगी जाने पर भी असाधारण (अद्वितीय) राजलक्ष्मी उसका आलिङ्गन किये हुई थी। असंख्य पारिवारिक लोगों के होने पर भी

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

मितपरिवारजनमप्यद्वितीयम्, अनन्तगजतुरगसाधनमपि खड्गमात्रसहायम्, एकदेशस्थितमपि व्याप्तभुवनमण्डलम्, आसने स्थितमपि धनुषि निषण्णम्, उत्सादिताशेषद्विषदिन्धनमपि ज्वलत्प्रतापानलम्, आयतलोचनमपि सूक्ष्मदर्शनम्, महादोषमपि सकलगुणाधिष्ठानम्, कुपतिमपि कलत्रवल्लभम्, अविरतप्रवृत्त-

---

अपरिमितपरिवारजनम् = असंख्य परिवार के लोगों वाला। अद्वितीय = (१) अकेला (२) अनुपम। गज = हाथी। तुरग = घोड़ा। खड्गमात्रसहायम् = खड्गमात्र को सहायक मानने वाला। व्याप्तभुवनमण्डलम् = भुवनमण्डल में व्याप्त। अपने प्रताप और यश से सर्वत्र व्याप्त था। धनुषि निषण्णम् = धनुष पर बैठा हुआ, धनुष पर विश्वास रखने वाला।

उत्सादित = भस्म कर दिया है। द्विषदिन्धन = शत्रु रूपी इंधन (रूपक अलंकार) ज्वलत्प्रतापानलम् = जिनके प्रताप की अग्नि जल रही है (ज्वलन् प्रताप एव अनलः यस्य तम्) आयत = दीर्घ। सूक्ष्मदर्शनम् (१) छोटे नेत्र वाला, सूक्ष्मे अविशाले नेत्रे यस्य तम् (२) सूक्ष्मज्ञान से सम्पन्न, सूक्ष्मेऽध्यात्मविषये दर्शनं ज्ञानं यस्य तम्। महादोषम् = (१) महान् दोष वाला, महान्तः अनेके दोषाः यस्मिन् तम्। (२) बड़ी भुजा वाला, दोष = भुजा, महान्तौ दीर्घौ दोषौ यस्य तम्। कुपति = (१) दुष्ट पति (२) पृथ्वी का पति। कु का अर्थ पृथ्वी भी है। 'गोत्रा कुः पृथिवी पृथ्वी' अमर०। कलत्र = स्त्री, पत्नी।

अद्वितीय (अकेला अर्थात् अनुपम) था। असंख्य हाथियों और घोड़ों के साधन से युक्त होने पर भी तलवार को अपना सहायक बनाए हुए था। एक स्थान पर स्थित होने पर भी भुवनमण्डल में (प्रताप से) व्याप्त था। आसन पर स्थित होने पर भी धनुष पर स्थित था। सम्पूर्ण शत्रुरूपी इंधन के जला देने पर भी उसकी प्रतापाग्नि जल रही थी। दीर्घ नेत्रों वाला होने पर भी सूक्ष्मदर्शी था। महादोष (बड़ी भुजा वाला) होने पर भी सभी गुणों से युक्त था। कुपति (अधम पति; पृथ्वी का पति) होने पर भी अपनी पत्नियों को प्रिय था। निरन्तर दान में प्रवृत्त होने पर भी मदरहित था। अत्यन्त शुद्ध स्वभाव वाला

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

दानमप्यमदम्, अत्यन्तशुद्धस्वभावमपि कृष्णचरितम्, अकरमपि हस्तस्थितसकलभुवनतलं राजानमद्राक्षीत् ।

[आलोक्य च सा दूरस्थितैव प्रचलितरत्नवलयेन रक्त-कुवलयदलकोमलेन पाणिना जर्जरितमुखभागां वेणुलतामादाय नरपतिप्रतिबोधनार्थं सकृत् सभाकुट्टिमाजघान, येन सकलमेव

अविरतप्रवृत्तदानम् = (१) निरन्तर दान जल से युक्त, अनवरतं प्रवृत्तं दानं मदजलं यस्य तम् । (२) निरन्तर दान दक्षिणा देने में प्रवृत्त, अविरतं प्रवृत्तं दीयमानं दानं याचकेभ्यः येन तम् । अमदम् = मदरहित, गर्वहीन । कृष्णचरितम् = (१) बुरे चरित्र वाला, कृष्णं मलिनं चरितमाचारो यस्य तम् । (२) कृष्ण के समान आचरण वाला, कृष्णस्य चरितमिव चरितं यस्य तम् । अकर=(१) बिना हाथ के (२) बिना कर (टैक्स) के, तात्पर्य यह कि वह प्रजा से कर नहीं लेता था । हस्तस्थितसकलभुवनतलम् = जिनके हाथ पर सम्पूर्ण भुवन स्थित है, अर्थात् जिसके वश में है ।

दूरस्थितैव = दूरस्थिता एव = दूर पर खड़ी होकर ही । प्रचलितरत्नवलयेन (पाणिना का विशेषण) = जिसके रत्न के वलय अर्थात् कंकण हिल उठे । रक्तकुवलयदलकोमलेन = लाल कमल की पंखुड़ी के समान कोमल (लुप्तोपमा अलंकार) । जर्जरितमुखभागां वेणुलताम् = फटे हुए अग्र भाग वाले बाँस के डण्डे को । आदाय = लेकर । नरपतिप्रतिबोधनार्थम् = राजा को बताने के लिए,

---

होने पर भी कृष्णचरित (कुत्सित चरित, श्रीकृष्ण का चरित) वाला था । अकर (बिना हाथ, बिना कर) के होने पर भी हाथ पर सम्पूर्ण भुवन को स्थित देखता था ।

और (राजा को) देखकर उसने हिलते हुए रत्नों के कंकण वाले लाल कमल की पंखुड़ी के समान कोमल हाथ से फटे हुए अग्रभाग वाला बाँस का डण्डा लेकर राजा को अपनी ओर उन्मुख करने के लिए एक बार सभा भवन

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by IKS
Jangamwadi Math Varanasi
Acc. No. ....5082........

तद् राजकम् एकपथे वनकरियूथमिव तालशब्देन तेन वेणुलता-ध्वनिना युगपदावलितवदनमवनिपालमुखादाकृष्य चक्षुस्तदभिमुख-मासीत् ।

अवनिपतिस्तु 'दूरादालोकय, इत्यभिधाय प्रतीहार्या निर्दिश्यमानां तां वयःपरिणामशुभ्रशिरसा रक्तराजीव-नेत्रापाङ्गे-

---

राजा का ध्यान आकृष्ट करने के लिए। सकृत् = एक बार। सभाकुट्टिमम् आजघान=सभाभवन के फर्श को पीटा।

राजकम्=राजाओं का समूह, राज्ञां समूहः। एकपथे=एक मार्ग पर। वन-करियूथम्—जंगली हाथियों का समूह। तालशब्देन = ताल के वृक्ष के शब्द से। युगपद्=एक साथ। आवलितवदनम् = पंक्तिबद्ध मुख वाला राजसमूह। अव-निपालमुखात्=राजा शूद्रक के मुख से। चक्षुः आकृष्य = नेत्र हटाकर। तद-भिमुखम् आसीत्=उसकी ओर अभिमुख हो गया, देखने लगा।

'दूरात् आलोकय'=दूर से देखो ऐसा प्रतिहारी निर्देश दे रही थी या दूर से जय शब्द कहो। ताम्=उस चाण्डालकन्या को। यह कर्म है, बीच में इसी के विशेषण हैं। अन्त में 'अनिमिषलोचनो ददर्श' [अपलक नेत्र से देखा] के साथ इसका सम्बन्ध है। 'अवनिपतिस्तु ताम् अनिमिषलोचनो ददर्श' यही मुख्य वाक्य है। बीच में चाण्डालकन्या का साङ्गोपाङ्गवर्णन है।

के फर्श पर आघात किया, जिससे राजाओं का वह सम्पूर्ण समूह जैसे ताल का शब्द सुनकर वन के हाथियों का समूह एक ही मार्ग पर चल पड़ता है वैसे ही उस बाँस के डण्डे की ध्वनि से एक साथ पंक्तिबद्ध मुखों से राजा के मुख से नेत्र हटाकर उसकी ओर घूम गया।

(चाण्डाल कन्या का वर्णन)

राजा ने 'दूर से देखो' ऐसा कहकर प्रतिहारी द्वारा आदेश दी जाती हुई उसे अपलक नेत्रों से देखा। अवस्था बढ़ने से श्वेत सिर वाला, लालरंग के नेत्रों

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

नानवरतकृतव्यायामतया यौवनापगमेऽप्यशिथिलशरीरसन्धिना सत्यपि मातङ्गत्वे नातिनृशंसाकृतिना अनुगृहीतार्यवेशेन शुभ्रवाससा पुरुषेणाधिष्ठितपुरोभागाम्, आकुलाकुलकाकपक्षधारिणा कनकशलाकानिर्मितमप्यन्तर्गतशुकप्रभाश्यामायमानं मरकतमयमिव पञ्जरमुद्वहता चाण्डालदारकेणानुगम्यमानाम्, असुरगृही-

---

वयः परिणामशुभ्रशिरसा = अवस्था अधिक होने से श्वेत सिर वाला। चाण्डालकन्या के आगे एक वृद्ध चाण्डाल था। उसी का पहले वर्णन किया गया है। रक्तराजीव=लालकमल। नेत्रापाङ्ग=नेत्र के कोने। अनवरतकृतव्यायाम तया = निरन्तर किये गये व्यायाम के कारण। अशिथिलशरीरसन्धिना= अशिथिल शरीर की सन्धिवाला, गठित हुए शरीर के जोड़ों वाला। अपगम= बीतना। नृशंसाकृतिना = क्रूर आकृति वाला। मातङ्गत्व=चाण्डाल जाति। आर्यवेश=सभ्य या श्रेष्ठ लोगों की वेषभूषा। (अनुगृहीतः आर्यवेशः यस्य सः)। शुभ्रवाससा=श्वेत वस्त्र वाला। अधिष्ठितपुरोभागाम् = अधिष्ठित है अग्रभाग जिसका, जिसके आगे चल रहा था। (अधिष्ठितः पुरोभागः यस्याः सा ताम्)

आकुलाकुल = अस्तव्यस्त। काकपक्ष = कौए के पंख या बालों की लटें। 'काकपक्षः शिखण्डकः' अमरः। 'बालानां शिखा प्रोक्ता काकपक्षःशिखण्डकः' हलायुध। शलाका=सींक, छड़। श्यामायमानम्=श्याम वर्ण का होता हुआ! मरकतमयम् इव = मरकतमणि से बना हुआ-सा। चाण्डालदारकेण=चाण्डाल बालक द्वारा। अनुगम्यमानाम् = अनुसरण की जाती हुई अर्थात् उसके पीछे आ रहा था।

के कोने से युक्त, निरन्तर व्यायाम करने के कारण यौवन बीतने पर भी जिसके शरीर के जोड़ शिथिल नहीं थे, चाण्डाल होने पर भी जिसकी आकृति क्रूर नहीं थी ऐसा आर्यों का वेश ग्रहण करने वाला शुभ्र वस्त्र वाला पुरुष उसके आगे था। अस्तव्यस्त कौए का पंख धारण करने वाला, सोने की शलाका से निर्मित होने पर भी भीतर बैठे हुए शुक की कान्ति से मरकतमणि का बना हुआ-सा प्रतीत होने वाला पिंजरा लिये हुए चाण्डाल बालक उसके पीछे-पीछे चल रहा था। अपने श्याम वर्ण के कारण वह राक्षसों द्वारा ग्रहण किये गये अमृत

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

कापत्न Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS गोरोचना

तामृतापहरणकृतकपटपटुविलासिनीवेशस्य श्यामतया भगवतो हरेरिवानुकुर्वंतीम्, सञ्चारिणीमिवेन्द्रनीलमणि - पुत्रिकाम् आगुल्फावलम्बिना नीलकञ्चुकेनाच्छन्नशरीराम्, उपरि रक्तांशुकविरचितावगुण्ठनां, नीलोत्पलस्थलीमिव निपतितसन्ध्यातपाम्, एककर्णावसक्तदन्तपत्रप्रभाधवलितकपोलमण्डलाम्, उद्यदिन्दु-

---

कपटपटु = कपट में चतुर, सुन्दर। विलासिनी = रमणी। यह विष्णु के मोहनी रूप का अनुकरण करती थी। राक्षसों से अमृत छीनने के लिए विष्णु ने मोहनी रूप धारण किया था। हरेः=विष्णु का। इन्द्रनीलमणिपुत्रिकाम्=इन्द्र नीलमणि से वनी पुतली, नारीमूर्ति (उत्प्रेक्षा)। आगुल्फ=घुटनों तक। नीलकंचुकेन = नीले कुर्ते से। 'तद्ग्रन्थी पुटिके गुल्फौ = अमर। रक्तांशुक = लाल रेशमी वस्त्र से। अवगुण्ठन = घूँघट, पर्दा। संध्यातप = संध्या की धूप। नीले कुर्ते पर लाल दुपट्टे का घूँघट ऐसा लगता था मानों नीले कमलों के समूह में सन्ध्या की धूप पड़ रही हो। (उपमा) तथा काव्यलिङ्ग।

एककर्णावसक्त=एक कान में लगे। दन्तपत्र=हाथी दाँत का कर्णभूषण। उद्यदिन्दु = निकलते चन्द्रमा की किरणों से। रात्रि का मुख पूर्व दिशा से तात्पर्य है या प्रदोषकाल से। विभावरी = रात्रि। (उपमा)

को छीनने के लिये छलपूर्वक सुन्दर रमणी का रूप धारण करने वाले भगवान् विष्णु का अनुकरण कर रही थी, चलती हुई इन्द्रनीलमणि की पुतली के समान थी, घुटने तक लटकने वाले कुर्त्ते से उसका शरीर ढँका हुआ था और ऊपर लाल रेशमी वस्त्र का अवगुण्ठन बनाये हुए थी जिससे मानो नीले कमल के बन पर सन्ध्या की धूप पड़ रही हो। एक कान में पहने गये हाथी दाँत के आभूषण से कपोलमण्डल धवल हो रहा था, अतः वह उगते हुए चन्द्रमा की किरणों से धवलित पूर्व दिशा वाली रात्रि के समान थी। कुछ कपिल वर्ण के गोरोचन से

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

किरणच्छुरितमुखीमिव विभावरीम्, आकपिल-गोरोचनारचित-तिलकतृतीयलोचनाम् ईशानुचरितकिरातवेशामिव भवानीम्, उरःस्थलनिवासंसंक्रान्तनारायणदेहप्रभाश्यामलितामिव श्रियम्, कुपितहरहुताशनदह्यमानमदनधूमम्लिनीकृतामिव रतिम्, उन्मद-हलिहलाकर्षणभयपलायितामिव कालिन्दीम्, अतिबहल-पिण्डालक्तकरसरागपल्लवितपादपङ्कजाम्, अचिरमृदितमहिषा-सुररुधिररक्तचरणामिव कात्यायनीम्, आलोहिताङ्गुलिप्रभा-पाट-

---

उरःस्थलनिवास = वक्षस्थल पर निवास से । संक्रान्त = पड़े हुए । नारा-यण-देह-प्रभाश्यामलिताम् = विष्णु के शरीर की कान्ति से श्याम बनी हुई । श्री = लक्ष्मी । हरहुताशन = शिव के नेत्रों की अग्नि । मलिनीकृता = मलिन बनाई गई । रति = कामदेव की पत्नी । उन्मद = मतवाले । हलि = बलराम । कालिन्दी = यमुना । कलिन्द पर्वत की पुत्री कालिन्दी ।

अतिबहल = अत्यन्त अधिक । उसकी उपमा दुर्गा से दी गई है । पल्लवित= पल्लव से युक्त । अचिरमृदित = तत्काल मारे गये । महिषासुर का दुर्गा ने वध किया था । कात्यायनी = दुर्गा । आलोहित = कुछ लाल । पाटलित = लाल बने हुए । मानों वह अत्यन्त कठोर मणि के फर्श का स्पर्श न सहने के कारण । पल्लवभङ्गान् = पल्लव के टुकड़े । निधाय = रखकर । (काव्यलिङ्ग) (उत्प्रेक्षा-लंकार) ।

तिलकरूपी तीसरा नेत्र बनाने वाली, शिव के अनुकरण से किराती का वेश धारण करने वाली पार्वती के समान प्रतीत होती थी । वह वक्षस्थल पर निवास करने से विष्णु के शरीर की कान्ति पड़ने के कारण श्याम बनी हुई लक्ष्मी के समान प्रतीत होती थी । क्रुद्ध शंकर के नेत्र की अग्नि में जलते हुए कामदेव के धुएँ से मलिन बनी हुई रति के समान थी, मतवाले बलराम के हल से खींचे जाने के कारण भय से भागी हुई यमुना के समान थी । अत्यन्त अधिक पिण्ड बने आलता के रस की लालिमा से पल्लव के समान उसके चरण-कमल लाल होने के कारण वह तत्काल मारे गये महिषासुर के रक्त से रंगे हुए लाल चरणों वाली दुर्गा के समान प्रतीत होती थी ।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

लितनखमयूखाम् अतिकठिनमणिकुट्टिमस्पर्शमसहमानां क्षितितले पल्लवभङ्गानिव निधाय सञ्चरन्तीम्, आपिञ्जरेणोत्सर्पिणा नूपुरमणीनां प्रभाजालेन रञ्जितशरीरतया पावकेनेव भगवता रूपैकपक्षपातिना प्रजापतिमप्रमाणीकुर्वता जातिसंशोधनार्थमालिङ्गितदेहाम्, अनङ्गवारणशिरोनक्षत्रमालायमानेन रोमराजिल-

---

आपिञ्जरेण = कुछ कुछ पीले रंग के। उनके नुपूर की मणियों का कान्तिसमूह ऊपर निकल रहा था मानों अग्नि उसे अपनी लपटों से शुद्ध कर रहा था। उत्सर्पिणा = ऊपर उठने वाले। भगवता = भगवान्। पावकेन इव = मानो अग्नि द्वारा। रूपैकपक्षपातिना = एक मात्र रूप का पक्षपात रखने वाले, केवल रूप बनाने वाले। प्रजापतिम् अप्रमाणीकुर्वता = प्रजापति को अप्रमाण बनाने वाले। जातिसंशोधनार्थम् = जाति शुद्ध करने के लिए। आलिङ्गितदेहाम् = जिसके देह का आलिंगन किया गया था। आलिङ्गितः देहः यस्याः सा, ताम्।

अनङ्गवारण = कामदेवरूपी हाथी। उसकी करधनी का वर्णन है कि करधनी कटि के पीछे और आगे की ओर कैसी लग रही थी। पीछे वह ऐसी दिखायी पड़ती थी जैसे कामदेवरूपी हाथी या कामदेव के मस्तक पर नक्षत्रों की माला हो, व्यङ्गतोपमा। आगे ऐसी थी मानों उसकी नाभि से ऊपर उठती रोमावली रूपी लता का आलवाल हो। रोमराजि = रोमावली। अनङ्गः एव वारणः तस्य शिरसि या नक्षत्रमाला। 'सैव नक्षत्रमाला स्यात् सप्तविंशतिमौक्तिकैः'—अमर०।

कुछ लाल रंग की अंगुलियों की कान्ति से नखों की किरणों के लाल होने से ऐसा प्रतीत होता था मानों वह कठोर मणि के फर्श का स्पर्श न सह सकने के कारण पृथ्वी पर पल्लव के टुकड़े रखकर चल रही थी, कुछ पीले रंग के ऊपर निकलने वाले नूपुरमणियों के कान्तिसमूह से शरीर के रँगे होने के कारण ऐसा प्रतीत होता था मानों एकमात्र रूप के पक्षपाती अग्नि देवता ने प्रजापति की रचना को अप्रमाण सिद्ध करते हुए उसकी जाति का संशोधन करने के लिए उसके शरीर का आलिंगन कर रखा था। कामदेवरूपी हाथी के मस्तक पर

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

तालवालकेन मेखलादाम्ना परिगतजघनस्थलाम्, अतिस्थूल-मुक्ताफलघटितेन शुचिना हारेण गङ्गास्रोतसेव कालिन्दीशङ्कया कृतकण्ठग्रहाम्, शरदिव विकसितपुण्डरीकलोचनाम्, प्रावृषमिव घनकेशजालाम् मलयमेखलामिव चन्दनपल्लवावतंसाम् नक्षत्र-

---

घटितेन = बनाये गये। शुचिना = श्वेत। गंगास्रोतसा इव = मानों गंगा की धारा से कालिन्दीशङ्कया = यमुना की शंका से। विकसितपुण्डरीकलोच-नाम् = यहाँ से कई विशेषणों के दो-दो अर्थ होंगे, क्योंकि श्लेषानुप्राणित उपमा है। शरद् ऋतु खिले हुए कमलों रूपी नेत्र वाली होती है (विकसितानि पुण्डरी-काणि लोचनानि इव यस्याः ताम्)। उस चाण्डालकन्या के नेत्र खिले हुए कमलों के समान थे। विकसिते पुण्डरीके इव लोचने यस्याः सा, ताम्। (श्लेषोपमा)

प्रावृष् = वर्षाऋतु। घनकेशजालाम् = इसके भी दो अर्थ होगें। मेघ ही वर्षा ऋतु के केशजाल होते हैं। घन = मेघ। घनाः केशजालानि यस्याः सा चाण्डालकन्या के केश घने थे। घनाः ये केशाः घनकेशाः, तेषां जालानि यस्याः सा, ताम्। मलयमेखला=मलय पर्वत की मेखला अर्थात् मध्यभाग। चन्दन-पल्लवावतंसा = (१) चन्दन के पल्लवों से सुशोभित (२) चन्दन के पल्लव का आभूषण बनाये हुई। चन्दन पल्लवानां चन्दनकिसलयानां अवतंसः यस्याः ताम्। चन्दनपल्लवा एव अवतंसो यस्यास्ताम्।

नक्षत्रों की माला जैसी लगने वाली रोमावलीरूपी लता के लिए आलवाल जैसी प्रतीत होने वालीं करधनी की लड़ी से उसका कटिप्रदेश घिरा हुआ था। बड़ी मोतियों के दाने से बनाये गये शुभ्र हार से उसका कण्ठ वैसे ही घिरा था जैसे मानों गंगा की धारा उसे यमुना समझकर गले से लिपट रही हो। जैसे शरद् ऋतु खिले हुए कमलरूपी नेत्रों वाली होती है वैसे ही वह खिले हुए कमल के समान नेत्रों वाली थी। जैसे वर्षा ऋतु मेघरूपी केशजाल धारण करती है वैसे वह घने केशजाल वाली थी। जैसे मलयपर्वत का मध्यभाग चन्दन पल्लवों का आभूपण धारण करता है, वैसे वह (कानों में) चन्दनपल्लव का आभूपण धारण किये हुए थी। जैसे नक्षत्रों की माला, चित्रा, श्रवण, आदि

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

मालामिव चित्रश्रवणाभरणभूषिताम्, श्रियमिव हस्तस्थित-कमलशोभाम्, मूर्च्छामिव मनोहारिणीम्, अरण्यभूमिमिव अक्षतरूपसम्पन्नाम्, दिव्ययोषितामिवाकुलीनाम्, निद्रामिव लोचनग्राहिणीम्, अरण्यकमलिनीव मातङ्गकुलदूषिताम्,

---

चित्रश्रवणाभरणभूषिता = (१) चित्रा, श्रवण, भरणी नक्षत्रों के नाम हैं, इसमें सुशोभित। (२) विविध कर्णभूषणों से भूषित। चित्र-श्रवण आभरण-भूषिता। हस्तस्थित-कमलशोभाम् = (१) जिसके हाथ में कमल की शोभा है—लक्ष्मी के लिए (२) हाथ में कमल जैसी शोभा है। चाण्डालकन्या के लिए। मनोहारिणी—(१) चेतना समाप्त करने वाली (२) मन को आकृष्ट करनेवाली। अक्षतरूपसम्पन्नाम् में सभंग श्लेष है। अक्ष+तरु+उपसम्पन्नाम् = अक्ष नाम के वृक्ष से सम्पन्न। अक्षत+रूप+सम्पन्नाम् = अक्षत अर्थात् बिना भोगे गये रूप से युक्त थी। दिव्ययोष्ित् = देवलोक की स्त्री। अकुलीना=(१)अ+कु+लीना=पृथ्वो पर न उतरने वाली (२) अ+कुलीना=कुलरहित।

लोचनग्राहिणी=(१)नेत्र बन्द करने वाली (२) नेत्र आकृष्ट करने वाली। अरण्यकमलिनी=वन में उत्पन्न कमलिनी। मातङ्ग =(१) हाथी (२) चाण्डाल।

आलेख्यगता = चित्र में अंकित स्त्री। दर्शनमात्रफला = केवल दर्शन ही जिसका नक्षत्रों से भूषित होती है वैसे ही वह विविध कर्णाभूषणों से भूषित थी। जैसे लक्ष्मी के हाथ में कमल सुशोभित होता है वैसे ही उसके हाथ में कमलों जैसी सुन्दरता थी। जिस प्रकार मूर्च्छा मन की चेतना का हरण कर लेती है वैसे ही वह मन को आकृष्ट करती थी। जैसे वन की भूमि अक्षतरु से सम्पन्न होती है वैसे ही वह अक्षत रूप से सम्पन्न थी। जिस प्रकार देवलोक की स्त्रियाँ अकुलीना (अर्थात् पृथ्वी पर नहीं उतरने वाली) होती हैं वैसे ही वह अकुलीना (कुलहीना) थी। जैसे निद्रा नेत्रों को ग्रहण कर लेती है वैसे ही वह नेत्रों को अपनी ओर खींच लेती थी। जैसे वन में उत्पन्न कमलिनी मातंग (हाथियों में) कुल से दूषित होती है वैसे वह मातंग (=चाण्डाल) कुल से दूषित थी। अमूर्त्त स्त्री के समान उसका

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

अमूर्त्तामिव स्पर्शवर्जिताम्, आलेख्यगतामिव दर्शनमात्रफलाम्, मधुमासकुसुमसमृद्धिमिव अजातिम्, अनङ्गकुसुमचापलेखामिव मुष्टिग्राह्यमध्याम्, यक्षाधिपलक्ष्मीमिवालकोद्भासिनीम्, अचिरोपरूढयौवनाम्, अतिशयरूपाकृतिम् अनिमिषलोचनो ददर्श ।

फल हो, जिसके साथ सम्बन्ध न किया जा सके । मधुमास = वसन्त । अजाति= (१) जाति अर्थात् चमेली के पुष्प बिना (२) जाति हीना, बिना जाति के। ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यस्त्रयो वर्णा द्विजातयः । चतुर्थः एकजातिस्तु शूद्रो नास्ति तु पञ्चमः ।'

अनङ्ग = कामदेव । कुसुमचाप = फूलों का धनुष । लेखा = डंडा । मुष्टिग्राह्य = मुष्टि में पकड़ने योग्य । मध्य = [१] बीच का भाग [२] कटि । यक्षाधिप = कुबेर । अलकोद्भासिनी = [१] अलका + उद्भासिनी = अलका नगरी में सुशोभित, अलकायाम् उद्भासिनी . [२] अलक + उद्भासिनी = केशों से सुशोभित, अलकैः उद्भासिनी । अचिरोपरूढयौवना = शीघ्र जिसको युवावस्था आयी हो । अनिमिष = बिना पलक गिराये, अपलक ।

स्पर्श वर्जित था । चित्रांकित नारी रूप के समान केवल दर्शन ही फल था। वसन्त के पुष्पोंकी समृद्धि में जैसे जाति पुष्प नहीं होता वैसे ही वह अजाति थी। कामदेव के धनुष के मध्य भाग के समान उसकी कटि मुष्टि में पकड़ने योग्य थी । यक्षों के स्वामी कुबेर की राजलक्ष्मी जैसे अलका में सुशोभित होती है वैसे ही वह अलकों (अर्थात् केशों) से सुशोभित थी । उसने अभी युवावस्था में प्रवेश किया था तथा वह अतिशय सुन्दर रूप वाली थी ।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

दृष्ट्वा च तां समुपजातविस्मयस्याभून्मनसि महीपतेः—"अहो ! विधातुरस्थाने रूपनिष्पादनप्रयत्नः । तथाहि, यदि नामेयमात्मरूपोपहसिताशेषरूपसम्पदुत्पादिता, किमर्थमपगत-स्पर्शसम्भोगसुखे कृतं कुले जन्म । मन्ये च 'मातङ्गजातिस्पर्श-दोषभयादस्पृशतेयमुत्पादिता प्रजापतिना, अन्यथा कथमियम-क्लिष्टता लावण्यस्य । न हि करतलस्पर्शक्लेशितानामवयवाना-मीदृशी भवति कान्तिः । सर्वथा धिग्विधातारं असदृशसंयोग-

---

समुपजातविस्मयस्य = जिसमें विस्मय उत्पन्न है, चकित । महीपतेः=राजा के । मनसि अभूत्—मन में विचार आया । विधातुः = विधाता का, षष्ठी एकवचन । रूपनिष्पादनप्रयत्नः = रूप बनाने का प्रयत्न । अस्थाने = अनुचित स्थान पर । आत्मरूपोपहसिताशेषरूपसम्पद्=अपने रूप से उपहास कर दिया है सम्पूर्ण रूप सम्पत्ति का जिसने । सम्पूर्ण सौन्दर्य समृद्धि की हँसी उड़ाने वाली ।

अपगत-स्पर्श-संभोगसुखैः=जिसमें स्पर्श और संभोग का सुख नहीं है । मातङ्गजातिस्पर्शदोषभयात् = चाण्डाल जाति के स्पर्श के दोष के भय से । अक्लिष्टता = निर्दोषिता । लावण्यस्य = सौन्दर्य की । करतलस्पर्शक्लेशिता-नाम्=करतल के स्पर्श से क्लेशित, हथेली के स्पर्श से मलिन । अवयव=अंग । धिक् विधातारम्=विधाता को धिक्कार है । असदृशसंयोगकारिणम्=असमान ।

और उसे देखकर विस्मित राजा के मन में यह विचार आया—अहो ! विधाता ने अनुचित स्थान पर रूप बनाने का कैसा प्रयत्न किया है ! क्योंकि यदि अपने रूप से सम्पूर्ण रूपसम्पत्तियों का उपहास करने वाली यह कन्या उत्पन्न भी की गयी तो उसने क्यों स्पर्श और संभोग के सुख से वर्जित कुल में जन्म दिया ? मैं तो ऐसा समझता हूँ कि चाण्डाल जाति के स्पर्शदोष के भय से बिना छुए ही प्रजापति ने इसे उत्पन्न किया, अन्यथा इस प्रकार की सौन्दर्य की निर्दोषिता कहाँ से आती, क्योंकि हथेली के स्पर्श से मलिन बने हुए अंगों की ऐसी शोभा नहीं होती । सर्वथा विधाता को धिक्कार है, जिसने असमान वस्तुओं

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

कारिणम्। अतिमनोहराकृतिरपि क्रूरजातितया येनेयमसुरश्रीरिव सततनिन्दितसुरता रमणीयाऽप्युद्वेजयति' इति।

एवमादि चिन्तयन्तमेव राजानमीषदवगलितकर्णपल्लवावतंसा प्रगल्भवनितेव कन्यका प्रणनाम। कृतप्रणामायाञ्च तस्यां मणिकुट्टिमोपविष्टायाम्, स पुरुषस्तं विहङ्गमादाय पञ्जरगतमेव किञ्चिदुपसृत्य राज्ञे न्यवेदयदब्रवीच्च 'देव, विदितसकल-

---

का संयोग करने वाले। क्रूरजातितया = क्रूर जाति का होने के कारण। असुरश्रीः=राक्षसों की राजलक्ष्मी। निन्दितसुरता = इसमें श्लेष है। (१) निन्दित है सुरत अर्थात् देवत्व जिसके द्वारा (निन्दिता सुरता यया सा) (२) निन्दित सुरत अर्थात् संभोग वाली। (निन्दितः सुरतः यस्याः सा) उद्वेजयति= उद्वेग उत्पन्न कर रही है। (पूर्णोपमा)।

एवम् आदि=इस प्रकार से। ईषदवगलितकर्णपल्लवावतंसा=जिसके कानों पर पहने गये पल्लवरूपी आभूषण कुछ झुक गये थे। प्रगल्भवनिता=ढीठ स्त्री, लज्जाहीना धृष्ट नायिका। मणिकुट्टिमोपविष्टायाम्=मणि के फर्श पर बैठ जाने पर। किञ्चित् उपसृत्य=कुछ आगे बढ़कर।

विदितसकलशास्त्रार्थः=सभी शास्त्रों का अर्थ जाननेवाला। विदितः सकलशास्त्राणाम् अर्थः येन सः)। कथालाप = कथा+आलाप = कथा कहने में

का संयोग कराया है। जिससे अत्यन्त मनोहर रूप वाली होने पर भी क्रूर जाति का होने के कारण यह, जिसका संभोग सदैव उसी प्रकार निन्दित है जैसे राक्षसों की लक्ष्मी निरन्तर देवों की निन्दा करती है, सुन्दर होने पर भी उद्वेग उत्पन्न करती है।

राजा के इस प्रकार की बातें सोचते रहने पर ही कुछ-कुछ झुके हुए कर्णपल्लवाभूषण वाली उस कन्या ने प्रगल्भा स्त्री के समान प्रणाम किया। उसके प्रणाम करके मणि के फर्श पर बैठ जाने के बाद उस पुरुष ने पिंजरे में ही रखे हुए उस पक्षी को लेकर कुछ आगे बढ़कर राजा को अर्पित किया और बोला— महाराज, सभी शास्त्रों का अर्थ जानने वाला, राजनीति के व्यवहार में कुशल,

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

शास्त्रार्थः, राजनीतिप्रयोगकुशलः, पुराणेतिहासकथालापनिपुणः, वेदिता गीतश्रुतीनाम्, काव्यनाटकाख्यानकप्रभृतीनामपरिमितानां सुभाषितानामध्येता स्वयञ्च कर्त्ता, परिहासालापपेशलः, वीणावेणुमुरजप्रभृतीनां वाद्यविशेषणामसमः श्रोता, नृत्यप्रयोगदर्शननिपुणः, चित्रकर्मणि प्रवीणः, द्यूतव्यापारे प्रगल्भः, प्रणयकलहकुपितकामिनीप्रसादनोपायचतुरः, गजतुरगपुरुषस्त्रीलक्षणाभिज्ञः, सकलभूतलरत्नभूतोऽयं वैशम्पायनो नाम

वेदिता=ज्ञाता। गीतश्रुति=गीत की श्रुति अर्थात् राग। श्रुति स्वरों के समूह को कहते हैं। श्रुतियों की संख्या २२ होती है। अध्येता=अध्ययन करने वाला। कर्त्ता = रचना करने वाला। परिहासालापपेशलः = परिहास का वार्त्तालाप करने में चतुर। पेशल=चतुर।

वीणावेणुमुरज० = वीणा, वंशी, मृदङ्ग। ये तीनों तीन प्रकार के वाद्य यन्त्र है। असमः = अद्वितीय। नृत्यप्रयोगदर्शननिपुणः=नृत्य का प्रयोग देखने में चतुर। द्यूतव्यापार=जुआ खेलना। प्रगल्भः=प्रतिभाशाली। प्रणयकलह= प्रेमकलह, रूठना। सकलभूतलरत्नभूतः = सम्पूर्ण पृथ्वी पर रत्न के समान। भाजनम्=पात्र, स्थान। इति कृत्वा=ऐसा विचार कर। अस्मत्स्वामिदुहिता = हमारे स्वामी की पुत्री। आत्मीयः क्रियताम् = अपना बनाइये, स्वीकार कीजिए। अपसार=चला गया। अप+√सृ+लिट् लकार।

पुराण, इतिहास की कथाएँ कहने में निपुण, गीतों के स्वरसमूहों का जानकार, काव्य, नाटक, आख्यानक आदि असीम सुभाषितों का अध्येता तथा स्वयं रचना करने वाला, परिहास की बातें कहने में चतुर, वीणा, वंशी और मृदंग आदि विशिष्ट वाजों का अद्वितीय श्रोता, नृत्य का प्रयोग देखने में निपुण, चित्ररचना में प्रवीण, द्यूतक्रीडा में प्रगल्भ, प्रेमकलह में रूठी हुई नायिका को प्रसन्न करने में चतुर, हाथी, घोड़े, पुरुष और स्त्री के लक्षणों का ज्ञाता, सम्पूर्ण पृथ्वी पर रत्न के समान यह वैशम्पायन नाम का शुक है। जैसे सभी रत्नों का स्थान समुद्र

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

शुकः सर्वरत्नानाञ्च उदधिरिव देवो भाजनमिति कृत्वेनमादायास्मत्स्वामिदुहिता देवपादमूलमायाता, तदयमात्मीयः क्रियताम्' इत्युक्त्वा नरपतेः पुरो निधाय पञ्जरमपससार ।

[अपसृते च तस्मिन् स विहङ्गराजो राजाभिमुखो भूत्वा समुन्नमय्य दक्षिणं चरणमतिस्पष्टवर्ण-स्वरसंस्कारया गिरा कृतजयशब्दो राजानमुद्दिश्यार्यामिमां पपाठ--

---

अन्यद् भावाश्रयं नृत्यं नृत्तं ताललयाश्रितम्' । दशरूपक । नृत्यस्य प्रयोगः नृत्यप्रयोगः । सकलं यद्भूतलं सकलभूतलम्, तस्मिन् रत्नभूतः सारभूतः ।

तस्मिन् अपसृते = उसके दूर चले जाने पर । विहङ्गराजा = पक्षियों का राजा, पक्षियों में श्रेष्ठ शुक। राजाभिमुखः भूत्वा = राजा की ओर मुख करके। समुन्नमय्य दक्षिणं चरणम् = दाहिना पैर उठाकर । अतिस्पष्टवर्णस्वरसंस्कारया= अत्यन्त स्पष्ट वर्णों और स्वरों के संस्कार वाली । संस्कार=प्रयोग । गिरा= वाणी से । कृतजयशब्दः='जय' उच्चारण कर । आर्या एक छन्द का नाम है ।

है वैसे ही सभी रत्नों के पात्र आप हैं ऐसा विचार कर इसे लेकर हमारे स्वामी की पुत्री देव के चरणों के निकट आयी है, तो इस शुक को स्वीकार करें ।' ऐसा कहकर राजा के सामने पिंजरा रखकर वह चला गया ।

उसके चले जाने पर उस श्रेष्ठ पक्षी ने राजा की ओर मुख कर दाहिना पैर उठाकर अत्यन्त स्पष्ट वर्ण, स्वर के संहार वाली वाणी में 'जय' शब्द कहकर राजा को लक्ष्य कर यह आर्या पढ़ी—

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

स्तनयुगमश्रुस्नातं समीपतरवर्ति हृदयशोकाग्नेः ।
चरति विमुक्ताहारं व्रतमिव भवतो रिपुस्त्रीणाम् ॥

राजा तु तां श्रुत्वा संजातविस्मयः सहर्षमासन्नवर्तिनमतिमहार्घहेमासनोपविष्टममरगुरुमिवाशेषनीतिशास्त्रपारगमतिवयसमग्रजन्मानमखिलमन्त्रिमण्डले प्रधानममात्यं कुमारपालितनामानमब्रवीत्—श्रुता भवद्भिरस्य विहङ्गमस्य स्पष्टता वर्णोच्चारणे स्वरे च मधुरता । (प्रथमं तावदिदमेव महदाश्चर्यम्

अन्वय—भवतः रिपुस्त्रीणाम् अश्रुस्नातं हृदयशोकाग्नेः समीपतरवर्ति, विमुक्ताहारं स्तनयुगम् व्रतम् इव चरति । स्तनयुगम् = दोनों स्तन । यही इस वाक्य का कर्त्ता है । इसके तीन विशेषण हैं (१) अश्रुस्नातम्=आँसुओं से स्नान किए हुए (२) हृदयशोकाग्नेः समीपतरवर्ति=हृदय की शोकाग्नि के समीप में रहने वाले (३) विमुक्ताहारम् = हार का परित्याग किए हुए । विमुक्ताहार का विग्रह दो प्रकार से होगा—विमुक्त+आहार । व्रत में आहार अर्थात् भोजन का परित्याग होता है । वि=मुक्तहार=मुक्तहार रहित मोतियों की माला के बिना । व्रतम् इव चरति=मानों व्रत करते हैं (उत्प्रेक्षा)

आसन्नवर्त्तिनम्=निकट में बैठे । अतिमहार्घ=अत्यन्त मूल्यवान् । हेमासन = सोने का आसन । अशेषनीतिशास्त्रपारगम् = सम्पूर्ण नीतिशास्त्र में पारंगत । अतिवयसम् = अधिक वृद्ध । अग्रजन्मा=ब्राह्मण ।

'आपकी शत्रुपत्नियों के दोनों स्तन आँसुओं में स्नान करते हुए हृदय की शोकाग्नि के निकट रहकर आहार त्यागने वाले के समान मुक्ताहार का परित्याग कर मानों व्रत का आचरण कर रहे हैं ।

राजा ने तो उसे सुनकर चकित होकर हर्षपूर्वक, निकट में स्थित, अत्यन्त मूल्यवान् सुवर्ण सिंहासन पर विराजमान, वृहस्पति के समान सम्पूर्ण नीतिशास्त्र में पारंगत, अत्यन्त वृद्ध ब्राह्मण, समग्र मन्त्रिमण्डल के प्रधान मन्त्री कुमारपालित से कहा—सुना आपने, इस पक्षी की उच्चारण की स्पष्टता और स्वर की मधुरता को । पहले तो यही आश्चर्य की बात है कि यह स्पष्ट

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

यदयमसङ्कीर्ण-वर्ण-प्रविभागामभिव्यक्त-यमात्रानुस्वारस्वर-संस्कार-योगां विशेषयुक्ताम् अतिपरिस्फुटाक्षरां गिरमुदीरयति (तत्र पुनरपरम्, अभिमतविषये तिरश्चोऽपि मनुजस्येव संस्कारवती बुद्धिपूर्वा प्रवृत्तिः। तथाहि, अनेन समुत्क्षिप्तदक्षिणचरणेनोच्चार्य जयशब्दमियमार्या मामुद्दिश्य परिस्फुटाक्षरं गीता। प्रायेण हि पक्षिणः पशवश्च भयाहारमैथुन-निद्रा-संज्ञामात्रवेदिनो भवन्ति। इदन्तु महच्चित्रम्।)

इत्युक्तवति भूभुजि कुमारपालितः किञ्चत्स्मितवदनो नृपमवादीत्—'देव, किमत्र चित्रम्। एते हि शुकसारिका प्रभृतयो

असङ्कीर्णप्रविभागाम् (गिरम् का विशेषण)=स्पष्ट वर्णों के विभाग वाली। विशेषयुक्ताम्=अलङ्कार से युक्त। अतिपरिस्फुटाक्षरम् = अत्यन्त स्पष्ट अक्षरों वाली। गिरम् = वाणी को। तिरश्चः = पक्षियों की। बुद्धिपूर्वा=समझदारी के साथ। वेदिनः=अनुभव करने वाले।

इति उक्तवति भूभुजि = राजा के ऐसा कहने पर (सप्तमी विभक्ति) भुवं भुनक्ति इति भूभुक् (भू+भुज्+क्विप्) तस्मिन् भूभुजि। स्मितवदनः= मुस्कान के साथ। यथाश्रुताम् = सुनी हुई के अनुसार। अधिगतम् = ज्ञात।

वर्णों के भेद से युक्त, अभिव्यक्त मात्रा, अनुस्वार और स्वर के संस्कार वाली, अलङ्कारयुक्त अति स्पष्ट अक्षर वाली वाणी बोल रहा है। उसमें भी दूसरा आश्चर्य यह है कि अभीष्ट विषय में पक्षी की भी मनुष्य के समान बुद्धिमत्ता-पूर्ण प्रवृत्ति है। क्योंकि इसने अपने दाहिने चरण को उठाकर 'जय' शब्द कह कर यह आर्या मुझे लक्ष्य कर अत्यन्त स्पष्ट अक्षरों में गायी। प्रायः पक्षी और पशु भय, आहार, मैथुन, निद्रा और चेतना मात्र ही जानते हैं। यह तो बहुत विचित्र है।

राजा के ऐसा कहने पर कुमारपालित ने कुछ मुस्काते हुए मुख से राजा से कहा—'महाराज, इस में आश्चर्य क्या है? क्योंकि ये शुक, सारिका आदि विशेष प्रकार के पक्षी सुनी हुई वाणी का ज्यों-के-त्यों उच्चारण करते

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

विहङ्गविशेषा यथाश्रुतां वाचमुच्चारयन्तीत्यधिगतमेव देवेन। तत्राप्यन्यजन्मोपात्त—संस्कारानुबन्धेन वा पुरुषप्रयत्नेन वा संस्कारातिशय उपजायत इति नातिचित्रम्। (अन्यच्च, एतेषामपि पुरा पुरुषाणामिवातिपरिस्फुटाक्षरा वागासीत्। अग्निशापात्त्व-स्फुटालापता शुकानामुपजाता करिणाञ्च जिह्वापरिवृत्तिः, इत्येवमुच्चारयत्येव तस्मिन्नशिशिरकिरणमम्बरतलस्य मध्यमा-रूढमावेदयन् नाडिकाच्छेदप्रहतपटुपटहनादानुसारी मध्याह्नशङ्ख-ध्वनिरुदतिष्ठत्। तमाकर्ण्य च समासन्नस्नानसमयो विसर्जित-राजलोकः क्षितिपतिरास्थानमण्डपादुत्तस्थौ।)

अन्यजन्मोपात्त = दूसरे जन्म में अर्जित। संस्कारातिशय = संस्कार में अधिकता। अतिपरिस्फुटाक्षरा = अत्यन्त स्पष्ट अक्षरों वाली। अस्फुटालापता = अस्पष्ट भाषण। करिणाम् = हाथियों की। जिह्वापरिवृत्तिः = जीभ उलटना। यह कथा महाभारत के अनुशासन पर्व में आयी है। अग्नि के शाप देने पर देवों ने उस शाप का प्रभाव कम कर दिया था।

अशिशिरकिरण = सूर्य। आवेदयन् = बताता हुआ। नाडिका = समय का विभाग। पटुपटह = बड़े दुन्दुभी। विसर्जितराजलोकः = राजाओं को विदा करने वाला। क्षितिपतिः = राजा।

हैं; यह तो आप जानते ही हैं। उसमें भी दूसरे जन्म से अर्जित संस्कार के फलस्वरूप अथवा किसी पुरुष के परिश्रम करने से संस्कार बढ़ जाता है, अतः कुछ भी आश्चर्य नहीं। इसके अतिरिक्त, इनकी भी पहले पुरुषों के समान अत्यन्त स्पष्ट अक्षरों वाली वाणी थी। अग्नि के शाप से शुकों का अस्फुट बोलना आरम्भ हो गया और हाथियों की जिह्वा उलट गयी। उनके ऐसा कहते समय ही सूर्य आकाश के मध्य में पहुँच गये हैं इसकी सूचना देने वाली, नाडिका की समाप्ति पर बजायी गयी बड़ी दुन्दुभियों की ध्वनि के पीछे उठने वाली दोपहर की शंखध्वनि उठी। उसे सुनकर स्नान का समय निकट होने से राजाओं के समूह को विदा कर वह राजा सभाभवन से उठ पड़ा।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

अथ चलति महीपतावन्योन्यमतिरभससञ्चलनचालिताङ्गदपत्रभङ्गमकरकोटिपाटितानेकपटानाम् आक्षेपदोलायमानकण्ठदाम्नाम् अंसस्थलोल्लसित—कुङ्कुमपटवासधूलिपटलपिञ्जरीकृतदिशाम्, आलोलमालतीकुसुमशेखरोत्पतदलिकदम्बकानाम् अर्द्धावलम्बिभिः कर्णोत्पलैश्चुम्ब्यमानगण्डस्थलानाम्

चलति महीपतौ (सप्तमी विभक्ति) = राजा के चलने पर। उत्तिष्ठताम् महीपतीनाम् महान् सम्भ्रमः आसीत्=उठते हुए राजाओं की बड़ी भीड़ हो गयी। यही मुख्य वाक्य है। महीपतीनाम् के विशेषण हैं—अन्योन्यम् = एक दूसरे की ओर। अतिरभस = वेगपूर्वक। सञ्चलनचालित=चलने से हिलते हुए। अङ्गदपत्रभङ्गमकरकोटि = केयूर और पत्रभङ्ग नाम के कर्णाभूषण मकर के आकृति का किनारा। पाटित = विदीर्ण।

आक्षेप—पादन्यास या परस्पर शरीरसम्पर्क। दोलायमान=झूलती हुई। कण्ठदाम्नाम्—कण्ठ के हार। दामन् = हार। अंसस्थल = कन्धा। उल्लसित= उड़ती हुई। धूलिपटल—धूल समूह से, चूर्ण। पिञ्जरित—पीले और लाल रंग की, पिञ्जर से इतच् प्रत्यय। आलोल= कुछ चंचल। शेखर=सिर पर धारण की जाने वाली माला। अलिकदम्बक = भौंरो का समूह। कर्णोत्पल = कानों पर रखे हुए कमल। चुम्ब्यमानगण्डस्थलानाम् = जिनके कपोल चूमे

(सभाविसर्जन)

राजा के चलने पर उठने वाले राजाओं की महान् भीड़ हो गयी। उन राजाओं में एक दूसरे की ओर वेगपूर्वक चलने से हिलते केयूर और कर्णाभूषण की मकराकृति नोकों से कई वस्त्र विदीर्ण हो गये, पैर रखने से कण्ठ के हार झूलने लगे, कन्धों से उड़ती कुंकुम और पटवास के चूर्ण से दिशाएँ कुछ पीले वर्ण की हो गयीं, कुछ चंचल मालती पुष्प की मालाओं से भ्रमर समूह उड़ने लगे, आधे लटके हुए कानों में पहने गये कमलों द्वारा उनके कपोलों का

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

गमनप्रणामलालसानाम् अहमहमिकया वक्षःस्थलप्रेङ्खोलित-हारलतानाम्, उत्तिष्ठतामासीदतिमहान् सम्भ्रमो महीपतीनाम्।

इतश्चेतश्च निष्पतन्तीनां स्कन्धावसक्तचामराणां चामर-ग्राहिणीनां कमलमधुपानमत्तजरत्कलहंसनादजर्जरितेन पदे पदे रणितमणीनां मणिनूपुराणां निनादेन, बारविलासनीजनस्य सञ्चरतो जघनस्थलास्फालनरसितरत्नमालिकां मेखलानां मनोहारिणा झङ्कारेण, नूपुररवाकृष्टानाञ्च धवलितास्थानमण्डप-

---

जा रहे थे, स्पर्श किये जा रहे थे। गण्ड = कपोल। अहमहमिकया = मैं पहले मैं पहले की होड़ करते हुए। प्रेङ्खोलित=झूलते हुए। सम्भ्रमः = घबड़ाकर। इतश्च-इतश्च = इधर-उधर। निष्पतन्तीनाम् = गिरती हुई। स्कन्धावसक्त-चामराणाम् = कन्धे पर चँवर रखे हुई। जरत्कलहंस = बूढ़ा हंस। जर्जरितेन= फटी हुई, कर्कश। रणितमणीनाम् = जिसकी मणियाँ बज रही हैं, बजती मणियों वाले। रणितः मणयः येषु तादृशानाम्। जघनस्थलास्फालन = कटि या नितम्बों के हिलने से। रसित = शब्दयुक्त। रत्नमालिकानाम् = रत्न की मालाओं वाली। मेखला = करधनी। नूपुररवाकृष्टानाम् = नूपुर की ध्वनि से

स्पर्श किया जाने लगा, वे राजा को विदा के समय प्रणाम करने के लिए उत्सुक थे और 'मैं पहले मैं पहले' की प्रतिस्पर्धा से उनके वक्षस्थल पर हीरों की लड़ियाँ झूलने लगीं।

इधर-उधर गिरने वाली, कन्धों पर चँवर रखी हुई चँवर डुलाने वाली स्त्रियों के, कमल का मधु पीकर मतवाले बूढ़े हंस की ध्वनि के समान जर्जर, प्रत्येक पद पर बजती मणियों वाले मणि के नूपुरों के निनाद द्वारा चलती वेश्याओं की कटि हिलने से शब्द करती रत्नों की माला वाली करधनियों की मनोहर झंकार से, नूपुर के शब्द से आकृष्ट, सभाभवन की सीढ़ियों को

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

सोपानफलकानां भवनदीर्घिकाकलहंसकानां कोलाहलेन, रसना-रसितोत्सुकानाञ्च तारतरविराविणामुल्लिख्यमान—कांस्यकेङ्कार-दीर्घेण गृहसारसानां कूजितेन, सरभसप्रचलितसामन्तशतचरण-तलाभिहतस्य चास्थानमण्डपस्य निर्घोषगम्भीरेण कम्पयतेव वसुमतीं ध्वनिना, प्रतिहारिणाञ्च पुरः ससम्भ्रममुत्सारितजनानां दण्डिनां समारब्धहेलमुच्चैरुच्चारयतामालोकयतालोकयतेति

खिले हुए। धवलितास्थानमण्डप-सोपान-फलकानाम्=सभाभवन की सीढ़ियों को धवल बनाने वाले। सभाभवन की सीढ़ियों पर बैठे थे, इससे सीढ़ियाँ धवल लग रही थीं। भवनदीर्घिका = घर के भीतर वना हुआ पोखरा।

रसनारसित = करधनी की ध्वनि। तारतरविराविणाम् = और अधिक शब्द करने वाले। उल्लिख्यमान = रगड़े या खरादे जाते हुए। केङ्कार=कें कें की ध्वनि। सरभस = वेगपूर्वक, जल्दी से। सामन्त शतचरणतल = सैकड़ों सामन्तों के चरणतल से। निर्घोष = गूँजती हुई। वसुमती कम्पयता इव = पृथ्वीं कँपाती हुई-सी (उत्प्रेक्षा)। ससंभ्रमम्=घवड़ाहट से। उत्सारित-जनानाम्=लोगों को हटाने वाले। दण्डिनाम् = दण्डा धारण करने वाले। समारब्धहेलम् = लीलापूर्वक, विशेष ढंग से। उच्चैः = जोर से। तारतर-दीर्घेण = और अधिक-अधिक जोर से।

धवल बना देने वाले घर की वापी के कलहंसों के कोलाहल द्वारा, करधनी के वजने से उत्कण्ठित बने हुए, और ऊँचे शब्द करते हुए, रगड़े जाते हुए काँसे के समान केंकार ध्वनि के कारण और जोर से सुनाई पड़ने वाले पालतू सारसों के शब्द द्वारा, वेगपूर्वक चलने वाले सैकड़ों सामन्तों के चरणतल से आहत सभाभवन में गूँजती हुई और पृथ्वी को कँपाती हुई-सी गम्भीर ध्वनि द्वारा, आगे जल्दीजल्दी लोगों को हटाने वाले दण्डधारी प्रतिहारियों की लीलापूर्वक की जाने वाली जोर की 'आलोकयत आलोकयत' (देखो-देखो

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

तारतरदीर्घेण भवनप्रासादकुञ्जेषूच्चरितप्रतिशब्दतया दीर्घतरतामुपगतेनालोकशब्देन, राज्ञाञ्च ससम्भ्रमावर्जितमौलिलोलचूडामणीनां प्रणमताममलमणिशलाकादन्तुराभिः किरीटकोटिभिरुल्लिख्यमानस्य मणिकुट्टिमस्य निःस्वनेन, (प्रणामपर्यस्तानामतिकठिनमणिकुट्टिमनिपतनरणरणायितानाञ्च मणिकर्णपूराणां निनादेन, (मङ्गलपाठकानाञ्च पुरोयायिनां जयजीवेति-

---

उच्चरित-प्रतिशब्दतया=प्रतिध्वनि होने के कारण । आवर्जित=झुकाये हुए । मौलि=मस्तक । लोलचूडामणीनाम्=चंचल मुकुट की मणियों का । अमल-मणि-शलाकादन्तुराभिः = स्वच्छ मणि की शलाकाओं के कारण ऊँची नीची, अमलाः या मणिशलाकाः ताभिः दन्तुराभिः । किरीटकोटि=मुकुट के किनारे । निःस्वन=शब्द । प्रणामपर्यस्तानाम् = प्रणाम में झुके हुए । अतिकठिनमणिकुट्टिमनिपतन-रणरणायितानाम् = अत्यन्त कठोर मणि के फर्श पर पड़ने से रण-रण का शब्द करने वाले । अतिकठिने मणिकुट्टिमे निपतनेन रणरणायितानाम् ।

पुरोयायिनाम् = आगे जाने वाले । मङ्गलपाठकानाम् = मङ्गलपाठ करने वाले । जय=विजयी होवें । जीव = दीर्घायु हों । मङ्गलमधुरवचनानुयातेन=

की और भी अधिक दीर्घ ध्वनि द्वारा, महल के कुञ्जों में प्रतिध्वनित होने के कारण और दीर्घ बने हुए 'आलोक' शब्द द्वारा, हड़बड़ाकर मुकुटों की चंचल मणियों को झुकाने वाले, प्रणाम करने वाले राजाओं की निर्मल मणि की शलाका के कारण ऊँची-नीची मुकुटों की कोटियों से रगड़े जाने वाले मणि के फर्श के शब्द द्वारा, प्रणाम में झुके हुए अत्यन्त कठोर मणि के फर्श पर गिरने से रण-रण का शब्द करने वाले मणि के कर्णभूषणों के शब्द द्वारा, आगे चलने वाले मंगलपाठकों के 'जय जीव' आदि मंगलमय मधुर वचनों के साथ पाठ करने वालों

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

मङ्गलमधुरवचनानुयातेन पठतां दिगन्तव्यापिना कलकलेन, प्रचलितजनचरणशतसंक्षोभभयादपहाय कुसुमप्रकरमुत्पतताञ्च मधुलिहां हुङ्कृतेन, संक्षोभादतित्वरितपदप्रवृत्तैरवनिपतिभिः केयूरकोटिताडितानां क्वणितमुखररत्नदाम्नाञ्च मणिस्तम्भानां रणितेन सर्वतः क्षुभितमिव तदास्थानभवनम् अभवत् ।

अथ विसर्जितराजलोको 'विश्रम्यताम्' इति स्वयमेवाभिधाय तां चाण्डालकन्यकाम् 'वैशम्पायनः प्रवेश्यतामभ्यन्तरम्' इति ताम्बूलकरङ्कवाहिनीमादिश्य कतिपयाप्तराजपुत्रपरिवृतो नरपतिरभ्यन्तरं प्राविशत् ।

मंगलमय एवं मधुर वचनों के साथ । संक्षोभभयात् = संक्षोभ के भय से, दबने के भय से । प्रकर = समूह । अपहाय = छोड़कर । मधुलिहां = भौंरों के । अतित्वरित = अत्यन्त शीघ्र । क्वणितमुखररत्नदाम्नाम् = जिसकी शब्द करने वाली रत्नों की लड़ियाँ बज रही थीं । रणित = झंकार । क्षुभितम् इव = क्षुब्ध जैसा ।

विसर्जितराजलोकः = विसर्जिताः राजलोकाः येनः सः ।

अभ्यन्तरम् = महल के भीतर । ताम्बूलकरङ्कवाहिनी = ताम्बूल का डिब्बा ले चलने वाली । आप्तराजपुत्र = विश्वस्त राजकुमार ।

के दिगन्तव्यापी कोलाहल द्वारा, चलने वाले लोगों के सैकड़ों चरणों से दबने के भय से पुष्पसमूह को छोड़कर उड़ने वाले भौंरों के हुङ्कार द्वारा, भीड़ के कारण बहुत शीघ्र पैर रखने वाले राजाओं के केयूर के किनारों से टकराने वाले, बजती हुई रत्नशृंखलाओं वाले मणि के खम्भों के शब्द द्वारा सभी ओर से वह सभाभवन क्षुब्ध-सा हो गया ।

तदुपरान्त राजसमूह को विदाकर, 'विश्राम करें' ऐसा स्वयं ही उस चाण्डालकन्या से कहकर, 'वैशम्पायन को भीतर ले जाया जाय' ऐसा ताम्बूल की डिबिया ढोने वाली दासी को आदेश देकर, कुछ विश्वस्त राजकुमारों से घिरा हुआ राजा भीतर चला गया ।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

सिन्दुवार फूल =
मंजरी =

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

अपनीताभरणश्च दिवसकर इव विगलितकिरणजालः चन्द्रतारकाशून्य इव गगनाभोगः, समुपाहृत-समुचितव्यायामोपकरणां व्यायामभूमिम् अयासीत्। स तस्याञ्च समानवयोभिः सह राजपुत्रैः कृतमधुरव्यायामः श्रमवशादुन्मिषन्तीभिः कपोलयोरीषदवदलितसिन्दुवारकुसुममञ्जरीविभ्रमाभिः उरसि निर्दयश्रमच्छिन्नहारविगलितमुक्ताफलप्रकरानुकारिणीभिः ललाटपट्टकेऽष्टमीचन्द्रशकलतलोल्लसदमृतबिन्दुविडम्बनीभिः स्वेदजल-

---

अपनीताभरणः=आभूषणों को उतारे हुए। राजा की उपमा आकाश के एक खण्ड से दी गयी है। विगलितकिरणजालः = किरणसमूह से शून्य। गगनाभोगः=आकाश का भाग। समुपाहृत = एकत्र। उन्मीषन्तीभिः = झलकने वाली, निकलने वाली। कपोलों पर पसीने की बूँदें ऐसी लग रही थीं जैसे सिन्दुवार फूल की मंजरी कुछ मसल दी गयी हो। ईषदवदलित = कुछ मसली गयी। विभ्रम=शोभा। उरसि=छाती पर। निर्दयश्रम=कठोर श्रम। छिन्न = टूटे। विगलित = बिखरे। मुक्ताफल-प्रकर = मोतियों के दानों का समूह। शकल = खण्ड। अमृतबिन्दुविडम्बनीभिः=अमृत की बूँदों के समान लगने वाली। स्वेदजलकणिकासन्ततिभिः = पसीने की बूँदों के समूह। अलङ्क्रियमाणमूर्तिः = जिसका शरीर सुशोभित था। 'दिवसकर इव' 'गगनाभोग इव' में उपमा है।

(शूद्रक का व्यायाम एवं स्नान)

आभूषणों को उतारकर, किरणसमूहरहित एवं चन्द्रमा तथा तारों से शून्य आकाश के समान दिखायी पड़ने वाला (वह राजा) उचित व्यायाम के उपकरणों से युक्त व्यायामभूमि में आया। उसने उसमें समान आयु वाले राजपुत्रों के साथ मधुर व्यायाम किये। परिश्रम के कारण निकलने वाली, दोनों कपोलों पर कुछ मसली हुई सिन्दुवार पुष्पमंजरी की शोभा वाली, छाती पर कठिन श्रम से टूटे हार से बिखरे मोतियों का अनुकरण करने वाली और ललाट पर अष्टमी के चन्द्रमा के ऊपर निकलती अमृतबूंदों के समान लगने वाली पसीने की

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

कणिकासन्ततिभिरलङ्क्रियमाणमूर्त्तिः इतस्ततः स्नानोपकरण-सम्पादनसत्वरेण पुरः प्रधावता परिजनेन तत्कालं विरलजनेऽपि राजकुले समुत्सारणाधिकारमुचितमाचरद्भिः दण्डिभिरुपदिश्य-मानमार्गः, विततसितवितानाम् अनेकचारणगणनिबध्यमान-मण्डलाम्, गन्धोदकपूर्णकनकमयद्रोणीसनाथमध्याम् उपस्था-पितस्फाटिकस्नानपीठाम्, एकान्तनिहितैरतिसुरभिगन्धसलिल-

---

'कुसुममञ्जरीविभ्रमाभिः' में लुप्तोपमा है। 'मुक्ताफलप्रकरानुकारिणीभिः' में अर्थोपमा है। 'अमृतबिन्दुविडम्बनीभिः' में भी अर्थोपमा है। स्नानोप-करण = स्नान के साधन। सत्वरेण = जल्दी करनेवाले (परिजनेन का विशेषण)। विरलजने अपि राजकुले = राजकुल में कम लोगों के होने पर भी। समुत्सारणाधिकारम्=लोगों को हटाने का कार्य। उपदिश्यमानमार्गः= जिसका मार्ग बताया जा रहा था। उपदिश्यमानः मार्गः यस्य सः।

विततसितवितानाम्=जिसमें श्वेत चँदोवा फैला था। यहाँ से आगे के शब्द 'स्नानभूमिम्' के विशेषण हैं। उसके स्नान का स्थान कैसा था इसका वर्णन किया गया है। अनेकचारणनिबध्यमानमण्डलाम्=जिसमें अनेक चारण मण्डल बनाकर खड़े थे। द्रोणी = कुण्ड। कनकमय = सोने की। उपस्थापित = निकट में रखा हुआ। स्फाटिकस्नानपीठाम् = स्फटिक से बनी स्नान की छोटी चौकी।

बूँदों के समूह से उसका शरीर अलङ्कृत था। इधर-उधर स्नान की वस्तुयें जुटाने की जल्दी में लगे हुए, आगे भागने वाले सेवकों के कारण उस समय राजकुल में अल्प लोगों के होने पर भी लोगों को हटाने का कार्य यथोचित रूप में करने वाले दण्डधारियों द्वारा उसे मार्ग बताया जा रहा था। वह फैले हुए श्वेत चँदोवे वाली, अनेक चारणों के मण्डल वाली, सुगन्धित जल से भरे सुनहले कुण्ड से सुशोभित मध्यभाग वाली, निकट में रखे गये स्फटिक की स्नानपीठ वाली

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

आंवला २ परिकर = कटि
Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

पूर्णैः परिमलावकृष्टमधुकरकुलान्धकारितमुखैरातपभयान्नील-कर्पटावगुण्ठितमुखैरिव स्नानकलसैरुपशोभितां स्नानभूमि-मगच्छत् ।

अवतीर्णस्य च जलद्रोणीं वारविलासिनीकरमृदितसुगन्धा-मलकलिप्तशिरसो राज्ञः समन्तात् समुपतस्थुरंशुकनिबिड-निबद्ध-स्तनपरिकराः दूरसमुत्सारितवलयबाहुलता, समुत्क्षिप्तकर्णाभरणाः

तृतीया वहुवचन वाले शब्द 'स्नानकलसैः' के विशेषण हैं। एकान्तनिहितैः= एक किनारे रखे गए। अतिसुरभिगन्धसलिलपूर्णैः = अत्यन्त सुगन्धित जल से भरे। परिमलावकृष्टमधुकरकुलान्धकारितमुखैः = सुगन्ध से आकृष्ट भौंरों के समूह से उन घड़ों का मुख काला हो गया था। मानों धूप से वचाने के लिए काले कपड़े से उनका मुख बाँध दिया गया हो। आतपभयात्=धूप के भय से नीलकर्पटावगुण्ठित = नीले कपड़े से ढँके।

जलद्रोणी = जल से भरा कुण्ड। वारविलासिनी० = वेश्याओं के हाथ से मले गये सुगन्धित आँवले से जिसका शिर लिप्त था। समन्तात्=चारों ओर। समुपतस्थुः=खड़ी हुई। अंशुक-निविड-निबद्ध-स्तन-परिकरः = रेशमी वस्त्र से कसकर स्तनों और कटि को बाँधे हुई। दूरसमुत्सारितवलयबाहुलताः = ऊपर उठाए गये हैं कंकण जिसमें ऐसी बाहुओं वाली। समुत्क्षिप्त=ऊपर उठाये हुए। कर्णाभरणा=कानों के आभूषण। कर्णोत्सङ्गोत्सारितालकाः=कानों के समीप से

एक कोने में रखे गये, अत्यन्त सुगन्धित जल से भरे, सुगन्धि से खिचकर आये हुए भौंरों से काले बने हुए मुखों के कारण धूप के भय से नीले कपड़े से आच्छादित मुख वाले जैसे लगने वाले स्नान के कलसों से शोभित स्नानभूमि को गया।

जलकुण्ड में उतरे हुए राजा के, जिसके शिर में वेश्याओं के हाथों सुगंधित आँवला लगा हुआ था, चारों ओर अपने रेशमी वस्त्रों से कसकर स्तनों तथा कटियों को बाँधी हुई, बाहुओं में कंकण दूर तक उठायी हुई, कानों के आभूषण को ऊपर चढ़ाई हुई; हाथों में कलस लेकर स्नान की देवियों के समान वेश्याएँ

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

कर्णोत्सङ्गोत्सारितालकाः गृहीतजलकलसाः स्नानार्थमभिषेक-देवता इव वारयोषितः। ताभिश्च समुन्नतकुचकुम्भमण्डलाभि-र्वारिमध्यप्रविष्टः करिणीभिरिव वनकरी परिवृतस्तत्क्षणं रराज राजा। द्रोणीसलिलादुत्थाय च स्नानपीठममलस्फटिकधवलं वरुण इव राजहंसमारुरोह।

ऊपर कर लिया है केश जिन्होंने। अभिषेकदेवताः इव=स्नान की देवियों के समान। वारयोषितः=वेश्याएँ। गृहीतजलकलसाः=जल के कलस लिये हुई गृहीताः जलकलसाः याभिः ताः।

वेश्याओं से घिरा हुआ राजा कैसा लग रहा था इसका वर्णन किया गया है। समुन्नत-कुच-कुम्भमण्डलाभिः=ऊँचे स्तन रूपी कुम्भ मण्डल वाली (स्तनों की उपमा हथिनियों के मस्तक के मांसपिण्डों से दी गयी है (उपमालंकार)। कुम्भ का दो अर्थ है [१] घट [२] हाथी के मस्तक पिण्ड। करिणी= हथिनी। वनकरी=जंगली हाथी। रराज=सुशोभित हुआ, राज् लिट् लकार। द्रोणीसलिलात् उत्थाय=कुण्ड के जल से निकल कर। पुनः उसकी उपमा वरुण से दी गयी है। (उपमालंकार)

खड़ी हो गयीं। उन्नत कुचकुम्भमण्डल वाली उनसे घिरा हुआ राजा वैसे ही सुशोभित हुआ जैसे जल में प्रविष्ट वनगज हथिनियों से सुशोभित होता है। कुण्ड के जल से निकल कर राजा निर्मल स्फटिक के धवल स्नान-पीठ पर वैसे ही चढ़ा जैसे मानो वरुण राजहंस पर चढ़ा हो।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

।।ततस्ताः काश्चिन्मरकतमणिकलसप्रभाश्यामायमाना नलिन्य इव मूर्तिमत्यः पत्रपुटैः, काश्चिद्रजतकलसहस्ता रजन्य इव पूर्ण-चन्द्रमण्डलविनिर्गतेन ज्योत्स्नाप्रवाहेण, काश्चित् कलसोत्क्षेपश्रम-स्वेदार्द्रशरीरा जलदेवता इव स्फटिकैः कलसैस्तीर्थजलेन, काश्चि-न्मलयसरित इव चन्दनरससिश्रेण सलिलेन, काश्चिदुत्क्षिप्त-कलस-पार्श्वविन्यस्तहस्तपल्लवाः प्रकीर्यमाणनखमयूखजालकाः प्रत्यङ्गुलि-

ततः = इसके बाद। ताः=उन वेश्याओं ने। राजानम् अभिषिषिचुः=स्नान कराया। यही मुख्य वाक्य है। भिन्न-भिन्न वेश्याओं ने भिन्न-भिन्न प्रकार के घड़े से स्नान कराया उसी का उत्प्रेक्षापूर्ण वर्णन है। काश्चित्=कुछ ने। मर-कतमणिकलस-प्रभा-श्यामायमानाः = मरकतमणि की कान्ति से श्याम वर्ण की दिखायी पड़ती हुई। नलिन्यः इव=कमलिनियों के समान। (उपमा)

रजतकलसहस्ताः=चाँदी के कलस हाथ में ली हुई। रजन्यः इव=रात्रियों के समान। ज्योत्स्ना=चाँदनी। कलसोत्क्षेप=कलस उठाने। स्वेदार्द्रशरीरा = पसीने से गीले शरीर वाली। जलदेवताः इव = जल की देवियों के समान। मलयसरितः इव = मलयपर्वत की नदियों के समान। उत्क्षिप्तकलस-पार्श्व-विन्यस्त-हस्त-पल्लवाः=उठाये हुए कलस की वगल में पल्लव जैसे हाथ रखे हुई। प्रकीर्य० = जिनके नखों से किरणें बिखर रही थीं। प्रत्यङ्गुलिविवर = प्रत्येक

तब मरकतमणि के कलस की कान्ति से श्याम बनी हुई कुछ वेश्याओं ने मूर्तिमती कमलिनियों के समान मानों पत्ते के दोनों से राजा को स्नान कराया। चाँदी का कलस हाथ में ली हुई कुछ ने मानों रात्रियों के समान पूर्ण चन्द्रमण्डल से निकलती चाँदनी के प्रवाह से, कलस उठाने के परिश्रम से उत्पन्न पसीने से गीले शरीर वाली कुछ ने जलदेवियों के समान स्फटिक के कलसों में तीर्थों के जल से, कुछ ने मलय पर्वत की नदियों के समान चन्दन के रस से मिश्रित जल से, उठाकर कलस की वगल में पल्लव जैसे हाथ रखे हुई, बिखरती हुई हाथों के नखों की किरणों वाली कुछ ने प्रत्येक अंगुली के बीच के छिद्रसे धारा बहाते हुए

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

फव्वारा =
चारण =
Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

विवर–विनिर्गतजलधाराः सलिलयन्त्रदेवता इव, काश्चिज्जाड्यमपनेतुमाक्षिप्तबालातपेनेव दिवसश्रिय इव कनककलशहस्ताः, कुङ्कुमजलेन वाराङ्गनाः यथायथं राजानम् अभिषिषिचुः।

अनन्तरमुदपादि च स्फोटयन्निव श्रुतिपथमनेकप्रहतपटुपटहझल्लरीमृदङ्गवेणुवीणागीतनिनादानुगम्यमानो वन्दिवृन्द-कोलाहलाकुलो भुवन-विवरव्यापी स्नानशङ्खानामापूर्यमाणानामतिमुखरो ध्वनिः।

अंगुली के बीच के छिद्र से। सलिलयन्त्र=फव्वारा। जाड्यम्=शीतलता, ठंडक। बालातप=प्रातःकाल का सूर्य। दिवसश्रियः इव=दिन की लक्ष्मियों के समान। वाराङ्गनाः = वेश्याएँ। यथायथम् = विधिपूर्वक, क्रमशः। अभिषिषिचुः=स्नान कराया। अभि+√सिच्+लिट् लकार, प्रथम पुरुष, बहुवचन।

उदपादि = हुआ। श्रुतिपथम् = कान को। स्फोटयन् इव=मानों फोड़ता हुआ (उत्प्रेक्षालंकार) अनेकप्रहत० = असंख्य बजाये जाने वाले बड़े नगाड़े, झल्लरी, मृदंग, वंशी, वीणा और गीत की ध्वनि जिसके पीछे उठी। वन्दिवृन्द=चारणगण। भुवनविवरव्यापी = संसार के भीतर फैलने वाला। आपूर्यमाणानाम्=फूँके जाते हुए। अतिमुखरः=बहुत तेज। 'भुवन विवरव्यापी' में संबंध न होने पर भी संबंध उक्ति होने से असंबन्धातिशयोक्ति है।

फव्वारे की देवियों के समान, तो कुछ वेश्याओं ने मानों ठंडक दूर करने के लिए प्रातःकाल की धूप गिरती हुई दिन की लक्ष्मी के समान सोने के कलस हाथ में लेकर यथोचित रूप से राजा को स्नान कराया।

इसके बाद कानों को फोड़ता हुआ-सा बजाये जाने वाले स्नान के समय के शंखों का अत्यन्त उच्च शब्द हुआ, जिसके पीछे अनेक बड़े भेरी, झल्लरी के शब्द हुए, जो चारणसमूहों के कोलाहल से भरा हुआ था और सम्पूर्ण पृथ्वी के भीतर व्याप्त होने वाला था।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

एवञ्च क्रमेण निर्वर्तिताभिषेको विषधरनिर्मोकपरिलघुनी धवले परिधाय धौतवाससी शरदम्बरैकदेश इव जलक्षालन-निर्मलतनुः, अतिधवलजलधरच्छेदशुचिना दुकूलपटपल्लवेन तुहिनगिरिरिव गगनसरित्स्रोतसा कृतशिरोवेष्टनः, सम्पादित-पितृजलक्रियः, मन्त्रपूतेन तोयाञ्जलिना दिवसकरमभिप्रणम्य देवगृहमगमत्।

क्रमेण = क्रमशः। निर्वर्तिताभिषेकः = स्नान समाप्त किया हुआ। विषधर-निर्मोक = सर्प की केंचुल। परिलघुनी = महीन। धौतवाससी = दो धुले वस्त्र। परिधाय = पहनकर। जलक्षालननिर्मलतनुः = जल से धुलने के कारण स्वच्छ शरीर वाला। जलधरच्छेद=मेघ का खण्ड। शरदम्बरैकदेशः इव = शरत्कालीन आकाश के एक भाग के समान। दुकूलपटपल्लव = रेशमी वस्त्र का आँचल। तुहिनगिरिः = हिमालय। गगनसरित्स्रोतसा= आकाश गङ्गा की धारा द्वारा। जैसे आकाश गङ्गा की धारा हिमालय पर लिपटी रहती है। कृतशिरोवेष्टनः= सिर को ढँके हुए। सम्पादितपितृजलक्रियः = पितरों को जल देने का कार्य सम्पादित किए हुए। पूत = पवित्र। तोय=जल। दिवसकर = सूर्य। देवगृह= मन्दिर। 'तुहिनगिरिः इव' में उपमा। 'जलधरच्छेदशुचिना' में लुप्तोपमा।

इस प्रकार क्रमशः स्नान समाप्त कर, सर्प की केंचुल के समान सूक्ष्म दो धवल धुले हुए वस्त्र पहनकर, शरत्कालीन आकाश के एक भाग के समान जल से धुलने के कारण निर्मल शरीर वाले उस राजा ने अत्यन्त धवल मेघ के खण्ड जैसे श्वेत रेशमी धोती के छोर से इस प्रकार सिर का वेष्टन किया जैसे आकाश गङ्गा की धारा से हिमालय वेष्टित हो। उसने पितरों को जल देने की क्रिया पूरी कर मन्त्र से पवित्र जल की अञ्जलि देकर सूर्य को प्रणाम किया और मन्दिर को गया।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

उपरचितपशुपतिपूजश्च निष्क्रम्य देवगृहान्निर्वर्तिताग्निकार्यो विलेपनभूमौ झङ्कारिभिरलिकदम्बकैरनुबध्यमानपरिमलेन मृगमदकर्पूरकुङ्कुमवाससुरभिणा चन्दनेनानुलिप्तसर्वाङ्गो विरचितामोदिमालतीकुसुमशेखरः कृतवस्त्रपरिवर्तः रत्नकर्णपूरमात्राभरणः समुचितभोजनैः सह भूपतिभिराहारमभिमतरसास्वादजातप्रीतिरवनिपो निर्वर्तयामास।

उपरचित-पशुपति-पूजः = शिव की पूजा कर चुकने वाला। उपरचितं पशुपतेः पूजनं येन सः। देवगृहात् निष्क्रम्य = मन्दिर से निकलकर। निर्वर्तिताग्निकार्यः = अग्निकार्य अर्थात् अग्नि में हवन का कार्य समाप्त कर लेने वाला। विलेपनभूमि = चन्दन आदि का लेप लगाने का स्थान, शृङ्गार कक्ष। अनुबध्यमानपरिमलेन = जिसके गन्ध पर टूट रहे थे, अनुबध्यमानः परिमले यस्य तेन। मृगमद = कस्तूरी। अनुलिप्तसर्वाङ्गः = सभी अंगों में लेप किया हुआ। आमोदि = सुगन्धित। कृतवस्त्रपरिवर्तः = वस्त्र बदलकर, कृतः वस्त्रयोः परिवर्तः येन सः। रत्नकर्णपूरमात्राभरणः = केवल रत्नों का कर्णाभूषण ही पहने हुए। समुचितभोजनैः = साथ भोजन करने योग्य। अभिमतरसास्वाद = मनोनुकूल रस के आस्वादन से। जातप्रीतिः = रुचि लेकर जाता प्रीतिः यस्य सः। अवनिपः = राजा। निर्वर्त्तयामास = समाप्त किया।

शिव की पूजा सम्पन्न कर, देवगृह से निकल कर, अग्नि में हवन का कार्य समाप्त कर, लेप लगाने के स्थान पर गुनगुनाते हुए भौंरों के समूह जिसके गन्ध पर मडरा रहे थे ऐसे कस्तूरी, कपूर, कुङ्कुम से सुरभित चन्दन से सभी अंगों में लेप किया, सुगन्धित मालती के फूलों की सिर पर माला धारण की, वस्त्र बदलकर, रत्नों का कर्णाभूषण मात्र पहनकर, साथ में भोजन करने योग्य राजाओं के साथ मन के अनुसार स्वाद से रुचि लेकर राजा ने भोजन किया।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

ता - २५/२

परिपीतधूमवर्त्तिरुपस्पृश्य च गृहीतताम्बूलस्तस्मात् प्रमृष्ट-मणिकुट्टिमप्रदेशादुत्थाय नातिदूरवर्त्तिन्या ससम्भ्रमप्रधावितया प्रतीहार्या प्रसारितं बाहुम् अवलम्ब्यानवरतवेत्रलताग्रहणप्रसङ्गा-दतिजरठकिसलयानुकारिकरतलं करेण अभ्यन्तरसञ्चारसमुचितेन परिजनेनानुगम्यमानः, धवलांशुकपरिगतपर्यन्ततया स्फटिक-

---

परिपीतधूमवर्त्ति = धूमवर्ती पीकर । कपूर आदि से बत्ती की तरह बनाकर उसमें अग्नि लगाकर पिया जाता था जो आजकल के सिगरेट पीने का ही रूप था । उपस्पृश्य = आचमन कर । उप + स्पृश् + क्त्वा (ल्यप्) ।

प्रमृष्टमणिकुट्टिमप्रदेशात् = पोंछे गये मणि के फर्श वाले स्थान से । नाति-दूरवर्त्तिन्या = अधिक दूर पर न बैठी हुई, कुछ दूर बैठी हुई । ससम्भ्रमम् प्रधावितया = जल्दी से दौड़ाई गयी ।

अनवरतवेत्रलताग्रहणप्रसंगात् = निरन्तर बेंत की छड़ी धारण करने के कारण । अतिजरठ = अत्यन्त पके । किसलयानुकारिकरतलम् = पल्लव का अनुकरण करने वाली हथेली । अभ्यन्तरसंचारसमुचितेन = महल के भीतर आनेजाने योग्य । अभ्यन्तरे सञ्चारे समुचितेन ।

धवलांशुकपरिगतपर्यन्ततया = श्वेत रेशमी वस्त्र से किनारों के घिरे होने के कारण । स्फटिक-मणिमय-भित्तिबद्धम् = स्फटिकमणि की दीवालों से घिरा ।

(आस्थानमण्डप-गमन)

धूमवर्त्तिका पीकर, आचमन कर, ताम्बूल लेकर वह उस धुले हुए मणि के फर्शों वाले स्थान से उठकर, कुछ दूर पर बैठी हड़बड़ा कर दौड़ती हुई आई प्रतिहारी द्वारा फैलाई गयी भुजा का, जिसकी हथेली निरन्तर बेंत की छड़ी पकड़ने से बहुत पके हुए पल्लव का अनुकरण कर रही थी, हाथ से आलम्बन लेकर अन्तःपुरः में विचरण करने योग्य सेवकों से अनुगमन किया जाता हुआ भोजन करके आस्थानमण्डप को आया । धवल रेशमी वस्त्र से चारों ओर से घिरे होने के कारण वह आस्थानमण्डप स्फटिक की मणियों से बनी दीवालों से घिरा

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

मणिमयभित्तिबद्धमिवोपलक्ष्यमाणम् अतिसुरभिणा मृगनाभि-परिमलेनामोदिना चन्दनवारिणा सिक्तशिशिरमणिभूमिम्, अविरलविप्रकीर्णेन विमलमणिकुट्टिमगगनतलतारागणेनेव कुसुमोपहारेण निरन्तर निचितम्, उत्कीर्णशालभञ्जिकानिवहेन सन्निहितगृहदेवतेनेव गन्धसलिलक्षालितेन कलधौतमयेन स्तम्भसञ्चयेन विराजमानम्, अतिबहलागुरुधूपपरिमलम्

उपलक्ष्यमाणम् = दिखायी पड़ने वाला (क्रियोत्प्रेक्षा)। द्वितीया एकवचन वाले शब्द 'आस्थानमण्डपम्' के विशेषण हैं।

मृगनाभि = कस्तूरी। सिक्तशिशिरमणिभूमिम् = सींचे गये शीतल मणि से बने फर्श वाला। अविरलविप्रकीर्ण = निरन्तर बिखरे हुए। नीले फर्श पर बिखरे हुए फूल ऐसे लग रहे थे जैसे नीले आकाश में तारे। विमलमणि-कुट्टिम--गगनतल = निर्मल मणि के फर्श रूपी आकाश में। निरन्तर-निचितम् = पूर्णतः भरा हुआ। निरन्तरं सततं निचितं व्याप्तम्।

उत्कीर्ण = खुदी हुई। शालभञ्जिकानिवह = पुत्तलियों के समूह वाला ('स्तम्भसञ्चयेन' का विशेषण)। सन्निहितगृहदेवतेन इव = मानो गृहदेवियाँ बैठी हों। खम्भों पर खुदी हुई पुत्तलिकायें अर्थात् नारीमूर्तियाँ ऐसी लग रही थीं मानों गृहदेवियाँ बैठी हों। कलधौत = सोना। जलनिवह=जलसमूह। जलधर

हुआ-सा दिखायी पड़ता था। अत्यन्त सुगन्धित कस्तूरी की गन्ध वाले चन्दन के जल से सींचे जाने के कारण उसकी मणि की भूमि शीतल थी। निरन्तर फैले हुए पुष्पों के उपहार से वह इस प्रकार भरा हुआ था जैसे निर्मल मणि के फर्श रूपी आकाश-मण्डल में तारागण बिखरे हुए हों। खुदी हुई पुत्तलियों के समूह के कारण गृहदेवियों से युक्त जैसे प्रतीत होने वाले, सुगन्धित जल से धुले हुए, सुवर्णनिर्मित जैसे प्रतीत होने वाले खम्भों से सुशोभित था। उसमें अति प्रचुर अगुरु की सुगन्ध फैली हुई थी। सम्पूर्ण जलसमूह के बरस जाने से श्वेत बने

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

अखिलविगलितजलनिवह-धवलजलधरशकलानुकारिणा कुसुमामोदवासितप्रच्छदपटेन पट्टोपधानाध्यासितशिरोधाम्ना मणिमयप्रतिपादुका-प्रतिष्ठितपादेन पार्श्वस्थरत्नपादपीठेन तुहिनगिरिशिलातलसदृशेन शयनेन सनाथीकृतवेदिकं भुक्त्वाऽऽस्थानमण्डपम् अयासीत् ।

तत्र च शयने निषण्णः क्षितितलोपविष्टया शनैः शनैरुत्संगनिहितासिलतया खड्गवाहिन्या नवनलिनदलकोमलेन

शकल = मेघखण्ड । (तृतीया एकवचन वाले शब्द 'शयनेन' के विशेषण हैं ।) शयनेन सनाथीकृतवेदिकम् = शय्या से जिसकी वेदी सनाथ थी। वेदी—बीच के ऊँचे भाग को कहते हैं। प्रच्छदपट=बिछाने की चादर, 'बेडकवर' । पट्टोपधान= रेशमी तकिया। अध्यासित = युक्त है। शिरोधाम्ना = सिरहाना जिसका। जिसके सिरहाने रेशमी तकिया थी। प्रतिपादुका = पावों के नीचे रखने के लिए मणि की ऊँची-ऊँची प्रतिपादुका थी। पाद = पाया। रत्नपादपीठ = रत्न का बना हुआ पैर रखने का पीढ़ा। भुक्त्वा = भोजन कर। आस्थानमण्डपम् अयासीत् = सभाभवन में आया।

शयने निषण्णः = शय्या पर बैठा हुआ, लेटा हुआ। उत्सङ्गनिहितासिलतया = गोद में तलवार रखी हुई। खड्गवाहिनी = तलवार ढोने वाली दासी। संवाह्यमानचरणः = जिसके चरण दबाये जा रहे थे। नवनलिनदलकोमलेन = नये कमल की पंखुड़ी के समान कोमल। तत्कालोचितदर्शनैः = उस समय जिनसे

हुए मेघखण्ड का अनुकरण करने वाले, फूलों की गन्ध से सुगन्धित चादर वाले रेशमी तकिये से सुशोभित सिरहाने वाले, मणि की बनी प्रतिपादुका पर स्थापित पाये वाले पलंग से उसकी वेदी सुशोभित थी।

वहाँ वह पलंग पर लेटा। भूमि पर बैठी हुई, गोद में तलवार रखे हुई खड्गवाहिनी दासी धीरे-धीरे नये कमल की पंखुड़ी के समान कोमल हाथों से

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

करसम्पुटेन संवाह्यमानचरणस्तत्कालोचित-दर्शनैरवनिपतिभिरमात्यैर्मित्रैश्च सह तास्ताः कथाः कुर्वन् मुहुर्त्तमिवासाञ्चक्रे ।

ततो नातिदूरवर्त्तिनीम् 'अन्तःपुराद् वैशम्पायनमादायागच्छत' इति समुपजाततद्वृत्तान्तप्रश्नकुतूहलो राजा प्रतीहारीमादिदेश। सा क्षितितलनिहितजानुकरतला 'यथाज्ञापयति देवः' इति शिरसि कृत्वाज्ञां यथादिष्टमकरोत्। अथ मुहूर्तादिव वैशम्पायनः प्रतीहार्या गृहीतपञ्जरः कनकवेत्रलतावलम्बिना

मिला जा सकता था। तास्ताः = उस-उस प्रकार की। अनेक प्रकार की। मुहुर्त्तम् इव = कुछ देर। आसाञ्चक्रे = बैठा रहा।

वृत्तान्तः = कथा, वार्त्ता। 'वार्त्ता प्रवृत्तिर्वृत्तान्तउदन्तः स्यात्'—अमर। तद्वृत्तान्तप्रश्नकूतूहलः = उसके वृतान्त को पूछने की उत्सुकता वाला। क्षितितलनिंहितजानुकरतला = पृथ्वी पर घुटने और हथेलियाँ रखकर। आज्ञां शिरसि कृत्वा = आज्ञा को शिर पर धारण कर। यथादिष्टम् = आदेश के अनुसार। आदिदेश = दिश् + लिट् लकार।

कनकवेत्रलतावलम्बिना = सोने की छड़ी का सहारा लिए हुए ('कञ्चुकिना' का विशेषण)। किञ्चिदवनतपूर्वकायेन = जिसके शरीर का अग्रभाग कुछ झुका

उसका चरण दबा रही थी। वह उस समय मिलने योग्य राजाओं, मंत्रियों, और मित्रों के साथ भिन्न-भिन्न वातें करते हुए कुछ समय बैठा रहा।

तब वैशम्पायन का वृतान्त पूछने के लिए कुतूहल से युक्त राजा ने कुछ दूरी पर बैठी हुई प्रतिहारी को 'अन्तःपुरः से वैशम्पायन को लेकर आओ' ऐसा आदेश दिया। उसने पृथ्वी पर घुटने और हथेलियाँ रखकर 'जैसी महाराज की आज्ञा' ऐसा कहकर शिर पर आज्ञा धारण कर आदेश के अनुसार किया। इसके बाद थोड़ी देर में वैशम्पायन राजा के निकट आया। प्रतिहारी उसका

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

किञ्चिदवनतपूर्वकायेन सितकञ्चुकाच्छन्नवपुषा जराधवलितमौलिना गद्गद्स्वरेण मन्दमन्दसंचारिणा विहङ्गजातिप्रीत्या जरत्कलहंसेनेव कञ्चुकिनानुगम्यमानो राजान्तिकमाजगाम। क्षितितलनिहितकरतलस्तु कञ्चुकी राजानं व्यज्ञापयत् 'देव देव्यो विज्ञापयन्ति देवादेशादेष वैशम्पायनः स्नातः कृताहारश्च देवपादमूलं प्रतीहार्या नीतः' इत्यभिधाय गते च तस्मिन् राजा वैशम्पायनम् अपृच्छत्—कच्चित् अभिमतमास्वादितमभ्यन्तरे भवता किञ्चिदशनजातम् ? इति।

था। सितकञ्चुकाच्छन्नवपुषा=श्वेत लम्बे कुर्ते से जिसका शरीर ढँका था। जराधवलितमौलिना=वृद्धावस्था से श्वेत सिर वाला। विहङ्गजाति-प्रीत्या=मानों पक्षी जाति के प्रेम से। जरत्कलहंसेन इव = बूढ़ा हंस पीछे चला आ रहा हो। राजान्तिकम् = राजा के निकट। 'जरत्कलहंसेन इव' में उपमा है।

देवादेशात्=देवस्य आदेशात्—महाराज के आदेश से। कृताहारः=भोजन कराया गया है। देवपादमूलम् = आपके चरणों के समीप। अभिमतम्=मनलायक। अभ्यन्तरे=अन्तःपुर में। असनजातम्=भोजन।

पिंजरा लिए हुए थी। सोने की छड़ी का सहारा लेने वाला, कुछ झुके हुए शरीर के अग्रभाग वाला, श्वेत कञ्चुक से ढँके शरीर वाला, वृद्धावस्था के कारण श्वेत सिर वाला, गद्गद् स्वर से युक्त, धीरे-धीरे चलता हुआ कञ्चुकी पीछे चल रहा था, मानों पक्षी जाति के प्रेम से कोई बूढ़ा हंस आ रहा हो। पृथ्वी पर हाथों को रखकर कञ्चुकी ने राजा से निवेदन किया—महाराज, रानियाँ कहती हैं कि आपकी आज्ञा से इस वैशम्पायन को स्नान और भोजन करा दिया गया है और आपके चरणों के समीप प्रतिहारी इसे लेकर आयी है। ऐसा कहकर उसके चले जाने पर राजा ने वैशम्पायन से पूछा—क्या आपने अन्तःपुर में कुछ मन लायक भोजन का स्वाद लिया।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

स प्रत्युवाच—'देव, किंवा नास्वादितम् ? आमत्तकोकिल-लोचनच्छविर्नीलपाटलः कषायमधुरः प्रकाममापीतो जम्बूफल-रसः, हरिनखरभिन्नमत्तमातङ्गकुम्भ-मुक्तरक्तार्द्र-मुक्ताफलत्वींषि खण्डितानि दाडिमबीजानि, नलिनीदलहरिन्ति द्राक्षाफलस्वादूनि च दलितानि स्वेच्छया प्राचीनामलकीफलानि। किं वा प्रलपितेन बहुना। सर्वमेव देवीभिः स्वयं करतलोपनीयमानममृतायते' इति।

प्रत्युवाच=प्रति+उवाच—उत्तर दिया। आमत्त = कुछ मतवाले। नील-पाटलः = नीले और लाल रंग का। आमत्तः कोकिलः आमत्त कोकिलः तस्य लोचनस्य छविः इव छविः यस्य सः। कषायमधुरः = कसैला और मधुर। प्रकामम् = इच्छानुसार। जम्बूफलरसः = जामुन के फल का रस। हरिनखर= सिंह के नखों। मागङ्ग = हाथी। रक्तार्द्र = रक्त से गीले। मुक्ताफलत्वींषि= मुक्ताफल की कान्ति वाले। दाडिम = अनार। नलिनीदलहरिन्ति=कमलिनी के पत्ते के समान हरे। आमलकीफलानि = आँवला के फल। किं वा बहुना प्रलपितेन = अधिक बकवास से क्या ? करतल = हथेली। उपनीयमानम् = लाया गया। अमृतायते=अमृत के समान लगता है। मुक्ताफलत्वींषि तथा 'द्राक्षा-फलस्वादूनि' में लुप्तोपमा है। अमृतायते में अमृत से क्यङ् प्रत्यय।

उसने उत्तर दिया—महाराज, मैंने क्या स्वाद नहीं पाया ? कुछ मतवाले कोयल के नेत्रों की कान्ति के समान नीले एवं लाल रंग का कसैला और मधुर लगने वाला जामुन के फल का रस इच्छानुसार पिया। सिंह के नखों से विदीर्ण मतवाले हाथी के मस्तक से निकले, रक्तसे गीले, मुक्ता फलों के रंग वाले अनार के बीज तोड़े। कमलिनी के पत्ते के समान हरे, द्राक्षाफल के समान स्वाद वाले पुराने आँवला के फल इच्छा से खाये। अधिक प्रलाप से क्या लाभ ? रानियों द्वारा अपने हाथ से लाया जाता हुआ सब कुछ अमृत जैसे लगता था।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

एवंवादिनो वदनमाक्षिप्य नरपतिरब्रवीत्—आस्तां तावत् सर्वमेवेदम् । अपनयतु नः कुतूहलम् । आवेदयतु भवानादितः प्रभृति कात्स्न्येंनात्मनः । जन्म कस्मिन् देशे ? भवान् कथं जातः ? केन वा नाम कृतम् ? का ते माता ? कस्ते पिता ? कथं वेदानामागमः ? कथं शास्त्राणां परिचयः ? कुतः कलाः समासादिताः ? किं हेतुकं जन्मान्तरानुस्मरणम् ? उत वरप्रदानम्, अथवा विहगवेशधारी कश्चिच्छन्नो निवससि ? क्व पूर्वमुषितम् ? कियद्वा वयः ? कथं पञ्जरबन्धनम् ? कथं चाण्डालहस्तगमनम् ? इह वा कथमागमनम् ? वैशम्पायनस्तु स्वमुपजात-

---

एवंवादिनः = ऐसा कहने वाले । आक्षिप्य = काटकर आ+क्षिप्+ल्यप् अपनयतु = दूर करें । आदितः प्रभृति—आरम्भ से लेकर । कात्स्न्येंन=पूर्ण रूप से । वेदानाम् आगमः=वेदों का ज्ञान । जन्मान्तरानुसमरण=दूसरे जन्म की बातों का स्मरण । विहगवेशधारी=पक्षी का वेश धारण कर, विहङ्गस्य वेष धारयति इत्येवं शीलः । उषितम्=रहे । बहुमानम् = आदर के साथ । ध्यात्वा = सोचकर महती=बड़ी । आकर्ण्यताम्=सुनिए ।

ऐसा कहने वाले शुक के वचन को टोक कर राजा ने कहा-तो यह सब कुछ रहने दें । हमारा कुतूहल दूर करें । आरंभ से लेकर अपने विषय में पूर्ण रूप से हमें बताइये । जन्म किस देश में हुआ ? आप कैसे उत्पन्न हुए ? किसने नाम रखा ? कौन आपकी माता हैं ? कौन आपके पिता हैं ? कैसे वेदों का ज्ञान हुआ ? कैसे शास्त्रों का परिचय हुआ ? कहाँ से कलाएँ प्राप्त हुई ? किस कारण दूसरे जन्म की बातें याद हैं ? क्या कोई वरदान है अथवा पक्षी का रूप धारण कर कोई और हैं जो छिपकर रह रहे हैं ? कहाँ पहले रहे ? कितनी अवस्था है ? कैसे पिंजरे में आये ? कैसे चाण्डाल के हाथ में पहुँचे ? यहाँ कैसे आना हुआ ? वैशम्पायन ने कुतूहलयुक्त राजा द्वारा आदरपूर्वक पूछे

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

कुतूहलेन सबहुमानमवनिपतिना पृष्टो मुहूर्त्तमिव ध्यात्वा सादर-मब्रवीत् देव, महतीयं कथा, यदि कौतुकमाकर्ण्यताम् ।

(अस्ति पूर्वापरजलनिधिवेलावलग्ना मध्यदेशालङ्कारभूता मेखलेव भुवः, वनकरिकुलमदजलसेकसंवर्द्धितैरतिविकचधवल-कुसुमनिकरमत्युच्चतया तारागणमिव शिखरदेशलग्नमुद्वहद्भिः

अस्ति' का सम्बन्ध वाक्य के अन्त में आये हुए विन्ध्याटवी नाम' से है। विन्ध्याटवी है। इस लम्वे अनुच्छेद में विन्ध्य के वनों की पंक्ति का वर्णन किया गया है। पूर्वापर=पूर्व और पश्चिम। जलनिधि-वेला-अवलग्ना=समुद्रों के तटों से लगी हुई। मध्यदेशालङ्कारभूता = मध्यदेश की शोभा। मेखला इव भुवः = पृथ्वी की करधनी के समान। उत्प्रेक्षालङ्कार।

वनकरि-कुल-मदजल-सेक-संवर्द्धितैः = वन के हाथियों के समूह के मदजल से सींचने से बढ़े हुए (उत्प्रेक्षा)। सेक = सींचना। (पादपैः का विशेषण) अति-विकच=अत्यन्त खिले हुए। धवलकुसुमनिकरम्=श्वेत पुष्पसमूह को। अत्युच्च-तया=बहुत ऊँचे होने के कारण। शिखरदेशलग्नम् = चोटी पर लगे हुए। तारागणम् इव=तारागण के समान। उद्वहद्भिः=धारण करने वाले पादपैः उपशोभिता=वृक्षों से शोभित थी।

जाने पर कुछ देर सोचकर विनयपूर्वक कहा-'महाराज, यह कथा वहुत वड़ी है। यदि कुतूहल है तो सुनिए।'

(विन्ध्याटवी-वर्णन)

पूर्व और पश्चिम दिशा के समुद्र-तटों से लगी हुई, मध्यदेश के आभूषण के समान और पृथ्वी की करधनी जैसी विन्ध्याटवी है। वन के हाथियों के समूह के मदजल से सींचे जाने के कारण वढ़ाये गये, अत्यन्त खिले श्वेत पुष्पसमूहों को अपने शिखर पर उन्नत होने के कारण तारागण के समान धारण करने वाले वृक्षों से वह शोभित थी। मतवाले कुरर के समूह उसमें

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

पादपैरुशोभिता, मदकलकुररकुलदश्यमानमरिचपल्लवा, करि-कलभकरमृदिततमालकिसलयामोदिनी, मधुमदोपरक्तकेरली-कपोलकोमलच्छविना सञ्चरद्वनदेवताचरणालक्तकरस-रञ्जितेनेव पल्लवचयेनसञ्छादिता, शुककुलदलितदाडिमीफलद्रवार्द्रीकृततलै-रतिचपलकपिकुलकम्पितकम्पिल्लच्युतपल्लवफलशकलैः अनवरत-निपतितकुसुमरेणुपांशुलैः पथिकजनरचितलवङ्गपल्लवसंस्तरैः

विन्ध्याटवी नाम।

मदकलकुररकुल = मतवाले कुरर नाम के पक्षियों के समूह। दश्यमान= काटे जा रहे हैं। करिकलभ = हाथी का बच्चा। मृदित-तमाल-किसलया-मोदिनी=मसले गये तमाल के पल्लव की गन्ध वाली। मधुमदोपरक्त = मधु के मद से लाल वनी। केरली = केरल देश की स्त्री। संचरद् = चलती हुई। पल्लवचयेन सञ्छादिता = पल्लवसमूह से ढँकी हुई। लुप्तोपमा, उत्प्रेक्षा।

शुककुल०—तृतीया वहुवचन वाले शब्द लतामण्डपैः के विशेषण हैं। शुकसमूह द्वारा तोड़े गये अनार के रस से गीली भूमि वाले। अतिचपल=अत्यन्त चंचल। कम्पिल्ल एक वृक्ष है। च्युतपल्पवफल-शकलैः=गिरे हुए पत्तों और फलों के टुकड़ों वाले। कुसुमरेणु पांशुलैः = फूलों के पराग से धूसरित। पथिकजनरचितलवङ्ग-पल्लव-संस्तरैः=पथिकों द्वारा बनाये गये लवङ्ग के पत्तों के बिछौने वाले। अति-कठोर=अत्यन्त घने। केतकी-करीर-बकुल-परिगत-प्रान्तैः=जिनके किनारे केतकी

मरिच के पत्ते कुतर रहे थे। वहाँ हाथियों के बच्चों के सूँड़ों से मसले गये तमाल की सुगन्ध फैली हुई थी। वह मधु के मद से लाल केरल देश की रमणियों के कपोलों की सुन्दर कान्ति जैसे पल्लवों के समूह से ऐसी ढँकी हुई थी मानों चलती हुई वनदेवियों के चरणों की महावर के रस से वे पल्लव रँग गये हों। वह लता-कुञ्जों से विराजित थी, जिन कुञ्जों के तल शुकसमूह द्वारा काटे गये अनार के रस से गीले थे, जिनमें अत्यन्त चांचल बन्दरों द्वारा हिलाये गये कम्पिल के बृक्ष से गिरे हुए पल्लवों के टुकड़े बिखरे हुए थे, जो निरन्तर गिरते हुए फूलों के पराग से भरे हुए थे, पथिकों द्वारा बनाये गये लवंग के पत्तों के बिछौने से युक्त थे,

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

अतिकठोरनारिकेलकेतकीकरीरबकुलपरिगतप्रान्तैः ताम्बूलीलतावनद्धपूगषण्डमण्डितैर्वनलक्ष्मीवासभवनैरिव विराजिता लतामण्डपैः, उन्मदमातङ्गकपोलस्थलगलितसलिलसिक्तेनेव निरन्तरमेलालतावनेन मदगन्धिनान्धकारिता, नखमुखलग्नेभकुम्भमुक्ताफललुब्धैः शबरसेनापतिभिरभिहन्यमानकेशरिशता । प्रेताधिप-

---

करीर और बकुल वृक्षों से घिरे हैं । ताम्बूलीलतावनद्ध = पान की लताओं से मिले हुए । पूगषण्ड = सुपारी के झुरमुट । लतामण्डपैः विराजिता = लतामण्डपों से शोभित । उन्मदमातङ्ग० = मतवाले हाथी के कपोल से गिरे हुए मदजल से सींचे गये के समान । यहाँ उत्प्रेक्षा है । इलायची की लताओं का गन्ध हाथियों के मदजल के गन्ध के समान था । मानों वे लताएँ मदजल से सींची गयी हों । मदगन्धिना = मद के समान गन्ध वाले । एलालतावनेन = इलायचीलताओं के बन से । अन्धकारिता = अन्धकारपूर्ण हो रही थी ।

इभकुम्भमुक्ताफल = हाथियों के मस्तक के मुक्ताफल । लुब्धैः =लोभी । अभिहन्यमान = मारे जा रहें हैं । केशरिशता = सैकड़ों सिंह । सिंहों के नखों और मुख में मुक्ताफल लगे रहते थे । उनके लोभ से शबरसेनापति उन्हें मारते थे । प्रेताधिप = यमराज । सदासन्निहितमृत्युभीषणा = (१) सदैव मृत्यु के रहने से भीषण (२) सदैव मृत्यु की आशंका होने से भीषण । महिषा-

---

अत्यन्त घनी नारियल, केतकी, करीर और वकुल की झाड़ियों से जिनके किनारे घिरे थे, जो ताम्बूल की लताओं से लिपटी सुपारी के झुरमुटों से मण्डित थे और वनलक्ष्मी के निवासगृह के समान थे । मानों मतवाले हाथियों के कपोल से गिरते हुए मदजल से सिक्त होने के कारण मद की तरह गन्ध वाले घने एला लता के बन से उसमें अन्धकार छाया था । नखों और मुखों में अटके हुए हाथी के मस्तक के मुक्ताफल के लोभी शवर-सेनापतियों द्वारा उसमें सैकड़ों सिंह मारे जा रहें थे । यमराज की नगरी जैसी निरन्तर मृत्यु के सर्वत्र उपस्थित होने से भयावह

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

नगरीव सदासन्निहितमृत्युभीषणा महिषाधिष्ठिता च, समरोद्यतपताकिनीव बाणासनारोपितशिलीमुखा विमुक्तसिंहनादा च, कात्यायनीव प्रचलितखड्गभीषणा रक्तचन्दनालङ्कृता च; कर्णीसुतकथेव सन्निहितविपुलाचला शशोपगता च, कल्पान्त-

---

धिष्ठिता = (१) यमराज के भैंसे से युक्त यमपुरी (२) भैंसों से अधिष्ठित विन्ध्याटवी । (पूर्णोपमा) ।

समरोद्यत=युद्ध के लिये प्रस्तुत । पताकिनी=सेना । 'वाणासनरोपिताशिलीमुखा' में सभंगश्लेष है (१) बाणासन = धनुष पर, आरोपित = चढ़े हैं, शिलीमुख = वाण । (२) वाणासना = बाण और असना नाम की लतायें । आरोपित = वैठे हैं । शिलीमुखाः=भौंरे । विमुक्तसिंहनादा (१) जोर से गर्जन करने वाली सेना (२) सिंहों की गर्जन ।

कात्यायनी = दुर्गा, काली । खड्ग (१) तलवार (२) गैंडा । रक्तचन्दनालङ्कृता = (१) लाल चन्दन के लेप से अलंकृत (२) लाल चन्दन के वृक्षों से अलङ्कृत । कर्णीसुतकथा इव = कर्णीसुत की कथा के समान । वृहत्कथा में कर्णीसुत की कथा है । उसके मन्त्री का नाम शश था और मित्रों के नाम विपुल और अचल थे । विन्ध्याटवी के पक्ष में विपुलाचला का अर्थ होगा— बड़ा पर्वत । शश = खरगोश ।

तथा भैंसे से युक्त रहती है वैसे ही वह मृत्यु के सर्वत्र उपस्थित होने से भयावह तथा भैसों से युक्त थी । युद्ध के लिए प्रस्थान करने वाली सेना में जैसे धनुषों के ऊपर बाण रहते हैं और सिंहनाद होता है उसी प्रकार विन्ध्यावटी में वाण और असना नाम की लताओं पर भौंरे थे तथा सिंहों का उच्च गर्जन होता था। दुर्गा जैसे अपनी चलती हुई तलवार के कारण भीषण और लाल चन्दन से अलंकृत होती है वैसे ही वह घूमते हुए खड्गों (गैंडों) के कारण भीषण और लाल चन्दन के वृक्षों से अलंकृत थी । कर्णीसुत की कथा में जैसे विपुल और अचल होते हैं तथा शश नाम का मन्त्री होता है वैसे ही उसके निकट में बड़ा पर्वत था और

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

प्रदोषसन्ध्येव प्रनृत्यन्नीलकण्ठा पल्लवारुणा च, अमृतमथनवेलेव श्रीद्रुमोपशोभिता वारुणीपरिगता च, प्रावृडिव घनश्यामला अनेकशतह्रदालङ्कृता च, चन्द्रमूर्तिरिव सततमृक्षसार्थानुगता हरिणाध्यासिता च, राज्यस्थितिरिव चमरमृगवालव्यजनोपशोभिता समदगजघटापरिपालिता च, गिरितनयेव स्थाणुसङ्गता

कल्पान्त = चारों युगों का अन्त। प्रदोष = रात्रि। प्रनृत्यन्-नीलकण्ठा = जिसमें नीलकण्ठ अर्थात् शिव नृत्य करते हैं। विन्ध्याटवी के पक्ष में अर्थ होगा = जिसमें नीलकण्ठ पक्षी नाच रहे हैं। पल्लवारुणा = (१) पल्लव के समान लाल (२) पल्लवों के कारण लाल। श्रीद्रुमोपशोभिता = (१) श्री अर्थात् लक्ष्मी, द्रुम अर्थात् कल्पवृक्ष से शोभित। (२) विल्ववृक्ष से शोभित वारुणीपरिगता = (१) वारुणी नाम की सुरा (२) वरुण की दिशा अर्थात् पश्चिम तक फैली हुई।

ऋक्षसार्थानुगता = (१) ऋक्ष अर्थात् तारों के समूह से अनुगत। (२) रीछों के समूह से अनुगत। हरिणाध्यासिता = (१) हरिण से युक्त, चन्द्रमा में दिखाई पड़ने वाले धब्बे को हरिण कहा जाता हैं। (२) हरिणों से युक्त विन्ध्याटवी। राज्यस्थिति=राज्य की स्थिति। चमरमृगवालव्यजनोपशोभिता=

उसमें खरगोश रहते थे। युगों की समाप्ति की रात्रि की पूर्व सन्ध्या में जैसे नीलकण्ठ शिव नाचते हैं और वह पल्लवों के समान लाल होती है, वैसे ही विन्ध्याटवी में नीलकण्ठ नृत्य करते थे और वह पल्लवों के कारण अरुण थी। अमृत मथकर निकालने के समय जैसे समुद्रका तट लक्ष्मी और कल्पवृक्ष से शोभित था तथा वारुणी मदिरा से युक्त था वैसे ही वह भी श्रीद्रुम (बेल) से शोभित थी और वारुणी दिशा (पश्चिम) तक फैली थी। जैसे वर्षा ऋतु मेघों के कारण श्यामल और कई सौ कुण्डों से अलंकृत होती है, वैसे ही वह घनी होने से काले रंग की दिखाई पड़ती थी और उसमें कई सौ जल के कुण्ड थे। जैसे चन्द्रमा की मूर्ति का ऋक्षसार्थ (नक्षत्रों का समूह) अनुसरण करता है और उसमें निरन्तर हरिण रहता है वैसे ही उसमें रीछों के समूह घूमते थे तथा हरिण निवास करते थे। जिस प्रकार राज्यस्थिति चमरमृग के केशों से बने पंखों से शोभित,

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

मृगपतिसेविता च, जानकीव प्रसूतकुशलवा निशाचरपरिगृहीता च, कामिनीव चन्दनमृगमदपरिमलवाहिनी रुचिरागुरुतिलक-भूषिता च, सोत्कण्ठेव विविधपल्लवानिलवीजिता समदना च, बालग्रीवेव व्याघ्रनखपङ्क्तिमण्डिता गण्डकाभरणा च, पानभूमि-

---

चमरमृग के केशों के पंखों से शोभित। समदगजघटा = मतवाले हाथियों का समूह। गिरितनया = पार्वती। स्थाणु = (१) शिव (२) पेड़ों के ठूँठ। मृग-पति=सिंह।

जानकी इव=सीता के समान। प्रसूतकुशलवा (१) उत्पन्न किया है कुश और लव को जिसने (२) उत्पन्न हैं कुश के लव=अंकुर जिसमें। निशाचर=(१) रावण राक्षस (२) रात्रि में घूमने वाले पशु पक्षी। सोत्कण्ठा=उत्कण्ठा से युक्त, प्रिय से मिलने के लिए व्याकुल नायिका। समदना=(१) कामभावना से युक्त (२) मदन नाम के वृक्षों से युक्त। बालग्रीवा = बच्चों की गर्दन। गण्डक=(१) तावीज (२) गैंडा।

पानभूमि=मदपान का स्थान, मदिरालय। मधुकोशक = [1] मद पीने के

मतवाले हाथियों के समूह से सुरक्षित होती है वैसे ही वह चमरमृग के केशरूपी पंखों से शोभित थी तथा मतवाले हाथियों के समूह से परिपालित थी। शिव के साथ रहने वाली तथा सिंह द्वारा सेवित पार्वती के समान वह ठूँठ वृक्षों से युक्त तथा सिंहों द्वारा सेवित थी। कुश और लव को उत्पन्न करने वाली, राक्षस के द्वारा पकड़ी गयी सीता के समान उसमें भी कुश के अंकुर उत्पन्न थे और रात्रि में विचरण करने वाले जीव थे। चन्दन- कस्तूरी की गन्ध वाली सुन्दर अगुरु की बिन्दी लगाने वाली कामिनी के समान वह चन्दन और कस्तूरी की गन्ध से व्याप्त थी तथा सुन्दर अगुरु तथा तिलक के वृक्षों से युक्त थीं। जिस प्रकार पति के लिए उत्कण्ठित नायिका पर विविध पल्लवों की हवा की जाती है और वह मदनयुक्त होती है उसी प्रकार उसमें विविध पल्लवों की हवा हो रही थी और मदन नामके वृक्ष थे। जैसे वच्चे की गर्दन बाघके नखों की पंक्ति से मण्डित और गण्डक (तावीज) के आभूषण से युक्त होती हैः वैसे उसमें व्याघ्रों के नखों की पंक्तियाँ थीं और गैंडे ही आभूषण थे। जैसे मदपान के

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

रिव प्रकटितमधुकोशकशता प्रकीर्णविविधकुसुमा च, क्वचिद् प्रलयवेलेव महावराहदंष्ट्रासमुत्खातधरणिमण्डला, क्वचिद् दशमुखनगरीव चटुलवानरवृन्दभज्यमानतुङ्गशालाकुला, क्वचिद्चिरनिर्वृत्तविवाहभूमिरिव हरित्कुशसमित्कुसुमशमीपलाशशोभिता, क्वचिदुन्मत्तमृगपति—नाद—भीतेव कण्टकिता, क्वचिन्मत्तेव कोकिलकुलकलप्रलापिनी, क्वचिदुन्मत्तेव

पात्र, प्याले। (२) मधु के छत्ते। प्रकीर्ण-विविधकुसुमा = जिसमें विविध प्रकार के फूल बिखरे हुए हैं। प्रलयवेला इव=प्रलयकाल के समान। महावराह-दंष्ट्रासमुत्खातधरणिमण्डला=(१) आदि वराह के दाँतों से पृथ्वी मण्डल खोदकर निकाला गया है। प्रलयकाल में पृथ्वी जल के भीतर डूबी हुई थी जिसे वराह रूप धारण कर भगवान् ने निकाला था (२) विन्ध्याटवी में भी बड़े-बड़े सूअरों के दाँतों से भूमि खोदी गयी है।

दशमुख = रावण। चटुल=चंचल। भज्यमान = तोड़े जाते हुए। शालाकुला (१) शाला अर्थात् भवनों से भरी हुई (२) शाल+आकुला अर्थात् टूटे हुए शाल नाम के वृक्षों से भरी। अचिरनिर्वृत्त = तत्काल सम्पन्न। समिध = समिधाएँ। कण्टकिता = (१) रोमांचयुक्त (२) काँटों से भरी। मानो वह मतवाले सिंहों के नाद से डर गयी हो। (उत्प्रेक्षालंकार)। मत्ता इव

स्थान पर सैकड़ों मधु-कोशक पात्र होते हैं और विविध पुष्प बिखरे होते हैं वैसे ही उसमें सैकड़ों मधु के छत्ते दिखाई देते थे और विविध प्रकार के पुष्प बिखरे थे। कहीं पर जैसे प्रलय की वेला में महावराह के दाँतों से पृथ्वी उखाड़ी जाती है वैसे ही बड़े सूअरों ने धरती खोद रखी थी। कहीं जैसे रावण की नगरी में चंचल वानरसमूह ऊँचे भवनों को तोड़ रहे थे वैसे ही वानर-समूह ऊँचे शाल के वृक्ष तोड़ रहे थे। कहीं जैसे तत्काल सम्पन्न विवाह के मण्डप में हरे कुश, समिध्, पुष्प, शमी और पलाश शोभित होते हैं वैसे ही हरे कुश, समिध्, पुष्प, शमी और पलाश वृक्ष शोभा पा रहे थे। कहीं मत्तसिंह

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

वायुवेगकृततालशब्दा, क्वचिद्विधवेव उन्मुक्ततालपत्रा, क्वचित् समरभूमिरिव शरशतनिचिता, क्वचिदमरपतितनुरिव नेत्र-सहस्र-सङ्कुला, क्वचिन्नारायणमूर्तिरिव तमालनीला, क्वचित् पार्थरथपताकेव वानराक्रान्ता,

---

= मतवाली स्त्री । कोकिलाकुल-प्रलापिनी = (१) कोयलों के समान मधुर बोलने वाली । (२) कोयलों के मधुर कूक से युक्त । उन्मत्ता इव=पागल स्त्री के समान । वायुवेगकृततालशब्दा = (१) वायु के प्रकोप से तालियाँ बजाती हुई । (२) वायु के वहने से उत्पन्न ताल वृक्ष के शब्दों वाली ।

उन्मुक्ततालपत्रा (१) तालपत्र नाम का कर्णाभूषण त्यागे हुई विधवा । (२) गिरे हुए ताल के पत्तों वाली विन्ध्याटवी । शरशतनिचिता = (१) सैंकड़ों बाणों से भरी हुई (२) सैंकड़ों सरपत के झुरमुटों वाली । अमरपति = इन्द्र । नेत्र = (१) आँखें (२) नेत्र वृक्षों की जड़ें । इन्द्र को सहस्रनेत्र कहते हैं । नारायणमूर्तिः = विष्णु का शरीर । तमालनीला = (१) तमाल के समान नीले रंग की (२) तमाल वृक्षों के कारण नीले रंग की । पार्थ=अर्जुन । वानराक्रान्ता = (१) वानर अर्थात् हनुमान से युक्त । अर्जुन के रथ की पताका पर हनुमान की आकृति बनी थी । (२) वानरों से आक्रांत, विन्ध्याटवी में वानर भरे हुए थे ।

के गर्जन से डरी हुई रोमांचयुक्त स्त्री के समान वह काँटों से भरी हुई थी । कहीं जैसे मत्त स्त्री कोयल के समान मधुर प्रलाप करती है वैसे कोयलों के मधुर प्रलाप से गूँज रही थी । कहीं जैसे पागल स्त्री वायु के प्रकोप के कारण तालियों का शब्द करती है, वैसे उसमें वायु के झोकों से ताल के वृक्षों में शब्द होता था । कहीं तालपत्र आभूषण त्यागने वाली विधवा के समान उसमें ताल के पत्ते गिरे हुए थे । कहीं जैसे युद्ध-भूमि सैकड़ों बाणों से भरी होती है वैसे ही सैकड़ों सरपत के झुरमुटों से भरी थी । कहीं जैसे इन्द्र के शरीर में सहस्रनेत्र होते हैं वैसे ही उसमें सहस्रों नेत्र की जड़ें थीं । कहीं जैसे विष्णु का शरीर तमाल के समान नीला होता है वैसे ही वह तमाल वृक्षों के कारण नीली दिखाई पड़ती थी । कहीं जैसे अर्जुन के रथ की पताका पर वानर अर्थात् हनुमान रहते हैं वैसे ही वह वानरों से आक्रान्त थी । कहीं जैसे राजद्वार की भूमि सैकड़ों बेंत के डण्डे के

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

क्वचिदवनिपतिद्वारभूमिरिव वेत्रलताशतदुष्प्रवेशा, क्वचि-द्विराटनगरीव कीचकशतावृता, क्वचिदम्बरश्रीरिव व्याधानुगम्य-मान-तरलतारकमृगा, क्वचिद् गृहीतव्रतेव दर्भचीरजटा-वल्कल-धारिणी, अपरिमित-बहल-पत्रसञ्चयाऽपि सप्तपर्णभूषिता, क्रूर--

---

अवनिपतिद्वारभूमिः = राजा के महल का द्वार। वेत्रलता (१) छड़ी, डंडे (२) वेंत की लतायें। दुष्प्रवेशा = कठिनाई से प्रवेश करने योग्य। कीचक शतावृता = (१) कीचक राजा विराट का साला था, द्रौपदी से छेड़खानी करने के कारण भीम ने उसका वध किया था। जैसे विराट की नगरी कीचक और उसके सैकड़ों बान्धवों से व्याप्त थी वैसे ही विन्ध्याटवी में सैकड़ों (२) कीचक = छिद्रयुक्त बाँस थे।

व्याधानुगम्यमानतरलतारकमृगा = (१) व्याध रूपधारी शिव के द्वारा चंचल तारे मृगशिरा का अनुगमन किया जा रहा है। (२) व्याधों द्वारा चंचल पुतलियों वाले मृगों का पीछा किया जा रहा है। अम्बरश्रीः = आकाश की शोभा। गृहीतव्रता इव = व्रत धारण करने वाली स्त्री के समान। दर्भचीर-जटावल्कलधारिणी = कुश, फटा वस्त्र, जटायें और वल्कल पहनने वाली—गृहीत व्रत के पक्ष में। विन्ध्याटवी के पक्ष में—कुशों, फटे वस्त्रों, वृक्ष की जटायें और वल्कल धारण करने वाली।

अपरिमितबहलपत्रसंचया अपि=अपार असंख्य पत्रों (पत्तों) के समूह से युक्त होने पर भी। सप्तपर्णभूषिता=सप्तपर्ण के वृक्षों से सुशोभित। सप्तपर्ण का अर्थ सात पत्ते

कारण कठिनाई से प्रवेश योग्य होती है वैसे ही सैकड़ों वेत्र की लताओं के कारण दुर्गम थी। कहीं जैसे विराट की नगरी कीचक के सैकड़ों वन्धु-बान्धवों से युक्त थी वैसे ही छेद वाले सैकड़ों कीचक बाँसों से भरी थी। कहीं जैसे अकाश की शोभा में व्याध रूपधारी शिव द्वारा चंचल तारे मृगशिरा का पीछा किया जाता है वैसे ही व्याध चंचल पुतलियों वाले मृगों का पीछा कर रहे थे। कहीं जैसे व्रतधारिणी स्त्री कुश, जीर्ण वस्त्र, जटा और वल्कल धारण करती है, वैसे उसमें कुश, फटे हुए वस्त्र, वृक्षों की जटाएँ और वल्कल थे। असंख्य पत्तों के समूह से युक्त होने पर भी सप्तपर्ण से विभूषित थी, क्रूर जीवों वाली होने पर भी मुनिगण उसका

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

सत्त्वाऽपि मुनिजनसेविता, पुष्पवत्यपि पवित्रा विन्ध्याटवी नाम ।

(तस्याञ्च दण्डकारण्यान्तःपाति सकलभुवन-विख्यातम् उत्पत्तिक्षेत्रमिव भगवतो धर्मस्य, सुरपतिप्रार्थनापीतसकलसागर-सलिलस्य मेरुमत्सरादम्बरतल-प्रसारित शिरःसहस्रेण दिवसकर-

---

लेने पर विरोधाभास अलंकार है : क्रूरसत्वा अपि = (१) क्रूरहृदय वाली (२) क्रूर जीवों वाली होने पर भी। पहला अर्थ लेने पर विरोध की प्रतीति होती है किन्तु दूसरा अर्थ लेने पर विरोध का परिहार हो जाता है। मुनिजन-सेविता = मुनियों द्वारा सेवित। पुष्पवती = (१) रजस्वला (२) फूलों से परि-पूर्ण। यहाँ भी पहला अर्थ लेने पर विरोध होता है किन्तु दूसरा अर्थ लेने पर विरोध दूर हो जाता है।

तस्याम् = उस विन्ध्याटवी में। दण्डकारण्यान्तःपाति = दण्डकारण्य के भीतर पड़नेवाला (यह वाक्य के अन्त में आये हुए 'आश्रमपदम्' का विशेषण है और नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन वाले शब्द 'आश्रमपदम्' के ही विशेषण हैं।) सुरपति-प्रार्थना-पीत-सकल-सागर-सलिलस्य = इन्द्र की प्रार्थना से सम्पूर्ण समुद्र का जल पीने वाले। (अगस्त्य का विशेषण है। षष्ठी एकवचन वाले सभी शब्द अगस्त्य के विशेषण हैं। कालेय नाम के असुर समुद्र में छिपकर रहते थे। इन्द्र की प्रार्थना पर अगस्त्य ने समुद्र का जल पी लिया था जिससे इन्द्र उन असुरों का बध कर सका था।

सेवन करते थे। और पुष्पवती (१. रजस्वला २. फूलों से भरी) होने पर भी पवित्र थी।

(अगस्त्य के आश्रम का वर्णन)

उसमें दण्डकारण्य के अन्तर्गत, सम्पूर्ण लोक में प्रसिद्ध, भगवान् धर्म के उद्भव स्थान के समान महामुनि अगस्त्य का आश्रमस्थान था। उन अगस्त्य ने इन्द्र की प्रार्थना से सम्पूर्ण समुद्र का जल पी लिया था। मेरु के साथ द्वेष के कारण आकाश में फैलायी गयी सहस्रों चोटियों से

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

रथगमन-पथसपनेतुमभ्युद्यतेन अवगणितसकलसुरवचसा विन्ध्य-गिरिणाप्यनुल्लङ्घिताज्ञस्य जठरानल-जीर्ण-वातापिदानवस्य सुरासुर-मुकुटमकरपत्रकोटि-चुम्बितचरणरजसो दक्षिणाशावधू-

---

मेरुमत्सरात् = मेरु पर्वत के साथ द्वेष के कारण। अम्बरतलप्रसारित शिरःसहस्रेण = आकाश से अपनी सहस्रों चोटियाँ फैलाने वाले (विन्ध्य पर्वत का विशेषण)। पथम् अपनेतुम् = मार्ग रोकने के लिए। अवगणित-सकल-सुर वचसा=सभी देवों के वचनों को न मानने वाले। विन्ध्यगिरिणा अपि अनुल्ल-ङ्घिताज्ञस्य=विन्ध्य पर्वत के द्वारा भी जिसकी आज्ञा नहीं भंग की गयी। कथा है कि जब विन्ध्य पर्वत ने सूर्य का रथ रोकने के लिए ऊँचे शिखर फैला दिये तव संसार में अन्धकार हो गया। देवों के आग्रह पर जव अगस्त्य उसके निकट पहुँचे तो उसने झुककर प्रणाम किया। अगस्त्य ने कहा कि जब तक मैं दक्षिण से लौटकर नहीं आता, तव तक झुके रहो। आज भी विन्ध्य पर्वत उनकी आज्ञा का पालन कर रहा है।

जठरानल = पेट की अग्नि से। जीर्णवातापिदानवस्य = जला दिया है वातापि दानव को जिसने। इल्वल और वातापि दो राक्षस थे जो साधु के कपटवेश में रहते थे। इल्वल साधुओं को अतिथि वनाता और भेड़ का रूप धारण करने वाले वातापि का मांस खिलाता था। रात को इल्वल जब अपने भाई वातापि को बुलाता तो वह साधुओं का पेट फाड़कर निकल आता। अगस्त्य को जव इन दोनों की दुष्टता की वात ज्ञात हुई तो वे भी इल्लव के अतिथि वने और उन्होंने वातापि को अपनी जठराग्नि में जला दिया।

सुरासुर० = देवों और असुरों के मृकुटों के मकरपत्रों के किनारे से जिनकी चरणधूलि का चुम्बन किया जाता है। दक्षिणाशावधू = दक्षिण दिशा

सूर्य के रथ के चलने के मार्ग को रोकने के लिए तत्पर तथा सभी देवों के वचनों को न सुनने वाले विन्ध्य पर्वत के द्वारा भी उनकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं किया गया। उन्होंने अपनी जठराग्नि में वातापि दानव को जला दिया था। देवों और असुरों के मुकुट के मकरपत्र के किनारों से उनके चरणों की धूलि का स्पर्श किया जाता था, वे दक्षिण दिशा रूपी वधू के

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

मुखविशेषकस्य सुरलोकादेकहुङ्कार-निपातितनहुषप्रकटप्रभावस्य भगवतो महामुनेरगस्त्यस्य, भार्यया लोपामुद्रया स्वयमुपरचितालवालकैः करपुटसलिलसेकसंवर्द्धितैः सुतनिर्विशेषैरुपशोभित पादपैः, तत्पुत्रेण च गृहीतव्रतेनाषाढिना, पवित्रभस्मविरचितत्रिपुण्ड्रकाभरणेन, कुशचीवरवाससा, मौञ्जमेखलाकलितमध्येन, गृहीतहरितपर्णपुटेन प्रत्युटजमटता भिक्षां, दृढदस्युनाम्ना-

---

रूपी वधू। मुखविशेषकस्य—मुख पर तिलक के समान। सुरलोकात्० = देव लोक से एक हुङ्कार से नहुष को गिराने से जिनका प्रभाव प्रकट है। इन्द्र को वृत्रहत्या के बाद जब ब्रह्म हत्या पाप लगा तो राजा नहुष इन्द्रपद प्राप्त करके महर्षियों को कहार बनाकर पालकी में बैठकर इन्द्राणी से विवाह करने चला। वह 'सर्प-सर्प' कहकर उन्हें जल्दी चलने को कह रहा था। भृगुऋषि की जटा में अगस्त्य छपे थे। जब उसने भृगु के ऊपर लात चलाया तो अगस्त्य ने उसे सर्प हो जाने का शाप दिया।

भार्या=पत्नी। लोपामुद्रया=लोपामुद्रा द्वारा। अगस्त्य की पत्नी का नाम लोपामुद्रा था। स्वयमुपरचितालवालकैः=स्वयं जिनके थाले बनाये गये हैं। करपुट=हथेली। सुतनिर्विशेष=पुत्रों के समान। आषाढिना=पलाश का दण्ड धारण करने वाले। त्रिपुण्ड्रकाभरण=त्रिपुण्ड्र का चिह्न। कुशचीवरवासस=कुश की चटाई पहनने वाले। मौञ्जमेखलाकलितमध्येन = मूँज की करधनी से जिनकी कटि शोभित थी। गृहीतहरितपर्णपुटेन=हरे रंग के पत्तों

मुख पर तिलक के समान हैं और उन्होंने देवलोक से एक बार हुङ्कार कर नहुष को गिराकर अपना प्रताप प्रकट किया है। उनकी पत्नी लोपामुद्रा द्वारा जिनके आलवाल स्वयं बनाये गये हैं ऐसे पुत्रों जैसे वृक्षों से वह आश्रम शोभित था। ब्रह्मचर्य धारण करने वाले, पलाश का दण्ड रखने वाले, पवित्र भस्म से त्रिपुण्ड्र का तिलक लगाने वाले, कुश और चीवर पहनने वाले, मूँज की मेखला से शोभित कटिवाले, हरे पत्तों का दोना लेकर

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

पवित्रीकृतम् अतिप्रभूतेध्माहरणाच्च यस्येध्मवाह इति पिता द्वितीयं नाम चकार, दिशि दिशि शुकहरितैश्च कदलीवनैः श्यामलीकृतपरिसरं, सरिता च कलसयोनिपरिपीतसागरमार्गानुगतयेव बद्धवेणिकया गोदावर्या परिगतमाश्रमपदमासीत्।

यत्र च दशरथवचनमनुपालयन्नुत्सृष्टराज्यो दशवदनलक्ष्मीविभ्रमविरामो रामो महामुनिमगस्त्यमनुचरन् सह सीतया

का दोनों लेकर। प्रत्युटजम् = प्रत्येक कुटी में। भिक्षाम् अटता = भिक्षा माँगने वाले। दृढ़दस्युनाम्ना = दृढ़दस्यु नाम वाले द्वारा। अगस्त्य के पुत्र का नाम दृढ़दस्यु था। अतिप्रभूतेध्माहरणात् = बहुत अधिक ईन्धन लाने के कारण। शुकहरितैः = शुकों के समान हरे। श्यामलीकृतपरिसरम = जिसके चारों ओर का भाग श्यामवर्ण का हो गया था। कलसयोनिः = अगस्त्य। अगस्त्य द्वारा पिये गये समुद्र का मानों अनुसरण करती हुई। बद्धवेणिकया = जल की धारा बाँधी हुई, एक वेणी धारण करने वाली। परिगतम् = घिरा हुआ।

अनुपालयन् = पालन करते हुए। उत्सृष्टराज्यः = राज्य का परित्याग करने वाले। दशवदन = रावण। लक्ष्मी = समृद्धि। विभ्रमविरामः = विलास को समाप्त करने वाले। अनुचरन् = सेवा करते हुए। लक्ष्मणोपरचित-रुचिर-पर्णशालः = लक्ष्मण द्वारा जिनकी सुन्दर कुटी बनायी गयी है।

प्रत्येक कुटी में भिक्षा माँगने वाले दृढदस्यु नाम के उनके पुत्र द्वारा, जिनका पिता ने बहुत अधिक इंधन बटोर कर लाने से इध्मवाह दूसरा नाम रखा था, वह आश्रम पवित्र था। सभी दिशाओं में शुकों के समान हरितवर्ण के केलों के वन से उसके किनारे श्यामवर्ण के थे और मानो अगस्त्य द्वारा पी लिए गये समुद्र को ढूँढती हुई एक वेणी के समान बहने वाली गोदावरी नदी से घिरा हुआ था।

जहाँ दशरथ के वचन का पालन करते हुए राज्य का परित्याग करने वाले, रावण की राज्यलक्ष्मी का विलास समाप्त करने वाले राम ने,

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

लक्ष्मणोपरचित-रुचिरपर्णशालः पञ्चवट्यां कञ्चित् कालं सुखमुवास । [चिरशून्येऽद्यापि यत्र शाखानिलीननिभृत-पाण्डु-कपोतपङ्क्तयो लग्नतापसाग्निहोत्रधूमराजय इव लक्ष्यन्ते तरवः । बलिकर्मकुसुमान्युद्धरन्त्याः सीताया करतलादिव सङ्क्रान्तो यत्र रागः स्फुरति लताकिसलयेषु । यत्र च पीतोद्गीर्णजलनिधिजल-मिव मुनिना निखिलमाश्रमोपान्तवर्त्तिषु विभक्तं महाह्रदेषु ।

शाखानिलीन=शाखाओं में छिपे । निभृत=शान्त, चुप । जिनकी शाखाओं में शान्त कबूतरों की पंक्तियाँ छिपी हुए बैठी हैं । लग्न-तापसाग्निहोत्र-धूमराजयः इव = मानों उनमें तपस्वियों के अग्निहोत्र के धुएँ की पंक्तियाँ अटकी हुई हों । राजि=पंक्ति । बलिकर्म्म=पूजा कर्म । कुसुमानि उद्धरन्त्यः=फूल तोड़ने वाली । सीतायाः करतलात् इव संक्रान्तः=मानों सीता की हथेली से निकली हुई । लताओं के पल्लव की लालिमा के विषय में उत्प्रेक्षा की गयी है कि वह मानों सीता की हथेली से निकली हो । राग=लालिमा ।

पीतोद्गीर्ण=पीकर उगला गया । जलनिधि-जलम्=समुद्र का जल । आश्रमोपान्तवर्त्तिषु=आश्रम के निकट में विद्यमान । महाह्रदेषु=बड़े कुण्डों में । विभक्तम्-बाँट दिया गया । निशित=तीक्ष्ण ।

जिनके लिए लक्ष्मण ने सुन्दर कुटी बनायी थी, सीता के साथ पञ्चवटी में कुछ समय सुखपूर्वक निवास किया । बहुत दिनों से सूना होने पर भी आज भी जहाँ शाखाओं में छिपे हुए शान्त कबूतर की पंक्ति वाले वृक्ष ऐसे दिखायी देते हैं जैसे उनमें तपस्वियों के अग्निहोत्र हवन के धुएँ की पंक्ति लगी हुई हो । पूजन कर्म के लिए फूल तोड़ने वाली सीता के हाथों से निकली हुई-सी जहाँ लालिमा लताओं के पल्लवों में दिखायी पड़ती है । जहाँ मानों पीकर उगले गये सम्पूर्ण समुद्र के जल को अगस्त्य मुनि ने आश्रम के निकट में विद्यमान बड़े कुण्डों में बाँट दिया हो, और

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

यत्र च दशरथसुतनिशितशर-निकर-निपात-निहत-रजनीचर-बलबहलरुधिरसिक्तमूलमद्यापि तद्रागानुविद्धनिर्गत-पलाशमिवाभाति नवकिसलयमरण्यम् ।

अधुनापि यत्र जलधरसमये गम्भीरमभिनव-जलधर-निवह-निनादमाकर्ण्य भगवतो रामस्य त्रिभुवनविवरव्यापिनश्चापघोषस्य स्मरन्तो न गृह्णन्ति शष्पकवलमजस्रमश्रु-जल-लुलित-दीनदृष्टयो वीक्ष्य शून्या दश दिशो जराजर्ज्जरित-विषाणकोटयो जानकी-संवर्द्धिता जीर्णमृगाः । यस्मिन्ननवरतमृगया-निहत-शेषवनहरिण-

---

रजनीचर=राक्षस । बल=सेना । बहल=अधिक । तद्रागानुबिद्ध=उसकी लालिमा से युक्त होकर । निर्गतपलाशम् इव=मानों उसमें पल्लव निकले हों । उत्प्रेक्षा की गयी है कि मानों राम ने वन के वृक्षों की जड़ें राक्षसों के रक्त से सींची थीं अतः उस रक्त की लालिमा से युक्त होकर लाल रंग के पल्लव निकले हैं ।

जलधरसमये = वर्षाकाल में । अभिनव = नये । जलधरनिवह = मेघों का समूह । आकर्ण्य=सुनकर । त्रिभुवन-विवर-व्यापिनः = तीनों लोकों के भीतर व्याप्त होने वाला । चापघोषस्य=धनुष के शब्द का । शष्पकवलम्= घास का कौर । अजस्रम् = निरन्तर । अश्रुजल = आँसू । लुलितदीनदृष्टयः= भरी हुई कातर दृष्टि वाले । वीक्ष्य = देखकर । जराजर्जरित-विषाणकोटयः= वृद्धावस्था से टूट गये हैं सींगों के अग्रभाग जिनके । जरा = वृद्धावस्था ।

जहाँ मानों दशरथपुत्र राम के तीक्ष्ण बाण-समूहों के प्रहार से मारी गयी राक्षसों की सेना के प्रचुर रुधिर से जड़ों के सींचे जाने के कारण उसी की लालिमा से युक्त होकर निकले हुए पल्लवों से नये पल्लवों वाला वन सुशोभित है ।

आज भी जहाँ वर्षाकाल में नये मेघसमूह का गम्भीर निनाद सुनकर, भगवान् राम के तीनों लोक में फैलने वाले धनुष के शब्द को याद कर, निरन्तर आँसुओं से भरी हुई दीन दृष्टि वाले, दसों दिशाओं को सूनी देखकर, वृद्धावस्था में टूटी हुई सींगों के अग्रभाग वाले, जानकी द्वारा

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by/of-IKS
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc No. 5082

प्रोत्साहित इव कृतसीताविप्रलम्भः कनकमृगो राघवमतिदूरं जहार ।

यत्र मैथिलीवियोगदुःखदुःखितौ दशवदन-विनाशपिशुनौ चन्द्रसूर्याविव कबन्धग्रस्तौ समं रामलक्ष्मणौ त्रिभुवनभयं महच्चक्रतुः । अत्यायतश्च यस्मिन् दशरथसुतशरनिपातितो योजनबाहोर्बाहुरगस्त्यप्रसादनागत-नहुषाजगर-कायशङ्कां चकार ऋषिगणस्य ।

विषाण=सींग । जानकीसंवर्द्धिता=सीता द्वारा बढ़ाये गये । जीर्णमृगाः=बूढ़े मृग । अनवरत० =मानों निरन्तर शिकार में मारने से बचे बन के हरिणों द्वारा उत्साहित किया गया । कृतसीताविप्रलम्भः =सीता का वियोग उत्पन्न करने वाला । कनकमृगः=सोने का मृग ।

दशवदन-विनाशपिशुनौ=रावण के विनाश को बताने वाला । चन्द्रसूर्यौ इव=चन्द्रमा और सूर्य के समान । कबन्धग्रस्तौ=राहु द्वारा ग्रसे गये (चन्द्र सूर्यौं का विशेषण) । समम् =समान । त्रिभुवनभयं महत् चक्रतुः=तीनों लोकों में महान् भय उत्पन्न किया । अत्यायतः=अत्यन्त बड़ी । योजनबाहु नाम का राक्षस था जिसकी भुजा राम ने काटी थी । अगस्त्यप्रसादन०= अगस्त्य को प्रसन्न करने लिए आये हुए नहुष अजगर के शरीर की शंका उत्पन्न करती थी ।

पाले-पोसे गये बूढ़े मृग घास का कौर नहीं ग्रहण करते हैं । जिनमें मानो निरन्तर आखेट में मारने से बचे हुए वन के मृगों द्वारा प्रेरित किया गया तथा सीता का वियोग उत्पन्न करने वाला सोने का मृग राम को बहुत दूर ले गया था ।

जहाँ सीता के वियोग के दुःख से दुःखी, रावण के विनाश को घोषित करने वाले राहु द्वारा ग्रसे गये चन्द्रमा और सूर्य के समान कबन्ध द्वारा ग्रसे गए राम-लक्ष्मण ने तीन लोकों में महान् भय उत्पन्न किया । जिसमें राम के बाणों से काटी गयी योजनबाहु की बहुत बड़ी भुजा ऋषिगण के मन में अगस्त्य को प्रसन्न करने के लिए आए हुए नहुष अजगर के शरीर की शंका उत्पन्न करती थी ।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi
ACC No — 5082

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

जनकतनया भर्त्रा विरहविनोदनार्थमुटजाभ्यन्तरलिखिता यत्र रामनिवासदर्शनोत्सुका पुनरिव धरणीतलादुल्लसन्तीव वनचरैरद्याप्यालोक्यते ।

२५|२

तस्य चैवंविधस्य सम्प्रत्यपि प्रकटोपलक्ष्यमाणपूर्ववृत्तान्तस्यागस्त्याश्रमस्य नातिदूरे जलनिधिपानकुपितवरुणोत्साहितेन अगस्त्यमत्सरात्तदाश्रमसमीपवर्त्त्यपर इव वेधसा महाजलनिधि-

---

जनकतनया = सीता । भर्त्रा=पति द्वारा । विरह-विनोदनार्थम्=विरह के दिन बिताने के लिए । उटजाभ्यन्तरलिखिता=कुटी के भीतर चित्रित की गयी । रामनिवास-दर्शनोत्सुका इव=मानों राम के निवासस्थान को देखने के लिए उत्सुक होकर । धरणीतलात्=पृथ्वी से । उल्लसन्ति इव=मानों निकलती हुई । वनचरैः=वनवासियों द्वारा । आलोक्यते = देखी जाती है ।

एवंविधिस्य=इस प्रकार के । सम्प्रत्यपि=आज भी । प्रकटोपलक्ष्यमाण= स्पष्ट दिखाई पड़ रहे हैं । नातिदूरे=कुछ दूर पर । जलनिधिपान-कुपित-वरुणोत्साहितेन = समुद्र पी लेने के कारण क्रुद्ध वरुण द्वारा उकसाये गये (वेधसा का विशेषण) । अगस्त्यमत्सरात्=अगस्त से वैर के कारण । तदाश्रम-

---

सीतापति राम द्वारा विरह के दिन बिताने के लिए कुटी के भीतर चित्रित की गयी सीता को वनवासी आज ऐसे देखते हैं मानों वह राम का निवास-स्थान देखने के लिए उत्सुक होकर पुनः पृथ्वी से निकल रही है ।

(पम्पा का वर्णन)

और इस प्रकार के अगस्त्य के उस आश्रम के, जहाँ आज भी प्राचीन वृत्तान्तों के लक्षण स्पष्ट रूप से दिखायी पड़ रहे हैं, कुछ दूर पर पम्पा नाम का कमलों से भरा हुआ सरोवर था । वह ऐसा था मानों अगस्त्य द्वारा समुद्र पी लेने से कुपित वरुण के द्वारा प्रेरित ब्रह्मा ने उनसे द्वेष के

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

रुत्पादितः प्रलयकालविघटिताष्टदिग्भागसन्धिबन्धं गगनतलमिव भुवि निपतितम्, आदिवराहसमुद्धृतधरामण्डलस्थानमिव सलिलपूरितम्, अनवरतमज्जदुन्मद-शबरकामिनी-कुचकलस-लुलितजलम् उत्फुल्लकुमुद-कुवलयकह्लारम्, उन्निद्रारविन्द-मधुबिन्दुबद्धचन्द्रकम् अलिकुलपटलान्धकारितसौगन्धिकम्,

---

समीपवर्ती = उनके आश्रम के निकट में विद्यमान। अपरः महाजलनिधिः इव = मानो दूसरा महासमुद्र (पम्पासरोवर का वर्णन किया जा रहा है।) वेधसा=ब्रह्मा द्वारा। पम्पासरोवर के लिये दूसरी उत्प्रेक्षा दी गई है। प्रलय०= मानो प्रलय के समय आठों दिशाओं से जोड़ने वाले बन्धन के टूट जाने पर आकाश ही पृथ्वी पर गिर आया हो। सन्धिबन्धम्=जोड़ के बन्धन। भुवि = पृथ्वी पर। तीसरी उत्प्रेक्षा है—मानो आदि वराह ने खोदकर जो पृथ्वी निकाली उसका गड्ढा जल से भर गया हो। मज्जत् = स्नान करने वाली। शबर-कामिनी=भीलनी। कुमुदकुवलयकह्लारम्=श्वेत, लाल, नीले कमलों वाला। उन्निद्र=खिले हुए। अरविन्दमधुबिन्दुबद्धचन्द्रकम्=कमलों के मधु की बूँदों से चन्द्राकार चिह्न जल में बने हुए थे।

कारण उन्हीं के आश्रम के निकट दूसरा महान् समुद्र उत्पन्न कर दिया हो, मानों प्रलयकाल में दिशाओं के आठों सन्धिबन्धों के टूटने से आकाश ही पृथ्वी पर गिर पड़ा हो। आदिवराह द्वारा निकाली गई पृथ्वी का गड्ढा ही मानो जल से भर गया हो। निरन्तर स्नान करने वाली मतवाली भीलनियों के स्तनों से उसका जल शोभित था। उसमें कुमुद, कुवलय और कह्लार खिले थे। खिले कमलों के मधु की बूँदों से जलचन्द्रक बने रहते थे, भौंरों के समूह से सुगन्धित कमल काले बने रहते थे, मतवाले सारस बोलते रहते थे। कमल का मधु पीकर मतवाली

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

सारसित–समद–सारसम् अम्बुरुह-मधुपानमत्तकलहंसकामिनी-कृत–कोलाहलम् अनेकजलचर-पतङ्गशतसञ्चलनचलित–वाचालवीचिमालम्, अनिलोल्लासित कल्लोलशिशिर-शीकरारब्धदुर्द्दिनम् अशङ्कितावतीर्णाभिरम्भःक्रीडा-रागिणिभिः स्नान–समये वनदेवताभिः केशपाशकुसुमैः सुरभीकृतम्, एकदेशावतीर्ण–मुनिजनापूर्यमाणकमण्डलु-कलजलध्वनिमनोहरम्, उन्मिषदु-त्पलवन-मध्यचारिभिः सवर्णतया रसितानुमेयैः कादम्ब-कदम्ब-कैरासेवितम् अभिषेकावतीर्णपुलिन्दराज-सुन्दरीकुचचन्दनधूलि-

---

सारसित=शब्द कर रहे हैं। अम्वुरुह = कमल। पतङ्ग = पंखे। वाचाल वीचिमालम्=चंचल लहरों की माला वाला। कल्लोल-शिशिरशीकरारब्ध-दुर्द्दिनम् = शीतल कणों से जिसमें वर्षा आरम्भ है। दुर्द्दिन = वर्षा। शीकर = जल के कण। अम्भःक्रीडारागिणीभिः = जल में क्रीडा पसन्द करने वाली। कल=मधुर। उन्मिषत् = खिलते हुए। सवर्णतया = एक रंग का होने के कारण। रसितानुमेयैः = शब्द से पहचाने जाने वाले। कादम्व = हंस। कदम्बक=समूह। अभिषेक=स्नान। पुलिन्दराज=भीलों का सरदार।

कलहंसों की मादाओं का कोलाहल होता था। असंख्य जल के पक्षियों के सैकड़ों पंख चलने से चंचल लहरें उठती थीं। वायु द्वारा उठायी गयी लहरों के शीतल जल-कणों की फुहार से वर्षा-सी होती थी। विना शंका के घुसी हुई, जलक्रीड़ा पसन्द करने वाली वनदेवियों द्वारा स्नान के समय वह केश में बँधे पुष्पों से सुरभित किया जाता था। एक ओर उतरे हुए मुनियों द्वारा भरे जाते हुए कमण्डलुओं की मधुर ध्वनि से वह मनोहर लगता था। खिले हुए कमलों के वन में विचरण करने वाले, एक रंग का होने के कारण शब्दों से पहचाने जाने वाले हंसों के समूह से सेवित था। स्नान के लिए उतरी हुई शबरसेनापति की

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

धवलिततरङ्गम्, उपान्तजात-केतकीरजःपटल-बद्धकुलपुलिनम्, आसन्नाश्रमागततापसक्षालितार्द्रवल्कलकषायपाटलतटजलम्, उपतटविटपिपल्लवानिल-वीजितम्, अविरल—तमाल-वीथिकान्धकारिताभिः बालिनिर्वासितेन संचरता प्रतिदिनमृष्यमूकवासिना सुग्रीवेणावलुप्त-फल-लघुलताभिः, उदवासितापसानां देवतार्च्चनोपयुक्त-कुसुमाभिः, उत्पतज्जलचरपतङ्गपक्षपुटविगलित-जलबिन्दुसेकसुकुमार-किसलयाभिः, लतामण्डप—तल—शिखण्डि-

---

उपान्त = किनारे, तट पर। केतकीरजःपटल = केवड़ा के फूल का पराग। विटपि=वृक्ष। बालिनिर्वासितेन=बालि द्वारा निकाले गये। संचरता= घूमने वाले। ऋष्यमूकवासिना = ऋष्यमूक पर्वत पर निवास करने वाले। अवलुप्त=तोड़े गये। लघु = हल्की। उदवासि = जल में निवास करने वाले। देवतार्चनोपयुक्त=देवों की पूजा के योग्य। उत्पतत्=उड़ते हुए। उड़ते हुए पक्षियों के पंखों से गिरी जल की बूँदों से सींचे जाने के कारण जिसके पल्लव कोमल हैं। (वनराजिभिः का विशेषण है।) लतामण्डप० = जिसके लतामण्डपों के नीचे मयूरों के समूह नृत्य कर रहे हैं। शिखण्डी = मोर। ताण्डव=

सुन्दरियों के स्तनों में लगे चन्दन की धूलि से उसकी तरंगे धवलित थीं। किनारों पर उगी केतकी के परागसमूह से उसके कगार बन गये थे। निकटवर्ती आश्रमों से आये तपस्वियों द्वारा धोये गये वल्कलों से तट का जल कसैला लाल हो रहा था। तट पर उगे वृक्षों के पल्लवों से उस पर हवा की जा रही थी। निरन्तर तमाल की वीथिका से अन्धकारपूर्ण, बालि द्वारा निष्कासित, ऋष्यमूक पर्वत के निवासी सुग्रीव द्वारा फल तोड़ने से हल्की बनी हुई लताओं वाली, जल में रहने वाले तपस्वियों के लिए देवपूजन के योग्य पुष्पों वाली, उड़ते हुए जल के पक्षियों के पंखों से गिरी जल की बूँदों से कोमल पल्लवों वाली, लतामण्डपों के नीचे नृत्य करने वाले मयूरों वाली, अनेक प्रकार के फूलों की गन्ध लेकर लचनेवाली, वनदेवियों द्वारा अपने श्वास से सुगन्धित की गयी-सी वनपंक्तियों

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

मण्डलैरारब्धताण्डवाभिः अनेक कुसुम-परिमलवाहिनीभिर्वन-देवताभिः स्वश्वासवासिताभिरिव वनराजिभिरुपरुद्धतीरम्, अपर-सागरसङ्किभिः सलिलमादातुमवतीर्णैर्जलधरैरिव बहलपङ्कमलिनैर्वन-करिभिरनवरतापीयमानसलिलम्, अगाधमनन्तमप्रतिमम् अपां निधानं पम्पाभिधानं पद्मसरः ।

नृत्य । परिमल=पराग । वनदेवताभिः स्वश्वासवासिताभिः इव=मानों वनदेवियों ने अपने श्वास से सुगन्धित किया हो । वनराजिभिः = वनपंक्तियों से । उपरुद्धतीरम्=उसका तट घिरा हुआ था ।

अपरसागरशङ्किभिः=दूसरे समुद्र की शंका करने वाले । आदातुम् = लेने के लिए । अवतीर्णैः=उतरे हुए । बहलपंकमलिनैः=अधिक कीचड़ से मटमैले । बनकरिभिः=वन के हाथियों द्वारा । वन के हाथी ऐसे लगते थे मानों मेघ ही जल लेने आ गये हों । अप्रतिमम् = अद्वितीय । अपां निधानम् = जल का आगार । पम्पाभिधानम्=पम्पा नाम का । पद्मसरः=कमलों वाला सरोवर था ।

से उसका तीर घिरा हुआ था । दूसरे समुद्र की शंका कर जल ग्रहण करने के लिए उतरे हुए मेघों के समान प्रतीत होने वाले अत्यधिक कीचड़ से मलिन बने हुए वन के हाथियों द्वारा उसका जल निरन्तर पिया जाता था । वह अगाध, अनन्त और अप्रतिम जल का निधान था ।

पम्पासरोवर वर्णन समाप्त

—: ० :—

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

'कादम्बरी' से

परीक्षा में पूछे गये प्रश्न

१—गद्य-लेखन की दृष्टि से बाणभट्ट का मूल्यांकन कीजिए तथा इस प्रसंग में यह भी बताइये कि कथा और आख्यायिका से आप क्या समझते हैं। (१९६५)

२—'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्'' इस उक्ति में निहित भाव को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (१९६५, १९७१)

३—'कादम्बरीरसज्ञानामाहारोऽपि न रोचते' इस पर एक लघु निबन्ध लिखिए। (१९६६)

४—बाणभट्ट की भाषा एवं शैली पर एक लघु निबन्ध लिखिए। (१९६७, ६८, ७१)

५—'कादम्बरीरसभरेण समस्त एव मत्तो न किञ्चिदपि चेतयते जनोयम्' पर टिप्पणी लिखिए। (१९६८, ७४)

६—कादम्बरी की काव्य सम्बन्धी विशेषताओं का निरूपण कीजिए। (१९६९, ७०)

७—महाकवि बाणभट्ट की कल्पनाशक्ति पर टिप्पणी लिखिए। (१९७१)६९

८—बाणभट्ट के जीवन और साहित्य साधना पर एक निबन्ध लिखिए। (१७२)

९—बाणभट्ट के अनुसार शूद्रक का चरित्र चित्रण कीजिए। (१९७२, ७५)

१०—'बाणभट्ट पञ्चाननः' इस उक्ति की यथार्थता का परीक्षण कीजिए। (१९७३)

११—बाण की गद्य शैली के वैशिष्ट्य का विवेचन कीजिए। (१९७३)

१२—कादम्बरी में उल्लिखित चाण्डालकन्या का वर्णन कीजिए। (१९७४)

१३—बाण की वर्णनशक्ति पर टिप्पणी लिखिए। (१९७५)

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

१४–बाण की उत्प्रेक्षाओं पर एक समीक्षात्मक टिप्पणी लिखिए। (१९७६)

१५–बाण के अनुसार संक्षेप में अगस्त्याश्रम का वर्णन कीजिए। (१९७६)

१६–वाण की वर्णनशैली की समीक्षा कीजिए। (१९७७)

१७–'धिया निबद्धेयमतिद्वयी कथा' के भाव को स्पष्ट कीजिये। (१९७७)

१८–'कविकुम्भिकुम्भभिदुरो वाणस्तु पञ्चाननः' उदाहरणसहित इस उक्ति की पुष्टि कीजिए। (१९७८)

१९–'कादम्बरी संस्कृत गद्य काव्य की सर्वोत्तम रचना है' इस कथन की समीक्षा करते हुए वाण की शैली का विवेचन कीजिए। (१९७८)

२०–'बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्' की समीक्षा कीजिए। 9ms (१९७९)

२१–'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति' की सोदाहरण पुष्टि कीजिए। (१९७९)

२२–कादम्बरी कथामुख के आधार पर 'पम्पासरोवर' का एक संक्षिप्त वर्णन कीजिये। (१९८०)

२३–'यादृग्गद्यविधौ बाणः पद्यबन्धे न तादृशः' की सोदाहरण समीक्षा कीजिये। (१९८०)

———

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

कादम्बरी पम्पासरोवरवर्णन तक के अंश से पूछे गये अनुवाद के प्रश्न

१—यस्य च परलोकाद्भयम्…………राजधान्यासीत् । (१९७२) देखिये इस पुस्तक का पृ० ३३ ।

२—यत्र च दशरथवचनमनु……महाह्रदेषु । (१९७२) द्र० पृ०, ९८ ।

३—आसीदशेषनरपति ………शूद्रको नाम । (१९७३) (द्र० पृष्ठ २५)

४—तस्याञ्च दण्डकारण्यान्तःपाति …………आश्रमपदमासीत् । (१९७३) द्र० पृष्ठ ९५ ।

५—स तस्याञ्च समानवयोविद्यालङ्कारैः………सुखमतिचिरमुवास । (१९७४) पृष्ठ ३४ ।

६—अस्ति पूर्वापरजलनिधि…… - विन्ध्याटवी नाम । (कुछ चुने हुए विशेषण शब्द लिये गये हैं) १९७४ पृष्ठ ८६ ।

७—आलोक्य च सा ………चक्षुस्तदभिमुखमासीत् । (१९७५, १९७७ १९७९) पृष्ठ ५० ।

८—एवं च क्रमेण………देवगृहमगमत् । (१९७५) पृष्ठ ७७ ।

९—यस्मिंश्च राजनि जितजगति………न प्रजानामासन् । (१९७६) पृष्ठ ३१ ।

१०-अथ चलति महीपता……महीपतीनाम् । (१९७६) पृष्ठ ६६ ।

११-अन्यच्च एतेषामपि……मण्डपादुत्तस्थौ । (१९७८) पृष्ठ ६५ ।

१२-चिरशून्येऽद्यापि……नवकिसलयमरण्यम् । (१९७८) पृष्ठ ९९ ।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

१३. अपसृते च तस्मिन्........................स्त्रीणाम् । (१९७९)
पृष्ठ ६२

१४. नाम्नैव यो निर्भिन्नारातिहृदयो........................राजलक्ष्मीः ।
(१९८०) पृष्ठ ३८

१५. क्वचिद् विराटनगरीव..............................विन्ध्याटवी नाम ।
(१९८०) पृष्ठ ९४

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय

का

सर्वश्रेष्ठ व्याख्याग्रन्थ

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

(गोरखपुर, अवध, कानपुर, लखनऊ, मेरठ
काशी विद्यापीठ आदि विश्वविद्यालयों में
बी. ए. के पाठ्यक्रम में निर्धारित)

हिन्दी में अभिज्ञानशाकुन्तल के अब तक जितने संस्करण प्रकाशित हैं उन सबसे अधिक समृद्ध एवं पूर्ण इस संस्करण की कतिपय विशेषताएँ निम्न-लिखित हैं।

१. यह निर्णयसागर संस्करण के अनुसार पाठ प्रस्तुत करता है, जो प्रायः सभी विश्वविद्यालयों द्वारा परीक्षा हेतु निर्धारित पाठ है।

२. प्रत्येक पृष्ठ पर मूल, व्याख्या और अनुवाद दिया गया है जिससे अर्थ को समझने में पूरी सुविधा होगी।

३. अन्त में व्याख्या के विषय में विशेष विस्तृत टिप्पणियाँ और नाट्य शास्त्रीय टिप्पणियाँ दी गयी हैं, जो गम्भीर अध्ययन के लिए उपयोगी हैं।

४. राघवभट्ट की प्रख्यात संस्कृत टीका तथा प्रो० काले, रे एवं राजेन्द्र-गडकर के व्याख्यासम्बन्धी विचारों का साभार उपयोग किया गया है।

५. हिन्दी अनुवाद में कवि द्वारा अभिप्रेत भाव एवं व्यंग्यार्थ का ध्यान रखकर इस प्रकार की शैली का आश्रय लिया गया है जिससे अनुवाद में सरसता एवं संवाद की स्वाभाविकता है।

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

अलङ्कार एवं छन्द

डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय

बी० ए० प्रथम वर्ष संस्कृत के द्वितीय प्रश्नपत्र के लिए निर्धारित ४१ अलङ्कार एवं १५ छन्दों की स्पष्ट भाषा एवं सरल शैली में व्याख्या प्रस्तुत करने वाली यह पुस्तक छात्रों के लिए परम उपयोगी है। यह पुस्तक कोर्स के सर्वथा अनुरूप है।

बी० ए० संस्कृत पथप्रदर्शक

जितेन्द्र, एम० ए०

इस पथप्रदर्शक में बी० ए० परीक्षा के गत १५ वर्षों के प्रश्नों के आदर्श उत्तर दिये गये हैं। एक ही पुस्तक में दो खण्ड हैं, प्रथम प्रश्नपत्र एवं द्वितीय प्रश्नपत्र। परीक्षा में कौन से प्रश्न पूछे जाते हैं और उनके उत्तर कितने लम्बे हों, किस प्रकार का उत्तर कैसे लिखना चाहिए ये सभी बातें इसमें स्पष्ट की गयी हैं, पिछले कई वर्षों से जितेन्द्र एम० ए० का यह पथप्रदर्शक छात्रों में अत्यन्त लोकप्रिय है। पुस्तक खरीदते समय जितेन्द्र एम० ए० लेखक एवं 'विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर जुबिली चौक, गोरखपुर' नाम आवश्यक देख लें।

प्रथम भाग—प्रथम वर्ष के लिए।

द्वितीय भाग—द्वितीय वर्ष के लिए।

SRI JAGADGURU VISHWARADHYA
JNANA SIMHASAN JNANAMANDIR
LIBRARY
Jangamawadi Math, Varanasi
Acc. No. 5082
Acc. No. 5082

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi

Digitized by eGangotri and Sarayu Trust. Funding by of-IKS

Black-
[illegible] = ४०२५
[illegible]रमो = [illegible]

गोरखपुर विश्वविद्यालय के लिए

अत्यन्त उपयोगी प्रकाशन

संस्कृत

(बी० ए० प्रथम वर्ष)

किरातार्जुनीयम् (प्रथम सर्ग) घण्टापथ सहित—डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय
शिशुपालवधम् (प्रथम सर्ग) सवं कथा सहित " " "
कादम्बरी कथामुख (पम्पासरोवर तक) " " "
अभिज्ञानशाकुन्तलम् (निर्णयसागर संस्करण) " " "
अलंकार एवं छन्द (नवीनतम पाठ्यक्रम) " " "
संस्कृत पथप्रदर्शक भाग १ —जितेन्द्र एम० ए०

(बी० ए० द्वितीय वर्ष)

—डॉ० उमेशचन्द्र पाण्डेय
सूक्तसङ्कलन
कठोपनिषद् प्रथम अध्याय (भाष्यसहित) " " "
लघुसिद्धान्तकौमुदी (अजन्त तक) " " "
संस्कृत साहित्य का इतिहास (संक्षिप्त) " " "
नीतिशतकम् (निर्णयसागर संस्करण) " " "
संस्कृत पथप्रदर्शक भाग २ — —जितेन्द्र एम० ए०
संस्कृत दिग्दर्शन भाग १ — (एम० ए०) —जितेन्द्र एम० ए०

समाजशास्त्र

बी० ए० सामाजिक विघटन —डॉ० के० के० मिश्र
एम० ए० विकास का समाजशास्त्र " " "

हिन्दी

एम० ए० हिन्दी गाइड प्रथम वर्ष }
एम० ए० हिन्दी गाइड द्वितीय वर्ष } —डॉ० कृष्णदेश शर्मा एवं श्री राकेश एम० ए०

वितरक :—

विद्यार्थी पुस्तक मन्दिर

जुबली चौक, बक्शीपुर, गोरखपुर। फोन : ५००२

CC-0. Public Domain. Jangamwadi Math Collection, Varanasi